साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2020-2021

अध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार

उपाध्यक्ष : श्री माधव कौशिक

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय	4
परियोजनाएँ एवं योजनाएँ	8
2020-2021 की प्रमुख गतिविधियाँ	12
पुरस्कार	**13**
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2020	15
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020	19
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2020	23
कार्यक्रम	**27**
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह	28
साहित्य अकादेमी मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त	32
वर्ष 2020-2021 में आयोजित संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि	34
वर्ष 2020-2021 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची	98
वर्ष 2020-2021 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद, वित्त समिति, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें	128
पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची	130
प्रकाशित पुस्तकें	132
वार्षिक लेखा 2020-2021	157

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें—कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व-आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलग्न है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक(कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक/सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि-अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित—दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंतः अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच

प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा इंफ़ाल में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, इनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होनेवाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी. के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। सामान्य परिषद् को 2018-2022 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाइस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय ग्यारह भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल. खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िआ में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु : साहित्य अकादेमी के बेंगळुरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलतः स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळुरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळुरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिळ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नै-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळुरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फ़ुटेज, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों, और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रभावी घटनाओं, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक नमूना होगा, जो आम पाठकों के लिए रुचिकर होगा और साहित्यिक अनुसंधानकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी ही तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी द्वारा अब तक 154 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध है।

अकादेमी से किए जानेवाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लैमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2013 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो/वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक क़रार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळुरु में अनुवाद केंद्र तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है—विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटने वाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िआ, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादक-मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा-निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादक मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी के एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन गई है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु प्रामाणिक शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत; शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िआ, मैथिली-ओड़िआ तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॉकबोराक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिज़िटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 14,868 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2020-2021 में पुस्तकालय के 247 नए सदस्य बने हैं तथा 553 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1.76 लाख से भी अधिक है तथा अकादेमी के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर कुल 2.51 लाख (लगभग) पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूज़र फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने ''सामग्री आधारित पूर्ण पाठ खोज प्रणाली'' की एक नई सेवा

भी शुरू की है, जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़िटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। ''हूज़'हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स'' जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/SA Search System/sauser पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी गृह पत्रिका में प्रकाशित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की ख़रीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन/कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

पी.ओ.एस.एच. अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता तथा बेंगळुरु एवं उप-कार्यालय चेन्नई में भी हुई। संबंधित समिति की रिपोर्ट के अनुसार, इस संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है।

2020-2021 की प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 प्रदत्त।
- प्रो. वेलचेरू नारायण राव को साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त।
- (दर्पण सहित) देशभर में कुल 612 कार्यक्रमों का आयोजन।
  - 20 संगोष्ठियाँ तथा 45 परिसंवाद आयोजित।
  - 101 साहित्य मंच कार्यक्रमों का आयोजन।
  - 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अंतर्गत 11, 'ग्रामालोक' के अंतर्गत 3, 'कवि अनुवादक' के अंतर्गत 8, 46 विचार-विमर्श कार्यक्रम, 75 कविता-पाठ कार्यक्रम, 45 कहानी-पाठ कार्यक्रम, 28 कवि सम्मिलन, मुलाक़ात शृंखला के अंतर्गत 4, 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 32, 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 32, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 29, 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 8, 'बहुभाषी सम्मिलन' के अंतर्गत 25, 1 लेखक सम्मिलन, 9 जनजातीय और वाचिक साहित्य कार्यक्रम, 1 पूर्वोत्तर एवं क्षेत्रीय सम्मिलन, 32 नारी चेतना, 6 दलित चेतना, 23 मेरे झरोखे से, 1 लेखक से भेंट, 3 व्यक्ति और कृति के अलावा (दर्पण के 61 कार्यक्रमों सहित) 85 से अधिक विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- 233 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2020-2021 में 20 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- अकादेमी ने लगभग 8.3 करोड़ लाख रुपए की पुस्तकों की बिक्री की।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 553 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 7 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 156 हो गई।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 6 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2020

12 मार्च 2021 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2020 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 20 भाषाओं में 20 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2014 से 31 दिसंबर 2018 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया। मलयाळम्, नेपाली, ओड़िआ तथा राजस्थानी भाषाओं में पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2020 से सम्मानित लेखक

असमिया : अपूर्व कुमार शइकीया, ***बैंगसता*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : शंकर (मणि शंकर मुखर्जी), ***एका एका एकाशी*** (संस्मरण)

बोडो : (स्व.) धरणीधर औवारि, ***गोथेनाय लामायाव गोदान आगान*** (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : अरुंधति सुब्रमण्यम, ***व्हेन गॉड इज़ ए ट्रैवलर*** (कविता-संग्रह)

गुजराती : हरीश मीनाश्रु, ***बनारस डायरी*** (कविता-संग्रह)

हिंदी : अनामिका, ***टोकरी में दिगंत : थेरीगाथा : 2014*** (कविता-संग्रह)

कन्नड : एम. वीरप्पा मोइली, ***श्री बाहुबली अहिंसा दिग्विजयम्*** (महाकाव्य)

कश्मीरी : (स्व.) हृदय कौल भारती, ***तिलिस्म-ए-खानाबदोश*** (कहानी-संग्रह)

कोंकणी : आर.एस. भास्कर, ***युगपरिवर्तनांचो यात्री*** (कविता-संग्रह)

मैथिली : कमलकांत झा, ***गाछ रूसल अछि*** (कहानी-संग्रह)

मणिपुरी : इरुङ्बम देवेन सिंह, ***मालङ्गबना करि हाय*** (कविता-संग्रह)

मराठी : नंदा खरे, ***उद्या*** (उपन्यास)

पंजाबी : गुरदेव सिंह रूपाणा, ***आम-ख़ास*** (कहानी-संग्रह)

संस्कृत : महेशचंद्र शर्मा गौतम, ***वैशाली*** (उपन्यास)

संताली : रूपचंद हांसदा, ***गुर दाक' कसा दाक'*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : जेठो लालवाणी, ***जेहाद*** (नाटक)

तमिऴ : इमायम, ***सेल्लाथ पनम*** (उपन्यास)

तेलुगु : निखिलेश्वर, ***अग्निश्वासा*** (उपन्यास)

उर्दू : हुसैन-उल-हक़, ***अमावस में ख़्वाब*** (उपन्यास)

(मलयाळम्, नेपाली, ओड़िआ तथा राजस्थानी भाषाओं में पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे।)

अपूर्व कुमार शइकीया

शंकर (मणि शंकर मुखर्जी)

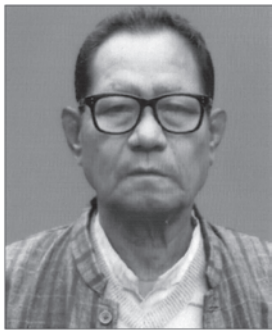

(स्व.) धरणीधर औवारि

अरुंधति सुब्रमण्यम

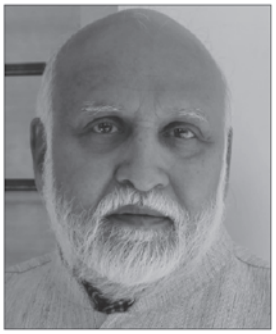

हरीश मीनाश्रु

अनामिका

एम. वीरप्पा मोइली

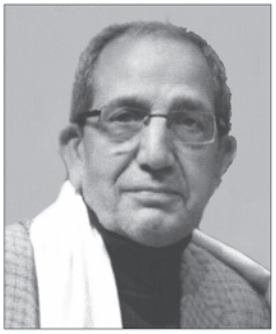

(स्व.) हृदय कौल भारती

आर.एस. भास्कर

कमलकांत झा

इरुङ्बम देवेन सिंह

नंदा खरे

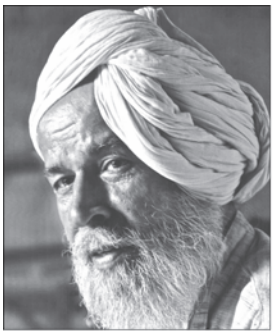

गुरदेव सिंह रूपाणा

महेशचंद्र शर्मा गौतम

रूपचंद हांसदा

जेठो लालवाणी

इमायम

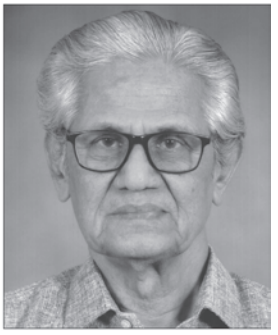

निखिलेश्वर

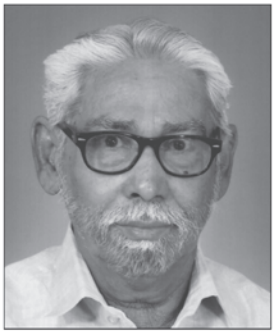

हुसैन-उल-हक़

* कुछ तकनीकी कारणों से मलयाळम्, नेपाली, ओड़िआ तथा राजस्थानी भाषाओं के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार की घोषणा नहीं की जा सकी।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2020 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री प्रदीप आचार्य
2. श्री नित्या बोरा
3. श्री हरेकृष्ण डेका

बाङ्ला

1. श्री शमिक बंद्योपाध्याय
2. प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय
3. प्रो. रंजन चक्रवर्ती

बोडो

1. डॉ. फूकन चंद्र बसुमतारी
2. श्री तिरेन बर'
3. डॉ. अंजलि दैमारी

अंग्रेज़ी

1. प्रो. ई.वी. रामकृष्णन
2. प्रो. मकरंद परांजपे
3. प्रो. राधा चक्रवर्ती

गुजराती

1. श्री मोहन परमार
2. प्रो. शिरीष पांचाल
3. श्री विनेश अंताणी

हिंदी

1. श्रीमती चित्रा मुद्गल
2. प्रो. के.एल. वर्मा
3. डॉ. रामवचन राय

कन्नड

1. श्री अरविंद मालागट्टी
2. डॉ. पद्म प्रसाद
3. डॉ. एस.जी. सिद्धरामैया

कश्मीरी

1. प्रो. रतन लाल शांत
2. श्रीमती नसीम शफ़ई
3. श्री रफ़ीक़ राज़

कोंकणी

1. श्रीमती हेमा पुंडलीक नायक
2. श्री के. गोकुलदास प्रभु
3. श्रीमती शीला तुकाराम कोलम्बकर

मैथिली

1. श्री महेंद्रनारायण राम
2. डॉ. भगवानजी चौधरी
3. श्री प्रभास कुमार झा

मणिपुरी

1. श्रीमती इबेमहाल चानू (अरंबम ओ मेमचोबी)
2. प्रो. एन. तोम्बी सिंह
3. डॉ. मखोनमनी मोङसाबा

मराठी

1. डॉ. निशिकांत मीराजकर
2. श्री सतीश कलसेकर
3. श्री वसंत अबाजी डहाके

पंजाबी

1. श्री बलदेव सिंह सड़कनामा
2. डॉ. मोहनजीत
3. प्रो. सतिंदर सिंह

संस्कृत

1. श्री राधावल्लभ त्रिपाठी
2. प्रो. सी. राजेंद्रन
3. प्रो. अर्क नाथ चौधरी

संताली

1. डॉ. दमयंती बेसरा
2. श्री भोगला सोरेन
3. श्री खेरवाल सोरेन

सिंधी

1. श्री आनंद खेमानी
2. श्री हीरो ठाकुर
3. डॉ. प्रेम प्रकाश

तमिऴ

1. डॉ. यू. अलीबावा
2. श्री कल्याण सुंदरम (वन्नाथसन)
3. डॉ. एम. थिरुमलइ

तेलुगु

1. प्रो. कोलाकलूरि इनोक
2. डॉ. के. रामचंद्र मूर्ति
3. प्रो. एस.वी. सत्यनारायण

उर्दू

1. प्रो. भूपिंदर अज़ीज़ परिहार
2. डॉ. रज़ा हैदर
3. श्री शमीम तारिक़

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020

12 मार्च 2021 को अगरतला में डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 के लिए 18 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो। बाङ्ला, गुजराती, मलयाळम्, मराठी, राजस्थानी तथा सिंधी भाषाओं में पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे।

युवा पुरस्कार 2020 से सम्मानित लेखक

असमिया : द्विजेन कुमार दास, ***मेघ-घोड़ा*** (कविता-संग्रह)

बोडो : निउटन के. बसुमतारी, ***आबै-आबौ आरो आं*** (कविता-संग्रह)

डोगरी : गंगा शर्मा, ***मनै दा बुआल*** (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : यशिका दत्त, ***कमिंग आउट ऐज़ दलित*** (संस्मरण)

हिंदी : अंकित नरवाल, ***यू.आर. आनंतमूर्ति : प्रतिरोध का विकल्प*** (साहित्यिक आलोचना)

कन्नड : के.एम. महादेवस्वामी, ***धूपदा मक्कळु*** (कहानी-संग्रह)

कश्मीरी : मुज़फ़्फ़र अहमद परे, ***वावेच बावत*** (कविता-संग्रह)

कोंकणी : संपदा शेनवी कुंकळकार, ***चार पावलां आशियेंत*** (यात्रा-वृत्तांत)

मैथिली : सोनू कुमार झा, ***गस्सा*** (कहानी-संग्रह)

मणिपुरी : रामेश्वर शारुंबम, ***कायरबा चफु मचेत*** (कविता-संग्रह)

नेपाली : अंजन बासकोटा, ***दृष्टि*** (निबंध-संग्रह)

ओड़िया : चंद्रशेखर होता, ***चेतनार अन्वेषण*** (निबंध-संग्रह)

पंजाबी : दीपक धलेवां, ***मलाहां तो बिनां*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : ऋषिराज पाठक, ***आद्योन्मेषः*** (कविता-संग्रह)

संताली : अंजलि किस्कु, ***आंजले*** (कविता-संग्रह)

तमिऴ : शक्ति, ***मरनाय*** (कविता-संग्रह)

तेलुगु : मानासा एंदलुरी, ***मिलिंदा*** (कहानी-संग्रह)

उर्दू : साक़िब फरीदी, ***मैं अपनी बात का मफ़हूम दूसरा चाहूँ : बानी की शायरी का मोतालः*** (आलोचना)

(बाङ्ला, गुजराती, मलयाळम्, मराठी, राजस्थानी तथा सिंधी भाषाओं में पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे।)

द्विजेन कुमार दास

निउटन के. बसुमतारी

गंगा शर्मा

यशिका दत्त

अंकित नरवाल

के.एस. महादेवस्वामी

मुज़फ़्फ़र अहमद परे

संपदा शेनवी कुंकळकार

सोनू कुमार झा

रामेश्वर शारुंबम

अंजन बासकोटा

चंद्रशेखर होता

दीपक धलेवां

ऋषिराज पाठक

अंजलि किस्कु

शक्ति

मानासा एंदुलुरी

साक़िब फरीदी

*कुछ तकनीकी कारणों से बाङ्ला, गुजराती, मलयाळम्, मराठी, राजस्थानी तथा सिंधी भाषाओं के लिए साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार की घोषणा नहीं की जा सकी।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. सुश्री मणिकुंतला भट्टाचार्य
2. श्री पार्थ प्रतिम हज़ारिका
3. डॉ. प्राणजीत बोरा

बोडो

1. डॉ. रीता बर'
2. श्री बिद्यासागर नार्ज़ारी
3. सुश्री जयश्री बर'

डोगरी

1. प्रो. चंपा शर्मा
2. श्री कुलदीप कुमार शर्मा
3. प्रो. ललित मंगोत्रा

अंग्रेज़ी

1. सुश्री जेनिस पारियेट
2. प्रो. सच्चिदानंद मोहंती
3. प्रो. सूसी थरू

हिंदी

1. डॉ. देवेंद्र चौबे
2. प्रो. गिरीश्वर मिश्र
3. श्री करुणाशंकर उपाध्याय

कन्नड

1. डॉ. एच.एल. पुष्पा
2. डॉ. कुम. वीरभद्रप्पा
3. डॉ. एच.एस. वेंकटेश मूर्ति

कश्मीरी

1. श्री बृज नाथ बेताब
2. श्री गु. रसूल जोश
3. श्री मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़

कोंकणी

1. श्री अशोक कामत
2. श्री दिलीप बोरकर
3. डॉ. जयंती नाइक

मैथिली

1. प्रो. धीरेंद्र नाथ झा 'धीर'
2. सुश्री इंदिरा झा
3. डॉ. शेफालिका वर्मा

मणिपुरी

1. डॉ. सोइबम इबोचा
2. श्री याइमा हाओबा
3. प्रो. हुइरेम बिहारी सिंह

नेपाली

1. श्री सूर्य प्रसाद अधिकारी
2. श्री नंद हाङखिम
3. श्री बिजय बांतवा

ओड़िआ

1. श्री बिपिन बिहारी नायक
2. प्रो. (डॉ.) राज किशोर मिश्र
3. प्रो. संघमित्रा मिश्रा

पंजाबी

1. प्रो. किरपाल कज़ाक
2. डॉ. निर्मल सिंह बस्सी
3. डॉ. रमिंदर कौर

संस्कृत

1. प्रो. गुल्लपल्ली श्रीनिवासु
2. डॉ. जनार्धन हेगड़े
3. डॉ. रमाकांत शुक्ल

संताली

1. श्री बाबूलाल टुडु
2. डॉ. धनेश्वर माझी
3. श्री श्याम बेसरा

तमिळ

1. डॉ. ए. मांगई
2. डॉ. सी. सेतुपति
3. श्रीमती पी. शिवकामी

तेलुगु

1. श्री के. दामोदर राव
2. री पेनुगोंडा लक्ष्मी नारायण
3. सुश्री वोल्गा

उर्दू

1. प्रो. निज़ाम सिद्दीक़ी
2. डॉ. तरन्नुम रियाज़
3. प्रो. तारिक़ छतारी

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2020

12 मार्च 2020 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2020 के लिए 21 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2014 से 31 दिसंबर 2018 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। मलयाळम्, संस्कृत तथा तमिऴ भाषाओं में पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे। यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं पाई गई तो आरंभिक 10 वर्षों, जो 2010-2019 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं।

बाल साहित्य पुरस्कार 2020 से सम्मानित लेखक

असमिया : माधुरिमा घरफलीया, ***फोसॉन्ग*** (कहानी-संग्रह)
बाङ्ला : प्रचेत गुप्त, ***गोपॅन बाक्सॅ खुलते नेइ*** (कहानी-संग्रह)
बोडो : अजित बर', ***गथ'सा बिसम्बि*** (निबंध-संग्रह)
डोगरी : शिव देवसिंह सुशील, ***दादी दा हिरख*** (कहानी-संग्रह)
अंग्रेज़ी : विनीता कोयलो, ***डेड ऐज़ ए डोडो*** (कथासाहित्य)
गुजराती : नटवरलाल गिरधरदास पटेल, ***भुरीनी अजायब सफर*** (कहानी-संग्रह)
हिंदी : बालस्वरूप राही, ***संपूर्ण बाल कविताएँ*** (कविता-संग्रह)
कन्नड : एच.एस. ब्याकोड़, ***नानू अंबेडकर*** (उपन्यास)
कश्मीरी : सैयद अख़्तर हुसैन (मंसूर), ***पगहिच आश*** (कविता-संग्रह)
कोंकणी : वी.कृष्ण वाध्यार, ***बालु*** (लघु उपन्यास)
मैथिली : सियाराम झा 'सरस', ***सोनहुला इजोतवला खिड़की*** (कविता-संग्रह)
मणिपुरी : नाउरेम विद्यासागर सिंह, ***ऊचान मैरा*** (कविता-संग्रह)
मराठी : आबा गोविंदा महाजन, ***आबाची गोष्ट*** (कहानी-संग्रह)
नेपाली : ध्रुव चौहान, ***अक्षर उज्यालो*** (नाटक)
ओड़िआ : रामचंद्र नायक, ***बन देउळरे सुना नेउल*** (कहानी-संग्रह)
पंजाबी : करनैल सिंह सोमल, ***फुल्लां दा शहर*** (यात्रा वृत्तांत)
राजस्थानी : मंगत बादल, ***कुदरत रो न्याव*** (कविता-संग्रह)
संताली : जयराम टुडु, ***भंज कुल भुरकाः इपिल सुनाराम सोरेन*** (जीवनी)
सिंधी : साहिब बिजाणी, ***मुंडी केर पाए?*** (कहानी-संग्रह)
तेलुगु : कन्नेगंटि अनसूया, ***स्नेहितुलु*** (लघुकथा)
उर्दू : हाफ़िज़ करनाटकी, ***फ़ख़्र-ए-वतन*** (जीवनी)

* मलयाळम्, संस्कृत और तमिऴ में पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा।

माधुरिमा घरफलीया

प्रचेता गुप्त

अजित बर'

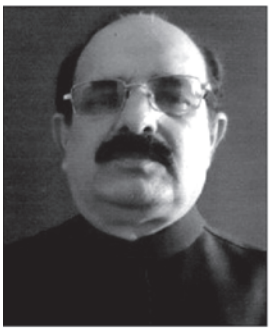

शिव देवसिंह सुशील

विनीता कोयलो

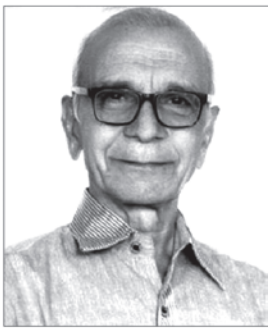

नटवरलाल गिरधरदास पटेल

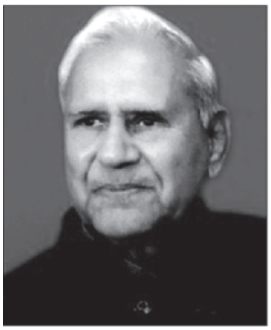

बालस्वरूप राही

एच.एस. ब्याकोड़

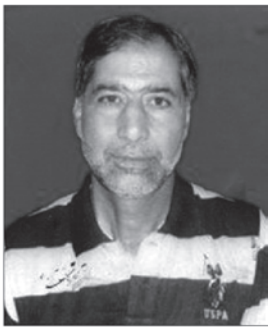

सैयद अख़्तर हुसैन (मंसूर)

वी. कृष्ण वाध्यार

सियाराम झा 'सरस'

नाउरेम विद्यासागर सिंह

आबा गोविंदा महाजन

ध्रुव चौहान

रामचंद्र नायक

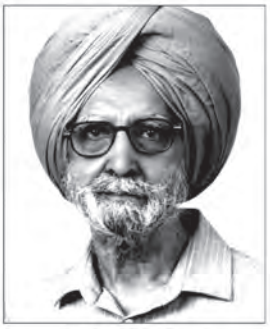

करनैल सिंह सोमल

मंगत बादल

जयराम टुडु

साहिब बिजाणी

कन्नेगंटि अनसूया

हाफ़िज़ करनाटकी

*कुछ तकनीकी कारणों से मलयाळम्, संस्कृत तथा तमिळ भाषाओं के लिए साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा नहीं की जा सकी।

साहित्य अकादेमी बाल पुरस्कार 2020 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्रीमती बंदिता फूकन
2. प्रो. करबी डेका हाज़रिका
3. श्री शांतनु तामूली

बाङ्ला

1. श्री कार्तिक घोष
2. श्री मनोज मित्रा
3. श्री स्वप्नमॅय चक्रवर्ती

बोडो

1. श्री गोपीनाथ ब्रह्म
2. श्री गोविंद बर'
3. श्री रमाकांत बसुमतारी

डोगरी

1. प्रो. शिव निर्मोही
2. श्री सीताराम सपोलिया
3. श्री विजय वर्मा

अंग्रेज़ी

1. प्रो. डी. वेंकट राव
2. प्रो. जसबीर जैन
3. प्रो. कविता शर्मा

गुजराती

1. श्री दीपक दोशी
2. श्री मनसुख सल्ला
3. श्री प्रवीणसिंह चावड़ा

हिंदी

1. श्री अनंत विजय
2. श्री गिरीश पंकज
3. श्री प्रकाश मनु

कन्नड

1. श्री बेलुरु रघुनंदन
2. श्री सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी
3. श्री टी.पी. अशोक

कश्मीरी

1. श्री अब्दुल गनी बेग अतहर
2. प्रो. फ़ारूक़ फ़ैयाज़
3. डॉ. रूपकृष्ण भट

कोंकणी

1. डॉ. किरण बुदकुले
2. डॉ. प्रकाश पारेनकर
3. श्री संजीव वीरेनकर

मैथिली

1. श्री खुशिला झा
2. श्री सत्येंद्र कुमार झा
3. डॉ. शिव कुमार मिश्र

मणिपुरी

1. श्री अरिबम कुमार शर्मा
2. श्री राजकुमार भुबोनसना
3. श्री मैबम नवकिशोर सिंह

मराठी

1. डॉ. चंद्रकांत पाटील
2. श्री के.टी. थाले पाटील
3. श्री कृष्णत खोत

नेपाली

1. श्री ज्ञान बहादुर छेत्री
2. श्री लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं
3. डॉ. कविता लामा

ओड़िया

1. श्री बिरेंद्र मोहंती
2. डॉ. इति सामंत
3. डॉ. प्रीतिधारा सामल

पंजाबी

1. डॉ. भीमिंदर सिंह
2. श्री अत्तरजीत
3. श्री सतपाल भीखी

राजस्थानी

1. डॉ. भारत ओला
2. श्री गोविंद शर्मा
3. श्री पवन पहाड़िया

संताली

1. श्री अर्जुन मरांडी
2. श्री पीतांबर हांसदा
3. श्री रूपचंद हांसदा

सिंधी

1. श्री खिमन यू. मुलानी
2. सुश्री रश्मि रमानी
3. सुश्री वीना शृंगी

तेलुगु

1. श्री ए.एन. जगन्नाथ शर्मा
2. श्री बूपाल
3. प्रो. कात्यायनी विदमाहे

उर्दू

1. प्रो. बेग अहसास
2. प्रो. सादिक
3. श्री राशिद अनवर राशिद

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2021

प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले अपने साहित्योत्सव के एक भाग के रूप में, इस वर्ष भी साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव की शुरुआत अकादेमी प्रदर्शनी के साथ हुई, जिसमें वर्ष 2020 के दौरान अकादेमी द्वारा आयोजित गतिविधियों और कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने किया। औपचारिक उद्घाटन से पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में अकादेमी द्वारा आयोजित महत्त्वपूर्ण गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देश में कोविड-19 की वैश्विक महामारी फैलने के बावजूद अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 540 आभासी कार्यक्रमों का आयोजन किया और इन कार्यक्रमों को यूट्यूब पर करीब 2 लाख, फेसबुक पर 7 लाख तथा ट्विटर पर हज़ारों लोगों ने देखा। अकादेमी ने वर्ष के दौरान 235 नई पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। प्रदर्शनी में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पत्रों के अंग्रेज़ी, हिंदी तथा बाङ्ला प्रकाशन भी प्रदर्शित किए गए। इसके अलावा, अकादेमी ने अंतरराष्ट्रीय कविता दिवस, अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस तथा महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का भी आयोजन किया। इस अवसर पर अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक भी उपस्थित थे।

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह

मुख्य अतिथि श्रीमती चित्रा मुद्गल तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव

कमानी सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में, साहित्य अकादेमी ने 13 मार्च 2021 को 19 प्रतिष्ठित अनुवादकों को अनुवाद पुरस्कार 2019 प्रदान किए। हिंदी की प्रख्यात लेखिका तथा विदुषी श्रीमती चित्रा मुद्गल अनुवाद पुरस्कार समारोह की मुख्य अतिथि थीं। पुरस्कार विजेताओं, गणमान्य व्यक्तियों और साहित्य प्रेमियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं को एकजुट करने हेतु ज्ञान अधिग्रहण में अनुवाद के महत्त्व और अनुवाद की विभिन्न भूमिकाओं पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार साहित्य अकादेमी पिछले साढ़े छह दशकों से भारत में अनुवाद गतिविधियों को बढ़ावा दे रही है। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि यह अनुवाद ही है जो किसी को भी विश्व की किसी भी भाषा में काम करने में सक्षम बनाता है तथा इस बात का उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार उनकी कृतियों ने अनुवाद के माध्यम से विश्व भर में यात्रा की। उन्होंने कहा कि हालाँकि लोग अत्यधिक अंग्रेज़ीकृत संवेदनशीलता के माध्यम से अनुवाद के आदी हैं, किंतु भारतीय मानस में अनुवाद का विचार एक सहयोगी तथा रचनात्मक अभ्यास के रूप में अस्तित्व में सदैव ही रहा है। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने असमिया, बाङ्ला, डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु तथा उर्दू के अनुवादकों को पुरस्कार प्रदान किए। बोडो, गुजराती, मलयाळम्, मणिपुरी तथा पंजाबी के पुरस्कार विजेता समारोह में शामिल नहीं हो सके। प्रख्यात हिंदी लेखिका एवं विदुषी तथा समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती चित्रा मुद्गल ने कहा कि अनुवादक ऐसा सेतु है जो लेखकों और पाठकों को उस क्षेत्र तथा भाषा से जोड़ता है, जिसमें मूल कृति लिखी गई होती है। उन्होंने कहा कि अनुवाद लिखने से अधिक कठिन कार्य है और यह हर्ष की बात है कि पिछले दो दशकों से अनुवादकों के प्रति कई प्रकाशकों और पाठकों की धारणाओं तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। उन्होंने यह भी कहा कि युवाओं द्वारा कई भाषाएँ सीखना हर्ष की बात है तथा किस प्रकार से विदेशी भाषाओं का ज्ञान कई तरह से रोज़गार के अवसर पैदा कर रहा है। अनुवाद के बिना दुनिया के बारे में हमारा ज्ञान अत्यधिक सीमित होगा तथा हम सभी को उन अनुवादकों के साथ-साथ आज

अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर रहे समस्त अनुवादकों को भी सलाम करना चाहिए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन भाषण में कहा कि अनुवादक शब्दों और वाक्यों के बीच उपस्थित चुप्पी को भी अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं तथा वे मिशनरियों की भाँति हैं जो विभिन्न संस्कृतियों का संयोग प्रस्तुत करते हैं।

अनुवादक सम्मिलन

14 मार्च 2021, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के समापन के रूप में साहित्य अकादेमी ने एक अनुवादक सम्मिलन का आयोजन किया जिसमें अनुवाद पुरस्कार विजेताओं ने अपनी पुरस्कृत पुस्तकों के अनुवाद के अनुभवों को साझा किया।

कार्यक्रम की शुरुआत असमिया पुरस्कार विजेता श्री नवकुमार हंदिकै ने की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनकी रुचि संस्कृत भाषा तथा उसके साहित्य के प्रति बढ़ी। चूँकि वे संस्कृत पढ़ाते थे, इसलिए उन्होंने अपने छात्रों का संस्कृत भाषा से परिचय करवाया जो तब तक इस भाषा की मूल बातों से पूर्णतया अपरिचित थे तथा उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार उन्होंने अपने छात्रों की संस्कृत साहित्य तथा साहित्यिक आलोचना की महान परंपरा में रुचि जाग्रत की तथा उससे परिचित कराया और उन्होंने विभिन्न संस्कृत साहित्यिक अंशों का अपनी मातृभाषा में अनुवाद करने के बारे में भी बताया।

बाङ्ला पुरस्कार विजेता श्री तपन बंद्योपाध्याय ने कहा कि उनका ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता, ओड़िआ कवि सीताकांत महापात्र की कविताओं के प्रति गहन आकर्षण था तथा उन्होंने उनकी तीन पुस्तकों का अनुवाद किया। चूँकि उन्होंने अपना बचपन ग्रामीण बंगाल में बिताया था तथा फिर वे अपनी विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए कोलकाता चले गए थे, उनके पास बंगाल के लोगों और समाज के जीवन के विभिन्न अनुभव एकत्रित थे जिसने उन्हें अनुवाद कार्य आरंभ करने के लिए प्रेरित किया।

व्याख्यान देते हुए श्री नवकुमार हंदिकै

डोगरी पुरस्कार विजेता श्री रत्न लाल बसोत्रा ने कहा कि अनुवाद का काम आसान काम नहीं है। उन्होंने कहा कि उनके पिता ने उनके मन में अनुवाद की भावना पैदा की। भगवान से भक्तिमय रूप से जुड़े उनके पिता *दुर्गा सप्तशती, रामायण* और *श्रीमद्भागवत गीता* आदि पढ़ते थे। उन श्लोकों का अर्थ समझने के लिए वह अपनी मातृभाषा डोगरी में संस्कृत श्लोकों का अनुवाद करते थे।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता सुश्री सुसैन डैनियल ने कहा कि एक अच्छे अनुवादक को लेखक की प्रतिभा के बराबर होना चाहिए। उन्होंने अपना अनुभव सुनाया कि किस प्रकार उनका परिवार बेंगळुरु से कर्नाटक के सागर चला गया तथा कन्नड भाषा सीखने लगा। कुसुमबाले का अनुवाद करने की उनकी इच्छा मैसूर में एक सम्मेलन में एक तरंग के रूप में शुरू हुई जहाँ से उनका अनुवाद-कार्य के प्रति रुझान बढ़ने लगा।

हिंदी पुरस्कार विजेता श्री आलोक गुप्ता ने भारतीय भाषाओं में अनुवादक के दायित्वों पर चर्चा की। उन्होंने बताया वो पिछले 35 वर्षों से अनुवाद कार्य कर रहे हैं। विभिन्न संस्थाओं और विविध पत्रिकाओं के संपादकों को जब भी गुजराती से हिंदी या हिंदी से गुजराती अनुवाद की ज़रूरत होती है तो वे उन्हें ही कार्य सौंपते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अनुवाद प्रक्रिया में दोनों, स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा और अधिक समृद्ध हो जाती है, साथ ही अनुवादक को भी काफ़ी ज्ञान होता है, इसके साथ-साथ उन्होंने हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाओं में विभिन्न क्षेत्रों के महत्त्वपूर्ण कार्यों को अनूदित करवाए जाने पर भी बल दिया।

कन्नड पुरस्कार विजेता, श्री विट्ठलराव टी. गायकवाड़ ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि आधुनिक संदर्भ में अनुवाद एक अहम प्रक्रिया है अनुवाद चूँकि पूरे विश्व में मानवी जीवन की भिन्न-भिन्न प्रकृतियों पर लक्षित है इसलिए संसार का एक आवश्यक तत्त्व है ताकि शब्दों, वाक्यों और पत्रों के विन्यास द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने मस्तिष्क के भावों को संप्रेषित कर सके।

कश्मीरी पुरस्कार विजेता श्री रतन लाल जौहर ने कहा कि उन्होंने लगभग चार दशक पूर्व एक सृजनशील लेखक के रूप में अपना कैरियर आरंभ किया। और जब तक उन्हें दो अनुवाद कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ था तब तक तो अनुवाद में उनकी रुचि कम ही थी परंतु उसके बाद उन्होंने कई अनुवाद कार्य किए।

कोंकणी पुरस्कार विजेता श्रीमती जयंती नायक ने कहा कि गोआ कोंकणी अकादेमी के साथ कार्य करते हुए वह कुछ कोंकणी पत्रिकाओं से जुड़ी रहीं और इस तरह उन्होंने तकनीकी और सृजनात्मक रचनाओं का अनुवाद किया।

मैथिली पुरस्कार विजेता श्री केदार कानन ने बताया कि वह प्रख्यात मैथिली लेखकों श्री रामकृष्ण झा 'किसुन' (उनके स्वर्गीय पिता जी), श्री राजकमल चौधरी, प्रो. मायानंद मिश्र और श्री जीवकांत की प्रेरणा की वजह से साहित्य के क्षेत्र में आए। ये चारों लेखक अनुवाद कार्य से गहराई से जुड़े थे और इन्हीं से केदार जी को अनुवाद कार्य भी मिलता था।

मराठी पुरस्कार विजेता सुश्री सई परांजपे ने रोचक क़िस्सा सुनाते हुए बताया कि कैसे वह अनुवाद कार्य से जुड़ीं। फ़िल्म अभिनेता श्री नसीरुद्दीन शाह ने उन्हें फ़ोन करके अपनी पुस्तक ''एंड देन वन डे'' का अनुवाद करने के लिए कहा। आरंभ में सई इसे लेकर बहुत उत्साही नहीं थीं परंतु नसीर के लेखन की विलक्षण ताज़गी उन्हें मनमोहक प्रतीत हुई और उन्होंने अनुवाद का मन बना लिया। नेपाली पुरस्कार विजेता श्री सचिन राई दुमी ने अनुवाद के अपने अनुभवों को साझा करते हुए एक पुस्तक मेले में भाग लेने की घटना को याद किया। यह मेला उनके घर से 82 कि.मी. दूर था और वहाँ उन्होंने आर.के. नारायण द्वारा अंग्रेज़ी में लिखित उपन्यास ''ग्रैंड मदर्स टेल'' खरीदा। जिन दिन उन्होंने उपन्यास पूरा पढ़ लिया, उनके मन में उपन्यास के अनुवाद का विचार उठा। यद्यपि दो वर्ष तक इस पर विचार ही चलता रहा और अंततः वर्ष 2003 के आरंभ में इसे अनूदित कर लिया गया।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता श्री अजय कुमार पट्टनायक ने कहा कि विभिन्न भाषाओं में पश्चिमी साहित्य के अनुवाद ने भाषाओं के मध्य अंतर कम करने तथा आधुनिक भारत के सांस्कृतिक विकास में अहम भूमिका निभाई है। अनुवाद के माध्यम से ही उन्हें विश्व के श्रेष्ठ साहित्य के बारे में ज्ञात हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीकी और साहित्यिक अनुवाद के बीच काफ़ी अंतर है।

संस्कृत पुरस्कार विजेता श्री प्रेम शंकर शर्मा ने कहा कि संस्कृत भाषा के प्रति अपनी आसक्ति व समर्पण के कारण उन्होंने *श्रीमदभगवदगीता* और तुलसीदास रचित *रामचरितमानस* पढ़ी। इसके साथ ही हिंदी कविता और संस्कृत भाषा के प्रति उनका आकर्षण बढ़ गया और उन्होंने हाई स्कूल में संस्कृत भाषा विषय लिया। प्रतिदिन साइकिल पर अपने 7 कि.मी. दूर स्थित कॉलेज जाने से पूर्व वो *श्रीमदभगवदगीता* के कम से कम 10 श्लोक हिंदी अनुवाद सहित गाते थे इससे उन्होंने *श्रीमदभगवदगीता* और संस्कृत को अच्छे से जाना।

सिंधी पुरस्कार विजेता श्री ढोलन राही ने अनुवादक के रूप में अपने अनुभवों का वर्णन किया। उन्होंने कहा अनुवाद एक कठिन कार्य और बड़ी जिम्मेदारी है परंतु अनुवाद से प्राप्त होने वाले अनुभव अमूल्य और उपयोगी हैं, यह एक यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। अच्छे अनुवादक को भाषा की शुद्धता का सम्मान करना चाहिए।

तेलुगु पुरस्कार विजेता श्री पी. सत्यवती ने कहा कि जब भी वो किसी कहानी से अभिभूत हो जाते हैं तो वो इसे अधिक से अधिक लोगों के साथ साझा करना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें याद है जब उन्होंने तमिळ साहित्य में हलचल पैदा करने वाली रेवती की

आत्मकथा के बारे में सुना और इसका अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा तो उन्हें बहुत आनंद आया और उनकी इच्छा हुई कि तेलुगु पाठक भी इसे पढ़ें। इसी से उन्हें अनुवाद क्षेत्र में आने की प्रेरणा मिली।

उर्दू पुरस्कार विजेता श्री असलम मिर्ज़ा ने कहा कि वह वाक्य रचना विन्यास से काफ़ी आकर्षित हैं जो बहुत परिष्कृत तरीके से बहुअर्थ संबंधी संभावनाओं का प्रावरण करती है। उर्दू उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति की भाषा है परंतु वो फ़ारसी, हिंदी, मराठी व अंग्रेज़ी से भी उतना ही स्नेह करते हैं। यह रुचि, अनुवाद माध्यम में किए गए उनके कार्यों में प्रेरक सिद्ध हुई।

सत्र के अध्यक्ष साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने समापन भाषण में कहा कि पूरे विश्व में अनुवाद कार्यों में काफ़ी अधिक वृद्धि हुई है जिससे राष्ट्र आपस में जुड़ सके हैं। आधुनिक जगत में ऐसा कोई विश्वविद्यालय नहीं जहाँ अनुवाद विभाग न हो। अनुवाद के माध्यम से हमने अपनी भाषाओं में भारतीय साहित्य का अध्ययन आरंभ कर दिया है। देश भाषायी बंधनों से ऊपर उठ चुका है। उन्होंने सुब्रह्मण्यम भारती जैसे दिग्गज साहित्यकारों की कृतियों के अधिक से अधिक अनुवाद किए जाने के महत्त्व पर भी बल दिया।

आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यकारी मंडल और सामान्य परिषद् के सदस्यों तथा उपस्थित अतिथियों व पुरस्कृत लेखकों का स्वागत करते हुए उन्हें बधाई दी।

संवत्सर व्याख्यान

12 मार्च 2021, नई दिल्ली

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा संवत्सर व्याख्यान

वार्षिक साहित्योत्सव कार्यक्रम 2021 के भाग के रूप में, साहित्य अकादेमी ने 12 मार्च 2021 को 'संवत्सर व्याख्यान' आयोजित किया। विशिष्ट हिंदी कवि, साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष और महत्तर सदस्य प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने 'संवत्सर व्याख्यान' शृंखला के अंतर्गत इस वर्ष का संवत्सर व्याख्यान दिया, जिसका विषय था— 'कविता और सर्जनात्मक साहित्य का स्व भाव'। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं से वक्ता का परिचय करवाया। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि प्रो. तिवारी भारत के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने समापन वक्तव्य दिया।

मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

यह साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान है जो भारत के बाहर के प्रतिभाशाली साहित्यिक व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है तथा एक बार में मानद महत्तर सदस्यों की संख्या अधिकतम दस होती है।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् ने 26 फ़रवरी 2021 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित अपनी 90वीं बैठक में साहित्य अकादेमी के मानद महत्तर सदस्य के रूप में विशिष्ट विद्वान, लेखक, अनुवादक और आलोचक प्रो. वेलचेरू नारायण राव का चयन किया।

प्रो. वेलचेरू नारायण राव को साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

27 मार्च 2021, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

आधुनिक भारत के प्रमुख साहित्यिक विद्वानों में से एक प्रो. वेलचेरू नारायण राव को 27 मार्च 2021 को सिद्धार्थ सभागार, पी.बी. सिद्धार्थ आर्ट्स एंड सांइस कॉलेज परिसर, विजयवाड़ा में साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। उन्होंने तेलुगु साहित्य में बड़ा योगदान दिया है। भारतीय साहित्य में उनका योगदान विराट और बहुमुखी है। अतः उन्हें अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ सायं 6.00 बजे हुआ, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रो. वेलचेरू नारायण राव और अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का मंच पर स्वागत किया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रो. नारायण राव के भारतीय साहित्य, विशेषकर तेलुगु साहित्य में योगदान से श्रोताओं को परिचित करवाया। बाद में डॉ. माधव कौशिक ने उत्कीर्ण मानद महत्तर सदस्यता ताम्रफलक,

प्रो. वेलचेरू नारायण राव को मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

स्मृतिचिन्ह् और फूलमाला के साथ प्रो. वेलचेरू नारायण राव को सम्मानित किया।

प्रो. नारायण राव को सम्मानित करने के पश्चात् डॉ. माधव कौशिक ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने कहा कि प्रो. नारायण राव को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करना साहित्य अकादेमी के लिए महनीय अवसर है। प्रो. राव एक प्रसिद्ध विद्वान हैं और उन्होंने भारतीय साहित्य के लिए महान कार्य किया है। उन्होंने पश्चिमी और पूर्वी साहित्य के बीच सेतु बनाया है।

मानद महत्तर सदस्यता प्राप्त करने के बाद प्रो. नारायण राव ने अपना उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि अब तक मैं अंग्रेज़ी में लिखता रहा परंतु अब से मैं तेलुगु में लिखूँगा। लोग समझते थे कि दुर्भाग्य से हमारे पास साहित्य का इतिहास कालक्रमबद्ध नहीं है पर इतिहास संग्रहण हेतु हमारे पास बहुत से स्रोत हैं। हमें तेलुगु में सभी काव्यों से सूचना एकत्र करनी होगी। अन्य सभी भारतीय भाषाओं में साहित्य का भंडार मातृभाषा शब्द के अंतर्गत एक कोने में सिमट कर रह गया था। यहाँ तक कि समृद्ध मौखिक परंपराओं में भी किसी विद्वान ने कोई रुचि नहीं दिखाई। केवल 20वीं सदी के मध्य में भारतीय साहित्य और अन्य भारतीय भाषा अध्ययन की ओर थोड़ा ध्यान आकर्षित हुआ। उन्होंने मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार प्रकट किया।

प्रो. बी. तिरुपति राव ने प्रो. नारायण राव के संपूर्ण कृतित्व पर एक सोदाहरण व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि मौखिक परंपराओं, सांस्कृतिक अध्ययनों और विषयगत अध्येतावृत्ति जैसे विषयों पर विराट कृतित्व हेतु प्रो. नारायण राव ने ए.के. रामानुजम, डेविड डीन शुलमैन, संजय सुब्रह्मण्यम, हेनरी एस. हेइफेत्ज़, जी. एच. रोघेर और अन्य विशिष्ट विद्वानों के सहयोग में कार्य किया। प्रो. राव ने अल्लासानी पेडान्ना की 'मनुचरित्रम', पिंगली सूरन कृत 'कालपूर्णोदयम', पालकुरूकी सोमाना कृत 'बसवपुराण' और डेविड डीन शुलमैन के साथ नंदी तिमन्ना कृत 'पारिजातपहाड़णम' का अनुवाद किया।

प्रो. तिरुपति राव ने गुराजादा कृत 'कन्यासुल्कम' के अनुवाद की प्रशंसा की, क्योंकि लोग समझते थे कि इसका अन्य भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता; जबकि प्रो. नारायण राव ने कुशलता से इसका अनुवाद किया। उन्होंने विश्वनाथ सत्यनारायण के उपन्यासों और चागंटि सोमायाजुलु की कहानियों का भी अनुवाद किया। प्रो. तिरुपति ने कहा कि जब मैं विश्वविद्यालय में था तो पुनर्मूल्यांकन के नाम पर पुस्तकें पढ़ता था। उसी भावना से मैंने *तेलुगुलो कविता विप्लव स्वरूपम* भी पढ़ी। वह पुस्तक पढ़ने के बाद मैंने महसूस किया कि यह कोई आम पुस्तक नहीं बल्कि एक अलग पुस्तक है जो तेलुगु साहित्य के लिए उपयोगी है।

प्रो. वकुलभारनम राजगोपाल ने नारायण राव की रचनाओं की ऐतिहासिक अभिज्ञता को अभिव्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पेडन्ना, रामराजभूषनुडु, पिंगली सुराणा महान लेखक थे और अब प्रो. नारायण राव के अनुवाद के कारण इन लेखकों को पश्चिम में भी ख्याति प्राप्त है। प्रो. नारायण राव और संजय सुब्रह्मण्यम ने 'समय की संरचना : दक्षिण भारत में इतिहास लेखन - 1600-1800' पर पुस्तक लिखी। डेविड शुलमैन ने इस धारणा को चुनौती दी कि भारतीय परंपरा में ऐतिहासिक जागरूकता नहीं थी। यह पुस्तक व्यापक रूप से पढ़ी गई, इस पर वाद-विवाद हुए और विद्वानों ने इस पर आलोचनाएँ भी लिखीं।

साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक तथा प्रख्यात तेलुगु कवि श्री के. शिवारेड्डी ने कार्यक्रम की सफलता पर श्रोताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि प्रो. नारायण राव के कारण एक लंबे समय के पश्चात् हम किसी कार्यक्रम में एकत्र हुए हैं। हम सबके लिए यह ख़ुशी का क्षण है। हम इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव के प्रति धन्यवाद प्रकट करते हैं।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन इत्यादि

मेरे झरोखे से (कन्नड) (डॉ. एम.एस. रघुनाथ ने स्वर्गीय के.एस. निसार अहमद पर बात की)

2 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

डॉ. एम.एस. रघुनाथ

मेरे झरोखे से में हाल ही में दिवंगत सुविख्यात कवि, रचनाकार और प्रख्यात लेखक के.एस. निसार अहमद पर बात हुई। साहित्य अकादेमी ने उन्हें श्रद्धांजलि देने हेतु शोक सभा का आयोजन किया था। तथापि आधुनिक कन्नड साहित्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के स्मरण स्वरूप, उनके साथी तथा उनकी कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाले लेखक डॉ. एम.एस. रघुनाथ को *मेरे झरोखे से* कार्यक्रम में 2 जुलाई 2020 को प्रो. के. एस. निसार अहमद पर बात करने के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यलय, बेंगळुरु में किया गया।

डॉ. रघुनाथ ने विशेषरूप से शैली काव्य में अपनी विलक्षण सृजनात्मकता हेतु नित्योत्सव कवि के रूप में विख्यात (स्व.) प्रो. के.एस. निसार अहमद के योगदान की चर्चा की। नित्योत्सव कविता कन्नडीगास के लिए घर-घर का गीत बन चुकी है जिसे बाद में मैसूर अनंतस्वामी ने सीडी और कैसेट में संयोजित किया। इसी तरह उनका काव्य भी पूरे विश्व, यूरोप, अमेरिका में सराहा गया, जहाँ कन्नडीगास नित्योत्सव के दौरान उन्हें सम्मान देने के लिए उनकी कविताएँ गाते थे।

उक्त के अलावा, वह एक जाने-माने गद्य लेखक, आलोचक और अनुवादक भी थे। भूगर्भ शास्त्र के प्रोफ़ेसर के रूप में उन्होंने कर्नाटक के कई सरकारी महाविद्यालयों में छात्रों को पढ़ाया। कन्नड के एक प्रमुख कवि प्रो. गोपालकृष्ण अडिगा द्वारा संपादित 'साक्षी' पत्रिका में भी लेखन किया। उनके साहित्यिक लेख और कविताएँ महत्त्वपूर्ण दैनिक समाचारपत्रों और आवधिकों यथा *प्रजावाणी, कन्नड प्रभा* आदि में भी प्रकाशित हुए। वह एक महान मानवतावादी और सज्जन पुरुष थे जिन्होंने पिछले पाँच दशकों के दौरान कई युवा लेखकों को प्रेरित किया। कर्नाटक सरकार द्वारा उन्हें 'पम्पा प्रशस्ति' और भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित 'पद्मश्री' प्रदान किए गए। अखिल भारत कन्नड साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता के साथ-साथ उन्हें और भी कई पुरस्कारों व सम्मानों से नवाज़ा गया।

जी.पी. राजारत्नम और अन्य शिक्षकों, महान लेखकों से प्रेरणा लेकर वह स्वयं युवाओं के आदर्श बन गए। रघुनाथ का मत था कि आधुनिक कन्नड साहित्य में उनके योगदान को एक विनिबंध के माध्यम से संरक्षित किया जाना चाहिए।

इससे पूर्व क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने दर्शकों से डॉ. एम.एस. रघुनाथ का परिचय करवाया और स्वागत भी किया। बाद में क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कविसंधि

4 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रो. अनीसुर रहमान, डॉ. एस. राजमोहन, प्रो. मालाश्री लाल तथा प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर प्रसिद्ध अंग्रेज़ी तथा उर्दू कवि प्रो. अनीसुर रहमान के साथ *कविसंधि* कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रसिद्ध लेखक, अनुवादक और साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की पूर्व सदस्य प्रो. मालाश्री लाल तथा साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने आमंत्रित कवि के साथ संवाद किया तथा एक कवि के रूप में उनकी यात्रा व अनुभव से संबंधित कई प्रश्न भी पूछे। आरंभ में दोनों आमंत्रित वक्ताओं ने प्रो. रहमान का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रो. रहमान ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने अपना कैरियर शुरू किया, फिर पूरे कार्य जीवन में कविता पढ़ाई और बाद में यह उनके शौक़ का आवश्यक अंग बन गई। वे कविता से भावनात्मक रूप से जुड़ गए। उन्होंने कहा कि पहले उन्होंने उर्दू में तथा बाद में अंग्रेज़ी में, कविता लिखना आरंभ किया था, और यह कैरियर व शौक़ दोनों ही रूपों में उनके साथ रहा। प्रो. रहमान ने अपनी ताज़ा अंग्रेज़ी कविताओं में से कुछ कविताएँ भी पढ़ीं। इससे पूर्व साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एस. राजमोहन ने आमंत्रित कवि तथा दोनों अतिथि वक्ताओं का स्वागत करते हुए *कविसंधि* कार्यक्रम की अवधारणा पर बात की।

'संताली धार्मिक गीत : साहित्यिक उद्‌भव' पर साहित्य मंच

9 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

व्याख्यान देते हुए श्री मदन मोहन सोरेन

साहित्य अकादेमी ने 'संताली धार्मिक गीत : साहित्यिक उद्‌भव' पर आभासी मंच पर *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें श्री संजय किस्कु, श्री कालीचरण हेम्ब्रम तथा श्री सालखू मुर्मू जैसे संताली लेखकों ने कार्यक्रम के विषय पर बात की। कार्यक्रम का आयोजन वेबलाइन कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 9 जुलाई 2020 को किया गया। इस कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रत्येक प्रतिभागी ने विषय से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर बात की। साथ ही विभिन्न धार्मिक उद्धरणों और उनकी विशेषताओं का भी संदर्भ दिया।

उन्होंने इसकी विषयवस्तु और पाठकों पर इसके प्रभाव का भी विश्लेषण किया। क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया।

तेलुगु साहित्य मंच (कोरोना महामारी पश्च तेलुगु साहित्य जगत)

30 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु द्वारा 30 जुलाई 2020 को आभासी मंच पर 'तेलुगु साहित्य

श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, प्रो. रचापालेम चंद्रशेखर रेड्डी, श्री वासिरेड्डी नवीन, श्री बी. तिरुपति राव तथा श्री एन. वेणुगोपाल

मंच (कोरोना महामारी पश्च तेलुगु साहित्य जगत)' का आयोजन किया गया। सुविख्यात तेलुगु कवियों यथा प्रो. रचापालेम चंद्रशेखर रेड्डी, श्री वासिरेड्डी नवीन, श्री बी. तिरुपति राव तथा श्री एन. वेणुगोपाल ने *कोरोना महामारी पश्च तेलुगु साहित्य जगत* विषय पर बात की।

श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने श्रोताओं तथा अतिथियों का स्वागत किया और वर्तमान समाज पर कोरोना महामारी के प्रभावों के बारे में बात की।

प्रख्यात तेलुगु आलोचक, लेखक और साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् तथा तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. रचापालेम चंद्रशेखर रेड्डी ने इस अवसर पर बात की। उन्होंने कहा कि साहित्य वर्तमान परिस्थितियों, वातावरण परीक्षणों और कोलाहल को प्रतिबिंबित करता है। इसलिए लेखकों द्वारा वर्तमान साहित्यिक लेखन भविष्य के अध्ययन हेतु रिकार्ड्स के रूप में उपलब्ध होगा।

अपने भाषण में सामान्य परिषद् और तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य तथा प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री नवीन वासिरेड्डी ने आशावादी दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहा कि हम कोरोना महामारी पश्च एक बेहतर जगत की कल्पना कर सकते हैं।

तेलुगु लेखक और साहित्यिक पत्रिका 'वीक्षणम' के संपादक श्री एन. वेणुगोपाल ने कहा कि यद्यपि कोरोना महामारी ने अच्छे समय और अवसरों को नष्ट कर दिया है लेकिन इसने साहित्य के पाठकवर्ग और साहित्यकारों की सृजनशील उत्कंठा के विकास में सहायता की है। नवीकृत मानवी विचारों और मानवी जीवन को भी इससे एक नया रास्ता मिला है और साहित्य में नए विचारों और प्रवृत्तियों को स्थान मिला है।

तेलुगु आलोचक और द्रविडियन विश्वविद्यालय, कुप्पम के अंग्रेज़ी विभाग प्रमुख तथा पूर्व रजिस्ट्रार डॉ. बी. तिरुपति राव ने अपने वक्तव्य में कहा कि मानवी जीवन और इतिहास में परेशानियाँ या त्रासदी कोई नई चीज़ नहीं है। मनुष्य प्रजाति हमेशा बदलावों व चुनौतियों का सामना करके जीतती रही है इसलिए साहित्य सदैव स्थितियों की चुनौतियों और बदलावों को प्रतिबिंबित करता रहेगा और मनुष्य को भावी जीवन की ओर अग्रसर करता रहेगा।

कार्यक्रम के अंत में क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

कविसंधि - प्रितपाल सिंह 'बेताब'

31 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात उर्दू कवि श्री प्रितपाल सिंह 'बेताब' के साथ *कविसंधि* कार्यक्रम आयोजित किया, जो जम्मू-कश्मीर में समकालीन उर्दू कविता का प्रतिनिधित्व करते हैं। ग़ज़लों और नज़्मों की उनकी पुस्तक 'पेश कयमा' को जम्मू कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की ओर से श्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार दिया गया था। उन्हें सुभद्रा कुमारी चौहान जन्मशताब्दी सम्मान, जे. एंड के. सादिक़ स्मारक पुरस्कार, मोहम्मद दीन बंदे पुरस्कार, जेमनी अकादमी हरियाणा द्वारा जम्मू-कश्मीर रतन पुरस्कार और अंजुमन-ए-तरक़्क़ी-ए-उर्दू हिंद

श्री प्रितपाल सिंह 'बेताब'

द्वारा मुहसिन-ए-उर्दू पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आरंभ में साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने अतिथि का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। श्री बेताब ने अपनी कुछ लोकप्रिय ग़ज़लें व नज़्में पढ़ीं। उन्होंने अपनी काव्य-यात्रा पर भी बात की।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पैनल चर्चा

15 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा आभासी मंच पर, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2020 को एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसका विषय था 'स्वतंत्रता, संविधान और साहित्य'। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि स्वतंत्रता वास्तव में उस वातावरण को बनाए रखने का नाम है ताकि एक व्यक्ति अपने विकास हेतु अधिकतम अवसर प्राप्त कर सके। भारत के संविधान में 'राष्ट्र और व्यक्तियों के आध्यात्मिक उत्थान हेतु विचारों, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और पूजा की स्वतंत्रता को आवश्यक मानते हुए उसे प्रस्तावना में सुनिश्चित किया है।' संविधान द्वारा सुनिश्चित प्रथम स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति व बोलने की स्वतंत्रता है। स्वतंत्रता के अध्याय में इसे सर्वोच्च स्थान देना इस बात का प्रमाण है कि यह लोकतांत्रिक शासन की आधारशिला है।

श्री बी.पी. सिंह, श्री अनुपम तिवारी, डॉ. सुकृता पॉल कुमार, प्रो. जतिन नायक, डॉ. बलदेव भाई शर्मा, प्रो. अश्विनी कुमार, श्री एस.के. गौतम, डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री प्रभात शुंगलू, श्रीमती चित्रा मुद्गल तथा श्री प्रबोध पारिख

सिक्किम के पूर्व राज्यपाल और प्रख्यात लेखक श्री बी.पी. सिंह ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक आधार की रूपरेखा बताते हुए लोकमान्य तिलक की 'गीतारहस्य' का संदर्भ दिया और कहा कि भारतीय प्रज्ञा की परंपरा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सुस्पष्ट है।

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति और प्रसिद्ध लेखक व पत्रकार बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि भारत का इतिहास दासता का नहीं बल्कि अनवरत संघर्ष का इतिहास है। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान स्वतंत्रता को एक अधिकार मानता है परंतु दूसरों के अधिकार का अतिक्रमण नहीं करता। उन्होंने *ऋग्वेद, रामचरितमानस* और जयशंकर प्रसाद व मैथिलीशरण गुप्त की कृतियों के माध्यम से साहित्य की आधारभूत चेतना पर बल दिया।

प्रख्यात हिंदी कथा लेखिका और विदुषी चित्रा मुद्गल ने लेखक की स्वतंत्रता की व्याख्या करते हुए बताया कि लेखक उत्पीड़ित जनता के संघर्ष की अभिव्यक्ति करता है पर स्वतंत्रता का अर्थ अव्यवस्था नहीं है इसलिए संवैधानिक विचारों की अभिव्यक्ति करते हुए लेखकों को सतर्क व संवेदनशील रहना चाहिए। साहित्य, वास्तव में, लोगों के संघर्ष का इतिहास है।

सुविख्यात कवयित्री डॉ. सुकृता पॉल कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि रचयिता की स्वतंत्रता और चरित्रों की स्वतंत्रता रचना में ही होती है। प्रख्यात गुजराती कवि और चित्रकार प्रबोध पारिख, प्रख्यात आलोचक और उत्कल विश्वविद्यालय के विज़िटिंग प्रोफ़ेसर जतिन नायक, जानेमाने कवि और टाटा इंस्टीट्यूट के प्रोफ़ेसर अश्विनी कुमार, वरिष्ठ पत्रकार प्रभात शुंगलू ने विषय पर अपने विचार साझा किए। जाने-माने कवि और दिल्ली पुलिस मुख्यालय में विशेष आयुक्त एस.के. गौतम ने अपने 'संवैधानिक काव्य' से कुछ अंश प्रस्तुत किए।

अंत में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी वक्ताओं का आभार प्रकट किया। संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

'ओड़िआ साहित्य में हास्य' पर पैनल चर्चा

18 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

व्याख्यान देते हुए डॉ. बिजयानंद सिंह

साहित्य अकादेमी ने 'ओड़िआ साहित्य में हास्य' विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन 18 अगस्त 2020 को आभासी मंच पर किया, जिसमें बद्री मिश्र, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, पिताबसा राउतराय जैसे ओड़िआ विद्वानों ने विषय पर बात की। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रतिभागियों ने एक साहित्यिक शैली के रूप में हास्य के विविध पक्षों पर विस्तार से बात की और ओड़िआ में विभिन्न विनोदपूर्ण रचनाओं और अनुक्रमिक ओड़िआ लेखन पर उनके प्रभावों का भी संदर्भ दिया।

बांग्लादेश में मणिपुरी प्रवासियों के साथ प्रवासी मंच

1 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 1 अक्तूबर 2020 को 'बांग्लादेश में मणिपुरी प्रवासी' विषय पर 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम का आयोजन आभासी मंच के अंतर्गत किया।

कार्यक्रम में, साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक

श्री एन. किरण कुमार सिंह, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्री माइसनम राजेश, सुश्री आयेकपम अंजू तथा श्री ए.के. शेराम

श्री एन. किरण कुमार सिंह ने आरंभिक भाषण दिया और श्रोताओं को मणिपुरी भाषा और साहित्य की समृद्धि के बारे में सूचित करते हुए इस कार्यक्रम की प्रकृति पर विस्तार से बात की जिसका उद्देश्य भारत के बाहर मणिपुरी भाषा, साहित्य और संस्कृति के विस्तार पर विमर्श करना है। कार्यक्रम में बांग्लादेश से मणिपुरी लेखकों ने भाग लिया। सुश्री आयेकपम अंजू और श्री माइसनम राजेश ने कविताएँ पढ़ीं तथा श्री ए.के. शेराम ने 'बांग्लादेश में मणिपुरी भाषा और साहित्य की स्थिति' पर व्याख्यान दिया। श्री ए.के. शेराम ने अपने भाषण में बांग्लादेश में मणिपुरी साहित्य का इतिहास और इसके विकास पर बात की। उन्होंने क्षेत्र की मुख्य साहित्यिक गतिविधियों सहित उन साहित्यिक संस्थाओं का भी संदर्भ दिया जो बांग्लादेश में लगातार मणिपुरी भाषा के प्रसार का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने बांग्लादेश के महत्त्वपूर्ण मणिपुरी लेखकों तथा उनकी रचनाओं के बारे में भी बताया।

'गाँधी - एक लेखक' विषय पर परिसंवाद

2 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशती समारोह के स्मरण स्वरूप साहित्य अकादेमी ने 'गाँधी - एक लेखक' विषय पर आभासी परिसंवाद आयोजित किया। अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने कहा कि गाँधी जी का भारतीय परंपरा में

परिसंवाद का दृश्य

गहरा विश्वास था जिसके द्वारा उन्होंने सत्य और अहिंसा के सही मायने विश्व को बताए। उन्होंने अकादेमी द्वारा आयोजित उस पुस्तक प्रदर्शनी के बारे में भी बताया जिसमें गाँधी जी द्वारा और गाँधी जी पर कुल 700 पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में प्रदर्शित की गई थीं। परिसंवाद में श्री हरीश त्रिवेदी ने 'विश्व साहित्य पर लेखक गाँधी का प्रभाव', श्री मधुकर उपाध्याय ने 'हिंद स्वराज आज', श्री सच्चिदानंद जोशी ने 'गाँधी-एक संपादक', श्री सीतांशु यशश्चंद्र ने 'अभिग्रहण : गाँधी ने गुजरात से क्या पाया; गुजरात ने गाँधी का कैसे सम्मान किया : एक आलोचनात्मक समीक्षा', डॉ. वर्षा दास ने 'एक राजनीतिक हथियार के रूप में गाँधी का लेखन' तथा डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने 'भारतीय साहित्य पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें भी लोकार्पित की गईं। पहली पुस्तक श्री आलोक गुप्त द्वारा संपादित 'गाँधी और 1980 के बाद का हिंदी गुजराती साहित्य' तथा दूसरी श्री मधुकर उपाध्याय द्वारा लिखित 'बापू कथा चौदस : महात्मा गाँधी की जीवनी' पुस्तक थी, जिसे विशेषतौर पर बच्चों के लिए लिखा गया है तथा इसमें गाँधी जी के जीवन पर आधारित 14 कहानियाँ हैं। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि गाँधी जी के पास भविष्य का दर्शन था तथा हमें आज भी उस दर्शन को जानने व समझने की ज़रूरत है। कार्यक्रम का संचालन श्री अनुपम तिवारी, संपादक (हिंदी) ने किया।

कविसंधि

8 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

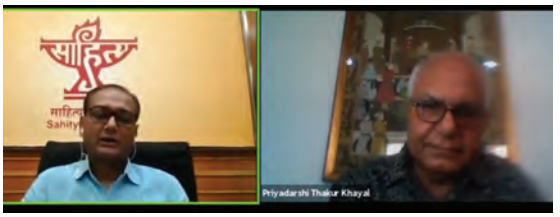

श्री अनुपम तिवारी तथा श्री प्रियदर्शी ठाकुर 'ख़याल'

अकादेमी ने प्रसिद्ध उर्दू कवि और लेखक प्रियदर्शी ठाकुर 'ख़याल' के साथ आभासी मंच पर *कविसंधि* कार्यक्रम आयोजित किया। श्री ख़याल जाने-माने उर्दू कवि हैं, जिन्होंने आधा दर्ज़न से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। उनकी कुछ प्रसिद्ध ग़ज़लें प्रसिद्ध गायकों द्वारा गाई गई हैं। वह दिल्ली विश्वविद्यालय तथा विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में कार्य कर चुके हैं। आरंभ में, श्री अनुपम तिवारी, संपादक (हिंदी) ने कवि का स्वागत एवं उनका परिचय प्रस्तुत किया। श्री प्रियदर्शी ठाकुर 'ख़याल' ने अपनी प्रसिद्ध ग़ज़लें और अन्य कविताएँ सुनाईं।

इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय जन्मशती साहित्य मंच : कोंकणी

10 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच के अंतर्गत 10 अक्तूबर 2020 को *कोंकणी में इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय जन्मशती* पर साहित्य मंच कार्यक्रम का यूट्यूब पर प्रसारण किया। स्वर्गीय इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय (1921-1984) एक प्रतिष्ठित कोंकणी लेखक, शोधार्थी और अनुवादक तथा कोंकणी भाषा और साहित्य में योगदान के लिए विशेष श्रद्धेय हैं।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, प्रसिद्ध कोंकणी लेखक और साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य श्री पय्यानूर रमेश पई, सुश्री सुशीला भट, श्री शरतचंद्र शिनॉय, श्री बालाजी

परिसंवाद का दृश्य

शिनॉय और साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने साहित्य मंच में सहभागिता की।

आरंभ में, श्री कृष्णा किंबहुने ने कोंकणी में स्वर्गीय श्री इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय के महत्त्वपूर्ण योगदान के बारे में तथा वर्तमान कोंकणी परामर्श मंडल द्वारा श्री शिनॉय की जन्मशती मंच के आयोजन की संस्तुति के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने श्री पय्यनूर रमेश पई से मंच की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव को स्वागत वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया।

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने बताया कि उत्कृष्ट कोंकणी लेखक, शोधकर्त्ता तथा अनुवादक स्वर्गीय इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय की जन्मशती के उपलक्ष्य में इस साहित्य मंच का आयोजन किया गया है। स्वर्गीय शिनॉय का जन्म 21 फ़रवरी 1921 को तथा निधन 29 जुलाई 1984 को हुआ। 63 वर्षों के जीवनकाल में उन्होंने ज्ञान के प्रति जो जिज्ञासा व उत्सुकता दिखाई तथा अपनी मातृभाषा कोंकणी के प्रति उनकी अनुपम प्रतिबद्धता और अद्‌भुत उद्यमशीलता उनके अनुभवों की विविधता के स्वीकरण में स्पष्ट लक्षित है। कोंकणी में शिनॉय का योगदान उत्कृष्ट है। उनकी कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें *कोंकणी परिचय, एक स्वप्नाचु अर्थु, कोंकणी बाल व्याकरण, कोंकणी पदमाला, कोंकणी पत्र लेखन, कोंकणी भाषान्तर* आदि हैं। सुश्री सुशीला भाट ने स्वर्गीय शिनॉय की शख़्सियत के कई रंगों पर बात की जिसने उन्हें प्रतिभाशाली मनुष्य और कोंकणी भाषा व साहित्य का सच्चा प्रशंसक बनाया। उन्होंने कहा कि शिनॉय एक शानदार अनुवादक भी थे और अपने जीवन में उन्होंने बहुत संघर्ष किया। अपनी बात समाप्त करते हुए सुश्री सुशीला ने इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय को प्रेमपूर्वक स्मरण करने के लिए साहित्य अकादेमी को हार्दिक धन्यवाद दिया। प्रख्यात कोंकणी कवि श्री शरतचंद्र शिनॉय ने व्यक्त किया कि स्वर्गीय शिनॉय एक बहुमुखी व्यक्तित्व थे और कोंकणी भाषा के प्रति उनका प्रेम बेमिसाल था। उन्होंने कहा कि शिनॉय ने केवल कोंकणी में लिखा ही नहीं बल्कि दूसरी भाषा के प्रसिद्ध साहित्य का कोंकणी में अनुवाद भी किया। उन्होंने शिनॉय की प्रसिद्ध पुस्तक 'गोदी गोदी का नायो' पर भी बात की। स्वर्गीय शिनॉय के पौत्र श्री बालाजी शिनॉय ने गर्व से अपने दादा को याद करते हुए उनके द्वारा कोंकणी को देवनागरी लिपि में तेज़ी से संचालित करने पर चर्चा की। अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए कार्यक्रम के अंत में श्री पय्यनूर रमेश पई ने कोंकणी में शिनॉय के असाधारण योगदान पर अपने विचार साझा किए। श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कोंकणी बाल साहित्य में नव प्रवृत्तियाँ' विषय पर संगोष्ठी

20 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 20 अक्तूबर 2020 को आभासी मंच पर 'कोंकणी बाल साहित्य में नव प्रवृत्तियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अपने स्वागत वक्तव्य में श्री कृष्णा किंबहुने ने साहित्य अकादेमी द्वारा वर्चुअली (आभासी रूप से) आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी। श्री चेतन आचार्य ने संगोष्ठी का उद्‌घाटन किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने

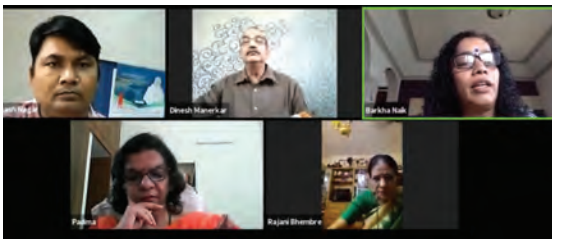

डॉ. ओम प्रकाश नागर, श्री दिनेश मनेरकर, सुश्री रत्नमाला दिवकर, सुश्री पद्‌मा बालिगा तथा सुश्री रजनी भेम्ब्रे

बाल साहित्य में सृजनशील दक्षता के साथ प्रयोगों, संस्कार, वैज्ञानिक विचारधारा और कल्पना पर बल देते हुए अपने विचार रखे। डॉ. भूषण भावे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि पीढ़ी बदलने के साथ-साथ मनोरंजन के तरीके, मानवीय मूल्यों की समझ, शिक्षा और संस्कार प्रकटन के तरीके भी बदलते हैं और इसमें बाल साहित्य की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि इसे इन सबके दर्पण के रूप में देखा जा सकता है। आलेख प्रस्तुति सत्र में सुश्री रजनी भेम्ब्रे ने कथात्मक और सूचनात्मक बाल साहित्य तथा सुश्री पद्मा बालिगा ने कोंकणी बाल साहित्य, वर्तमान और भविष्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री रत्नमाला दिवकर ने इस सत्र की अध्यक्षता की। अगले सत्र में सुश्री नयना अदारकर ने कथा पर, श्री कवींद्र फलदेसाई ने 'बाल साहित्य : नए विषय और अवधारणाएँ' पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री दिनेश मनेरकर ने सत्र की अध्यक्षता की। तीसरे सत्र में सुश्री राजश्री बंदोडकर कारापुरकर ने 'विज्ञान उपन्यास' पर और सुश्री तन्वी कामत बंबोलकर ने 'बाल साहित्य से जुड़ी ई-विषयवस्तु' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री प्रशांति तलपणकर ने की। साहित्य अकादेमी, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने कार्यक्रम का संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापन किया।

'बोडो शिक्षा माध्यम : अतीत तथा वर्तमान' विषय पर संगोष्ठी

22 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 22 अक्तूबर 2020 को आभासी मंच पर जानेमाने बोडो विद्वानों तथा लेखकों के साथ 'बोडो शिक्षा माध्यम : अतीत तथा वर्तमान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं को संगोष्ठी के विषय से अवगत कराया

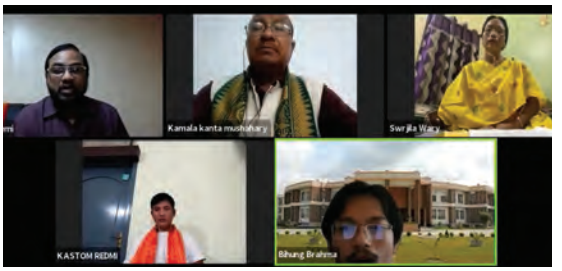

डॉ. मिहिर कुमार साहू, श्री कमला कांत मुशाहारी, श्री कास्तोम बसुमतारी तथा श्री बिहुंग ब्रह्म

तथा इस संबंध में नवीनतम सरकारी नीति के संदर्भ में मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बोडो साहित्य तथा भाषा की समृद्धि और अनुवाद के महत्त्व का भी उल्लेख किया। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राथमिक स्तर पर ही बोडो भाषा के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। बच्चों की आलोचनात्मक सोच को विकसित करने में इसकी अहम भूमिका होती है तथा यह बेहतर समझ में बढ़ोत्तरी करता है, किंतु फिर भी लोग दिखावे के लिए इंग्लिश मीडियम स्कूलों में जाते हैं। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा के उपयोग को शिक्षा के माध्यम के रूप में अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। उन्होंने इस संबंध में कई जनजातीय भाषाओं का भी ज़िक्र किया। उद्घाटन भाषण बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री तारेन बर' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने बोडो भाषा के प्रयोग को शिक्षा के माध्यम के रूप में करने के इतिहास पर विस्तार से बात की। उन्होंने इस संबंध में ऐतिहासिक मील के पत्थर का भी ज़िक्र किया। उन्होंने उन अनेक संभावनाओं के बारे में बताया जो बोडो भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में शामिल करने के बाद खुल सकती हैं। उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'बोडो शिक्षा माध्यम : अतीत तथा वर्तमान : समस्याएँ और चुनौतियाँ'। इस सत्र में श्री कास्तोम बसुमतारी, श्री बिहंग ब्रह्म तथा सुश्री स्वाजिला वारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री कमला कांत मुशाहारी ने सत्र की अध्यक्षता की। द्वितीय

सत्र का विषय था—'बोडो शिक्षा माध्यम तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'। इस सत्र में श्री प्रशांत बर', श्री राजू मोहन बसुमतारी तथा श्री निराला रामचिआरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अजीत बर' ने सत्र की अध्यक्षता की। इन दोनों विचार सत्रों का संचालन साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने किया। इन दो विचार सत्रों में बोडो शिक्षा माध्यम की समस्याओं और चुनौतियों, इसके इतिहास एवं विकास तथा केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति के महत्त्व के कई पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

'भारतीय काव्य की वर्तमान प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद

23 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 'भारतीय काव्य की वर्तमान प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन 23 अक्तूबर 2020 को किया। श्री सुदीप सेन, सुश्री मालास्वामी जैकब, डॉ. जयदीप सारंगी, श्री गोपाल लाहिरी और के.वी. डॉमिनिक ने चर्चा में सहभागिता की। प्रो. संयुक्ता दासगुप्ता ने *आज का भारतीय अंग्रेज़ी काव्य* पर आरंभिक टिप्पणी करते हुए सत्र की शुरुआत की। प्रख्यात कवि सुदीप सेन ने कविता और समाज में इसकी भूमिका के परिप्रेक्ष्य में चर्चा की शुरुआत की, जिसमें उन्होंने कई संदर्भों और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को जोड़ा। उन्होंने अपनी कुछ कविताएँ भी पढ़ीं। मालास्वामी जैकब ने उत्तर-पूर्व की कविता को विचारों और भावों के ख़ज़ाने के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कवियों की जड़ों और जातीयता पर बात की। केरल के प्रख्यात कवि के.वी. डॉमिनिक ने इको कविता पर बात की। उन्होंने पहाड़ों और जंगलों के कवियों का संदर्भ दिया। उनके कई प्रतीक भारतीय परंपराओं और मूल्यों में सुस्थिर हैं। डॉमिनिक ने एक सुंदर कविता सुनाई। गोपाल लाहिरी ने समकालीन परिप्रेक्ष्य में कविता की व्याख्या की। उन्होंने अपनी एक उत्कृष्ट कविता भी पढ़ी। जयदीप सारंगी ने 1950 से अंग्रेज़ी में भारतीय कविता के इतिहास का एक सिंहावलोकन किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार कुछ पत्रिकाएँ सिद्धांत निर्माण में महत्त्वपूर्ण बनीं। उन्होंने काव्य-इतिहास से कवियों का संदर्भ दिया। उन्होंने कहा कि कवियों में कुछ न कुछ चलता ही रहता है वह तकलीफ़ से गुज़रते हैं। वर्षा आने की प्रतीक्षा करते हैं, जिससे उन्हें राहत मिल सके। समग्र रूप में अंग्रेज़ी कविता विचारों का खज़ाना है। हम मानते हैं कि भारत में अंग्रेज़ी कविता अब पूरा पेड़ बन चुकी है। उपस्थित प्रतिभागियों और सभी प्रतिनिधियों ने कवियों को ध्यान से सुना। डॉ. एस. राजमोहन ने गहरे तथ्य प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया।

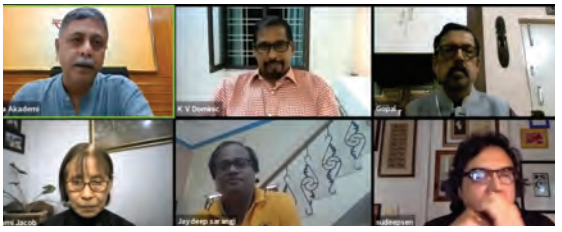

डॉ. एस. राजमोहन, श्री के.वी. डॉमिनिक, श्री गोपाल लाहिरी, सुश्री मालास्वामी जैकब, डॉ. जयदीप सारंगी तथा श्री सुदीप सेन

'सिंधी साहित्य में स्वर्गीय अर्जन हासिद का योगदान' पर परिसंवाद

26 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच के अंतर्गत प्रख्यात सिंधी कवि तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य अर्जन हासिद के स्मरण-स्वरूप तथा सिंधी साहित्य में स्वर्गीय अर्जन हासिद के योगदान पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि हासिद की कविताएँ, ग़ज़लें, गीत तथा काव्य को समझने की अंतर्दृष्टि ने सिंधी कविता की परंपरा में काफ़ी योगदान दिया है। हासिद सिंधी के सर्वाधिक विशिष्ट कवियों में से एक थे। सिंधी परामर्श

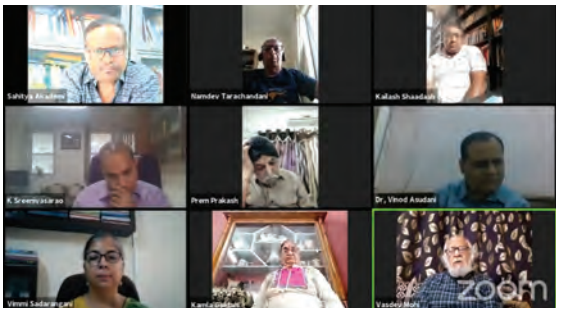

परिसंवाद का दृश्य

मंडल के संयोजक श्री नामदेव ताराचंदाणी ने कहा कि हासिद ने सिंधी में ग़ज़लों को भावनात्मक कौशल से सजाया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री वासदेव 'मोही' ने कहा कि सिंधी ग़ज़लों की परंपरा में हासिद को एक बहुत ऊँची प्रतिष्ठा प्राप्त है। प्रख्यात सिंधी लेखक डॉ. प्रेम प्रकाश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आलेख प्रस्तुति सत्र में डॉ. विनोद असुदाणी ने अर्जन हासिद की ग़ज़लों पर, श्री नारी लच्छवाणी ने अर्जन हासिद के गीतों पर, विम्मी सदारंगाणी ने हासिद के रचना-संसार पर, श्री कैलाश शादाब ने अर्जन हासिद की कविताओं पर आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. कमला गोकलाणी ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'बोडो साहित्य में प्रतिबिंबित स्त्रियों के मुद्दे' पर परिसंवाद

27 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 27 अक्तूबर 2020 को आभासी मंच पर 'बोडो साहित्य में प्रतिबिंबित स्त्रियों के मुद्दे' विषय पर परिसंवाद का आयोजन प्रसिद्ध बोडो लेखकों और विद्वानों के साथ किया।

आरंभ में, साहित्य अकादेमी, पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री

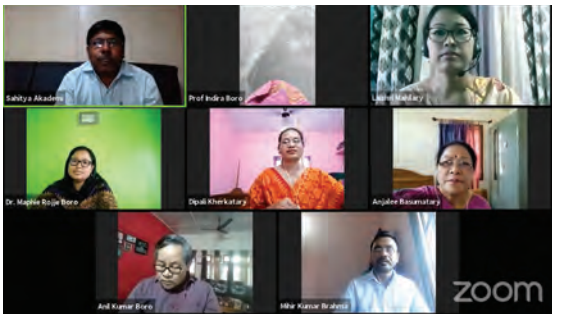

परिसंवाद का दृश्य

अंजली बसुमतारी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने परिसंवाद के विषय से श्रोताओं का परिचय करवाया और मुद्दे के महत्त्व पर भी बात की। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री इंदिरा बर' ने बीज भाषण दिया। उन्होंने बोडो साहित्य में महिलाओं से जुड़े मुद्दों के साहित्यिक प्रबंधन के विकास के इतिहास पर चर्चा की। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक श्री अनिल कुमार बर' ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने इस संबंध में विषय-वस्तु के निरूपण और आम पाठक वर्ग की मानसिकता पर इनके चित्रण के प्रभावों पर अपनी बात केंद्रित की। सुश्री दीपाली खेरकतरी, सुश्री लाईश्री महिलारी, श्री मिहिर कुमार ब्रह्म और सुश्री मेफी रोज्जे बर' ने परिसंवाद में अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने घरेलू हिंसा, सामाजिक दायित्व आदि को शामिल करते हुए बोडो साहित्य में महिलाओं के मुद्दों के विविध पक्षों को उठाया।

'मणिपुरी साहित्य और संस्कृति में सनाख्या ईबोतोम्बी का योगदान' पर पैनल चर्चा

31 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 31 अक्तूबर 2020 को आभासी मंच पर 'मणिपुरी साहित्य और संस्कृति में सनाख्या ईबोतोम्बी का योगदान' विषयक पैनल चर्चा का आयोजन किया, जिसमें मणिपुरी के प्रसिद्ध विद्वानों को आमंत्रित किया गया था।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ.

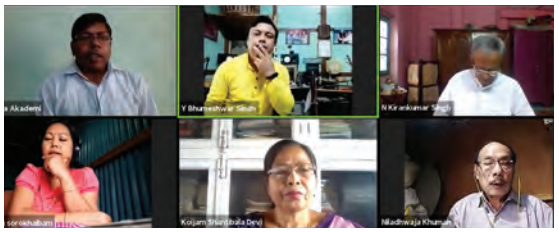

डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्री वाई. भूमेश्वर सिंह, श्री एन. किरण कुमार सिंह, सुश्री एस. सुशीला देवी, डॉ. के. शांतिबाला देवी तथा श्री नीलध्वज खुमन

देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. के. शांतिबाला देवी, श्री नीलध्वज खुमन, सुश्री एस. सुशीला देवी और श्री वाई. भूमेश्वर सिंह ने चर्चा में सहभागिता की। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एन. किरण कुमार सिंह ने वक्ताओं का परिचय करवाया। उन्होंने इंफ़ाल, मणिपुर में जन्मे नाटककार, रंगकर्मी, फ़िल्म निर्देशक, लेखक, अभिनेता और ज्योतिषी सनाख्या ईबोतोम्बी हाओरोकचाम (5 सितंबर 1946 - 13 अप्रैल 2016) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत की।

डॉ. के. शांतिबाला देवी ने मणिपुरी ड्रामा में सनाख्या ईबोतोम्बी के योगदान पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि आरंभ में वे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के छात्र थे। वे इंफ़ाल में 'अवंत गार्दे' के संस्थापक और निदेशक रहे, जहाँ उन्होंने इंफ़ाल और देश के अन्य भागों के कई रंगमंच कलाकारों को प्रशिक्षण दिया। वह रंगमंच के ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने रंगमंच और फ़िल्म उद्योग के क्षेत्र में कई अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को स्थापित किया। अपनी सांस्कृतिक जड़ों में उनका गहरा विश्वास था और अपने कई नाटकों में उन्होंने मणिपुरी परंपरा और संस्कृति को दर्शाने का प्रयास किया। डॉ. देवी ने भी उनके कई नाटकों का संदर्भ देते हुए उनकी विशेषताओं की विवेचना की। सुश्री एस. सुशीला ने सनाख्या ईबोतोम्बी के जीवन और गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन के बड़े आयोजनों और गतिविधियों की वृहद शृंखला के बारे में चर्चा की। ईबोतोम्बी के साथ नज़दीकी से जुड़े रहे श्री वाई. भूमेश्वर सिंह, जो स्वयं भी एक प्रख्यात विद्वान हैं, ने इस परंपरा में ईबोतोम्बी के योगदान पर चर्चा की। सनाख्या ईबोतोम्बी ने कई लेख, कहानियाँ, नाटक और नट संकीर्तन पर पुस्तकें लिखीं और थिएटर, नट कीर्तन, मणिपुरी रास, मणिपुरी संस्कृति आदि पर व्याख्यान दिए। नट संकीर्तन पर उनकी पुस्तक को अपनी तरह की सर्वाधिक प्रामाणिक पुस्तक मानते हुए काफ़ी सराहा गया था क्योंकि संकीर्तन, मणिपुरी वैष्णव जीवन में विभिन्न अवस्थाओं और धार्मिक आयोजनों के संकेत स्वरूप आयोजित कलाओं की शृंखला को सम्मिलित करता है। इसे मंदिरों में आयोजित किया जाता है। कलाकार गीतों व नृत्य के माध्यम से कृष्ण के जीवन व कार्यों का वर्णन करते हैं। श्री नीलध्वज खुमन ने सनाख्या ईबोतोम्बी के रंगमंच और लेखन पर विस्तार से चर्चा की।

'संताली भाषा में बाल साहित्य' पर साहित्य मंच

11 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 11 नवंबर 2020 को आभासी मंच पर 'संताली भाषा में बाल साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रतिभागी थे - श्री अंजन करमाकर, श्री पीतांबर हांसदा तथा सुश्री शकुंतला बेसरा।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. साहू ने प्रतिभागियों का परिचय करवाया। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने आरंभिक भाषण दिया। उसके बाद वक्ताओं

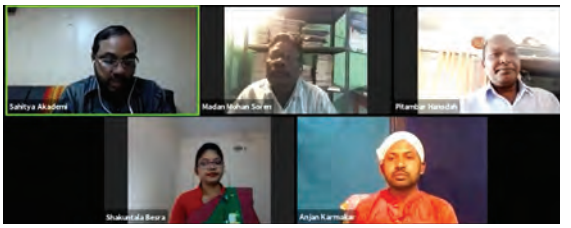

डॉ. मिहिर कुमार साहू, श्री मदन मोहन सोरेन, श्री पीतांबर हांसदा, सुश्री शकुंतला बेसरा तथा श्री अंजन करमाकर

ने संताली में बाल साहित्य के उद्भव और विकास पर बात की। उन्होंने इस शैली के मुख्य लेखकों का संदर्भ दिया और इस शैली के लेखकों को आकर्षित करने वाले विषयों पर भी बात की। भावी पीढ़ियों पर इसके प्रभावों की भी चर्चा हुई।

'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाङ्ला कविता' पर परिसंवाद

27 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 27 नवंबर 2020 को 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाङ्ला कविता' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें प्रसिद्ध बाङ्ला लेखकों ने भाग लिया। प्रतिभागी लेखक थे—श्री पवित्र सरकार, प्रो. सुमित्र चक्रवर्ती, श्री गौतम मित्र, श्री जे. सेन मजूमदार और श्री विनायक बंद्योपाध्याय।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक वक्तव्य दिया और बाङ्ला साहित्य के विभिन्न युगों को चिह्नित करने की समस्याओं पर बात की। एक समय ऐसा भी था जो कुछ साहित्यिक दिग्गजों के प्रभाव में था। प्रो. सुमित्र चक्रवर्ती ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बाङ्ला कविता की विविध प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला, साथ ही यह भी बताया कि विविध प्रवृत्तियों के महत्त्वपूर्ण लेखक एक दूसरे से किस प्रकार अलग थे। उन्होंने कालानुक्रम से बाङ्ला कविता की परंपरा को प्रस्तुत किया। श्री विनायक बंद्योपाध्याय ने व्याख्या की कि कई अन्य प्रकार की ऐसी कविताएँ हैं जिन्हें विद्वानों ने भी मान्यता नहीं दी और पूरे समय ये परदे के पीछे छिपी रह गईं। उन्होंने कविता में लय की भूमिका के महत्त्व और किस प्रकार बाङ्ला कविता पर लंबे समय तक इसका प्रभाव रहा, पर भी बात की। यह भी बताया कि बाङ्ला कविताओं के कई विषय एक दूसरे से जुड़े हैं जिन्हें वर्गीकृत नहीं किया जा सकता। श्री गौतम मित्र ने भिन्न-भिन्न प्रकार की कविताओं पर प्रकाश डालते हुए उनसे उद्धरण प्रस्तुत किए। श्री जे. सेन मजूमदार ने बाङ्ला कविता में काव्य के साथ भावनात्मक लगाव के बदलावों पर अपनी बात केंद्रित की। जीवन दर्शन में बदलाव ने कवियों को प्रभावित किया, जिससे उन्होंने अभिव्यक्ति के नए रूपों द्वारा नए भावों को अभिव्यक्ति दी। श्री पवित्र सरकार ने बाङ्ला काव्य की उभरती प्रवृत्तियों पर फोकस किया जो पहले की प्रबल प्रवृत्तियों से विमुक्त हुई थीं। उन्होंने पश्चिम से आई कविता की नई प्रवृत्तियों पर बात की।

परिसंवाद का दृश्य

'मराठी में शहरी कविता' पर परिसंवाद

26 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 'मराठी में शहरी कविता' पर परिसंवाद का आयोजन 26 नवंबर 2020 को आभासी मंच के अंतर्गत किया गया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने लेखकों-कवियों-कलाकारों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रख्यात मराठी लेखक श्री राजन गवस ने परिसंवाद

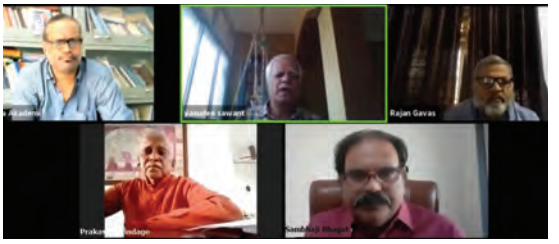

श्री कृष्णा किंबहुने, डॉ. वासुदेव सावंत, डॉ. राजन गवस
डॉ. प्रकाश खांडगे तथा श्री संभाजी भगत

का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि शहरी कविता और प्रदर्शन जनसाधारण की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। शहरी कविता—दैनिक कार्यों के संबंध में इतिहास, राजनीति, मानवीय मूल्यों और विवेक का ज्ञान प्रभावी रूप से प्रदान करती है। उन्होंने बताया कि कई शहरी कवियों-कलाकारों ने महाराष्ट्र के सांस्कृतिक व सामाजिक-राजनीतिक बेहतरी में बड़ा योगदान दिया है। अगले सत्र में डॉ. प्रकाश खांडगे, डॉ. वासुदेव सावंत और श्री संभाजी भगत ने महाराष्ट्र में शहरी परंपरा और इसके कई आयामों पर अपने विचार साझा किए।

'रायलसीमा लेखकों के विशेष संदर्भ के साथ भारतीय साहित्य निर्माता' पर परिसंवाद

28 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

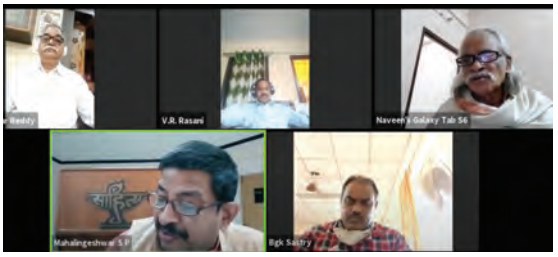

डॉ. रचापालेम चंद्रशेखर रेड्डी, श्री वी.आर. रसानी, श्री के. शिवा रेड्डी, श्री एस.पी. महालिंगेश्वर तथा श्री बी. गोपाल कृष्ण शास्त्री

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने आभासी मंच पर 28 नवंबर 2020 को 'रायलसीमा लेखकों के विशेष संदर्भ के साथ भारतीय साहित्य निर्माता' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा अतिथियों को आमंत्रित किया। तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक और प्रख्यात तेलुगु कवि श्री के. शिवा रेड्डी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य और पुरस्कृत तेलुगु लेखक डॉ. रचापालेम चंद्रशेखर रेड्डी ने परिसंवाद में सहभागिता की तथा विद्वान विश्वम के साहित्यिक योगदान पर बात की। उन्होंने बताया कि 'आंध्र प्रभा' के संपादक विद्वान विश्वम ने तेलुगु भाषा और साहित्य के प्रसार के लिए नवसाहित्य माला प्रकाशन गृह आरंभ किया और जेल भी गए। उन्होंने एक लेखक, अनुवादक, संपादक और पत्रकार के रूप में तेलुगु साहित्य और संस्कृति में व्यापक योगदान दिया।

सुविख्यात तेलुगु लेखक और आलोचक डॉ. सी. मृणालिनी ने राल्लापल्ली अनंत कृष्ण शर्मा के लेखन पर बात की। उन्होंने बताया कि शर्मा प्रसिद्ध तेलुगु लेखक होने के साथ-साथ कर्नाटक संगीत-निर्देशक व गायक भी थे। वह तेलुगु, संस्कृत, कन्नड और प्राकृत जैसी कई भाषाओं में निपुण थे तथा उन्होंने कन्नड और तेलुगु में कविताएँ और पुस्तकें भी लिखीं। वर्ष 1972 में, उन्हें भारत के संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय संस्था संगीत नाटक अकादेमी के उच्चतम सम्मान संगीत नाटक अकादेमी फ़ेलोशिप से सम्मानित किया गया था।

प्रसिद्ध तेलुगु लेखक श्री वी.आर. रसानी ने कार्यक्रम में सहभागिता की और मधुरांतकम राजाराम के साहित्यिक प्रयासों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि राजाराम आधुनिक तेलुगु लेखकों में सर्वश्रेष्ठ थे और एक प्रख्यात कहानी लेखक भी थे, उन्हें वर्ष 1993 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा वर्ष 1991 और 1993 में कहानी हेतु कथा पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। राजाराम ने तेलुगु के प्रमुख समाचार पत्रों में कहानियाँ लिखीं। पाँच दशकों से भी अधिक समय की अवधि में उन्होंने आंध्रप्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र के निम्न-मध्य वर्ग और मध्यवर्ग के जीवन को दर्शाती कई कहानियाँ लिखीं। श्री रसानी ने पुट्टपारथी नारायणाचार्यालु के साहित्य पर भी बात की।

श्री सी.एच. लक्ष्मण चक्रवर्ती, प्रमुख तेलुगु लेखक ने कार्यक्रम में भाग लिया और तिरुमाला रामचंद्र के लेखन पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि तिरुमाला रामचंद्र एक लेखक संपादक, भाषाविद् और स्वतंत्रता सेनानी थे तथा इसके साथ ही उन्होंने तेलुगु भाषा, साहित्य और संस्कृति में भी योगदान दिया। उन्हें तेलुगु, कन्नड, तमिळ, संस्कृत और प्राकृत में एक बहुभाषी

विद्वान के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपनी तेलुगु आत्मकथा 'हांपी नुन्ची हराप्पाडाका' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त किया था।

समकालीन हिंदी-कोंकणी कविता ('एक भारत - श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत) परिसंवाद

11 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने *एक भारत-श्रेष्ठ भारत* के अंतर्गत समकालीन हिंदी-कोंकणी कविता पर 11 दिसंबर 2020 को आभासी मंच पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। मणिबेन नानावती महिला कॉलेज की प्राचार्या सुश्री राजश्री त्रिवेदी ने उन बदलावों पर बात की जो भूमंडलीकरण के संबंध में हिंदी और कोंकणी कविता में देखे जा सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य के माध्यम से ही हम वैश्विक और भारतीय विचारों को जानते-समझते हैं। प्रसिद्ध लेखक और आलोचक श्री रवींद्र कात्यायन ने अपने भाषण में हिंदी और कोंकणी कविता में विषयों की विविधता पर चर्चा की। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मडल के संयोजक डॉ. भूषण भावे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अपना भाषण हिंदी और कोंकणी कविता के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व पर केंद्रित किया। अगले सत्र में सुश्री सोनिया सिरसत ने 'समकालीन हिंदी-कोंकणी काव्य में मानवीय संवेदना', सुश्री आशा गहलोत ने 'भूमंडलीकरण और हिंदी-कोंकणी काव्य', सुश्री रूपाचारी ने 'समकालीन हिंदी-कोंकणी कविता में सामाजिक तत्त्व' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री चंद्रलेखा डिसूज़ा, पूर्व प्रमुख, कोंकणी विभाग, गोआ विश्वविद्यालय ने सत्र की अध्यक्षता की।

डॉ. ओम प्रकाश नागर, सुश्री राजश्री त्रिवेदी, श्री रवींद्र कात्यायन तथा डॉ. भूषण भावे

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित, मास्ति वेंकटेश अय्यंगार - *बडुकु मट्टु बाराह* (जीवनी) का पुस्तक विमोचन

12 दिसंबर 2020, बेंगळुरु

साहित्य अकादेमी के फ़ेलो मास्ति वेंकटेश अय्यंगार की 129वीं जन्मशती के अवसर पर श्री एस.आर. विजयशंकर द्वारा लिखित साहित्य अकादेमी के कन्नड प्रकाशन मास्ति वेंकटेश अय्यंगार—*बडुकु मट्टु बाराह* (जीवनी) का पुस्तक विमोचन 12 दिसंबर 2020 को भारतीय विद्या भवन बेंगळुरु में मास्ति वेंकटेश अय्यंगार ट्रस्ट, कोलार के सहयोग से किया गया।

कर्नाटक सरकार के कन्नड और संस्कृति विभाग की सचिव श्रीमती रश्मि महेश, आई.ए.एस. ने पुस्तक का विमोचन किया। मास्ति वेंकटेश अय्यंगार ट्रस्ट, कोलार के अध्यक्ष और सुविख्यात लेखक श्री मविनाकेरे रंगनाथन

पुस्तक विमोचन करते हुए श्रीमती रश्मि महेश आई.ए.एस. तथा अन्य

ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने अकादेमी के प्रकाशनों का विवरण दिया।

पुस्तक के लेखक श्री एस.आर. विजयशंकर ने आधुनिक कन्नड की विभिन्न शैलियों में मास्ति की 130 कृतियों पर चर्चा की। कन्नड लेखकों में वह चौथे लेखक थे जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वो मास्ति कन्नड़ाडा आस्ति अर्थात् 'मास्ति, कन्नड़ का खज़ाना' के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होंने श्रीनिवास नाम से लेखन किया और वे अपनी कहानियों के लिए जाने जाते थे। मैसूर के तत्कालीन महाराज नलवाड़ी कृष्णराजा वाडयार ने उन्हें *राजसेवासक्त* शीर्षक से नवाज़ा था। साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान - महत्तर सदस्यता भी उन्हें प्रदान किया गया और (कन्नड कहानी-संग्रह) *सन्ना कथेगळु* के लिए भी उन्हें अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था। अपने लेखन कौशल के लिए विख्यात वह एक विलक्षण लेखक थे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री माविनकेरे रंगनाथन ने ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक के प्रकाशन के लिए साहित्य अकादेमी और विशेषरूप से अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के दौरान श्री अभिनव रविकुमार, श्री लोकेश अगसनकात्ते, श्री बी.आर. लक्ष्मण राव, श्री के. सत्यनारायण तथा अन्य सुविख्यात लेखक, पुस्तक प्रकाशक और कन्नड के रचनाकार उपस्थित थे।

'कन्नड में यात्रा लेखन' पर पैनल चर्चा

16 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु द्वारा 'कन्नड में यात्रा लेखन' पर पैनल चर्चा का आयोजन 16 दिसंबर 2020 को आभासी मंच के अंतर्गत तीन महत्त्वपूर्ण वक्ताओं प्रो. जे. बालकृष्ण, डॉ. बी.टी. अनुराधा तथा श्री डी.एस. मंजूनाथ को आमंत्रित करके किया गया।

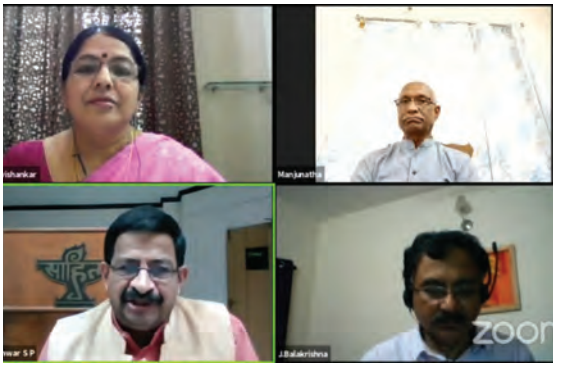

सुश्री कावना रविशंकर, श्री डी.एस. मंजूनाथ, श्री एस.पी. महालिंगेश्वर तथा प्रो. जे. बालकृष्ण

वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए, क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने कहा कि यद्यपि यात्रा लेखन भारतीय भाषाओं में 19वीं सदी में आरंभ हो गया था परंतु कन्नड में यह लेखन 20वीं सदी से ज़्यादा हुआ और वी. सीतारामैया द्वारा रचित कन्नड यात्रावृत्त 'पम्पायात्रे' ऐसी ही विलक्षण कृति है।

प्रो. बी.टी. अनुराधा ने कन्नड यात्रा विवरणों की एक जीवनीपरक रूपरेखा, विशेषकर स्त्रीवादी लेखक नेमिचंद्र के साथ, प्रस्तुत की तथा इस शैली में अन्य योगदानों का भी ज़िक्र किया और बताया कि किस प्रकार पाठक और आलोचक साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित यात्रा लेखनों पर प्रतिक्रियाएँ देते थे।

डॉ. जे. बालकृष्ण जो स्वयं एक जाने-माने यात्रावृत्त लेखक हैं, ने अपनी पॉवर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध यात्रा वृत्तांतों की प्रस्तुति दी। उन्होंने विशेष तौर पर यूरोपीय और अमेरिकी देशों के यात्रा-वृत्तांतों पर बात की, जहाँ कन्नड में महत्त्वपूर्ण सृजनात्मक कार्य किए जा रहे हैं।

श्री डी.एस. मंजूनाथ, एक तकनीक विशेषज्ञ और विज्ञान लेखक ने इंजीनियरों और तकनीक विशेषज्ञों के लेखन का विवरण दिया जिन्होंने बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करते हुए यात्रा के दौरान भारत और विदेश के अपने अनुभवों को लेखन में व्यक्त किया है। श्री मंजूनाथ का मत था कि इन यात्रा-वृत्तांतों में वैज्ञानिक और सृजनात्मक अनुभव भी मिश्रित किए गए हैं।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं में यात्रा-वृत्तांतों पर एक अंतर्विषयक अध्ययन के रूप में अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

'तमिऴ में आलोचना और सिद्धांत' पर संगोष्ठी

19 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई में 19 दिसंबर 2020 को आभासी मंच के अंतर्गत 'तमिऴ में आलोचना और सिद्धांत' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण दिया और संक्षेप में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ देते हुए उन्होंने प्रतिभागियों का संक्षिप्त परिचय दिया। तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सिर्पी बालसुब्रमण्यम ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने तमिऴ की साहित्यिक कृतियों में आलोचना की परंपरा के बारे में संक्षेप में बताया और तमिऴ साहित्य आलोचना में आधुनिक सिद्धांत आरंभ करने के लिए प्रो. एस. कारलोस के योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि स्तरीय आलोचना सदैव साहित्य के विकास में सहायक होती है और साहित्यिक आलोचना अधिक तार्किक होनी चाहिए, भावों अथवा पूर्वाग्रह की बजाय व्यक्तिपरक हो। उनके

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, प्रो. सिर्पी बालसुब्रमण्यन, प्रो. एस. विंसेंट, प्रो. एस. कारलोस, प्रो. एन. शिवसुब्रह्मण्यन, प्रो. के. पन्जंगम, श्री आर. राजा, श्री एस. षड्मुगम, श्री जमालन तथा श्री एस.पी. महालिंगेश्वर

बाद, साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. एस. कारलोस ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि आलोचना स्वयं को एक सृजनात्मक कला में परिवर्तित करती है। भरतियार और भारतीदासन के परिप्रेक्ष्य समानांतर हैं। उनका कहना था कि उनके मत भारतीय विचार की विशिष्ट स्रोत की ओर प्रतिबद्ध थे। उन्होंने आलोचना के विन्यास को समझाते हुए बताया कि विकास उस पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार दूसरे के दृष्टिकोण और विचारों को स्वीकार करते हैं। प्रो. एस. विंसेंट ने 'आलोचना और सिद्धांत - एक परिचय' पर आलेख प्रस्तुत किया और साहित्यिक सिद्धांत की अवधारणा, आधुनिक सिद्धांत और साहित्यिक आलोचना पर उसके प्रभाव पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने ध्यान दिलाया कि तमिऴ साहित्यिक आलोचना में नए सिद्धांतों के सृजन पर पश्चिमी विचारों के गंभीर प्रभाव पड़े हैं।

डॉ. के. पन्जंगम ने 'तमिऴ आलोचना की प्रवृत्तियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए औपनिवेशिक काल से आजतक तमिऴ साहित्य में हुए बदलावों पर विस्तार से चर्चा की। उनका मानना था कि मार्क्सवादी विचारधारा और पश्च-औपनिवेशिक सिद्धांतों के आगमन से साहित्यिक आलोचना में आधुनिक पुनर्जागरण का रास्ता खुला। अभिव्यक्ति के एक प्रकार के रूप में दलित और स्त्रीवादी दृष्टिकोणों ने तमिऴ साहित्यिक आलोचना की शैली और प्रवृत्तियों को व्यापक प्रसार किया। प्रो. एन. शिवसुब्रमण्यन ने 'तमिऴ आलोचना से सिद्धांत तक' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें साहित्यिक सिद्धांतों में भाषाविद् उपागम पर विचार करते हुए उन्होंने बताया कि व्यक्तिगत भावों, साहित्यिक स्वभाव और लेखक के पूर्वाग्रह को तर्कशास्त्रीय उपागम के माध्यम से अच्छी तरह समझ सकते हैं। श्री मुथय्या ने 'संवाद संबंधी सिद्धांत और साहित्य' पर आलेख प्रस्तुत करते हुए व्याख्या की कि मुखर संवादात्मक तर्कशास्त्र ने लेखन पद्धति को बदल दिया है। एक उपन्यास में

कई स्वर हो सकते हैं। संवाद संबंधी सिद्धांत इन सभी बिंदुओं को किसी एक लेखन में एकत्र करने की ओर केंद्रित हैं और एक बेहतर समझ विकसित करते हैं। *थोलकप्पियम* और *फोकॉल्ट* पर आलेख प्रस्तुत करते हुए श्री आर.राजा ने फ्रांसीसी दार्शनिक माइकल फोकॉल्ट द्वारा प्रवृत्त संभाषण की अवधारणा को दृढ़तापूर्वक प्रस्तुत किया तथा तमिळ् व्याकरण की सबसे पुरानी पुस्तक 'थोलकप्पियम' और फोकॉल्ट की *ऑर्डर ऑफ़ डिस्कोर्स* से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए। सुश्री निथा एषिलारासी ने 'लक्षण विज्ञान और साहित्य' पर आलेख प्रस्तुत किए। लक्षण विज्ञान की अवधारणा समझाते हुए उन्होंने बताया कि साहित्यिक विषयों की व्याख्या के लिए लक्षण विज्ञान की समझ ज़रूरी है। आलोचना के महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में यह साहित्यिक अवधारणाओं के वृहत्तर अर्थ को समझने की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। श्री एस. षड्मुगम ने 'विन्यासवाद के पश्चात् काव्य आलोचन' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने काव्य के विन्यासवादी सिद्धांतों को लागू करने की संभावनाओं पर विचार किया, जिसमें कृति के सुव्यवस्थित अवयवों के गहन पाठ की बजाय प्रासंगिक शैली पर ध्यान देनी की आवश्यकता है। श्री जमालन ने 'पाठ्यता के सिद्धांत' पर आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि पाठ्यता केवल लिखित कृतियों के बारे में नहीं है बल्कि इसमें विविध प्रकारों और रूपों में एक पाठ्य विषय को मूल्यांकित और विवेचित करना शामिल है। अंत में, डॉ. प्रेम ने 'सिद्धांत और सृजनात्मकता' पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्यिक सिद्धांत और सृजनात्मकता के मध्य अंतस्संबंध प्रतिष्ठापित करते हुए उन्होंने कहा कि एक अखंड, विशाल समाज में सिद्धांत निर्माण असंभव है। साहित्य, वर्तमान अवधारणाओं और सिद्धांतों की सतत अनवरत विसंरचना है। साहित्य अकादेमी के चेन्नई कार्यालय के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने कार्यक्रम का संयोजन किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

'20वीं सदी का मराठी साहित्य' पर संगोष्ठी

20 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

सुश्री अंजली मसकारेहन्स, श्री राजन गवस, श्री सदानंद मोरे, श्री आशुतोष पोद्दार, श्री प्रमोद मुंघटे, श्री एकनाथ पगार, सुश्री अरुणा दुभाषी, श्री रंगनाथ पठारे तथा श्री कृष्णा किंबहुने

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 20 दिसंबर 2020 को आभासी मंच पर *20वीं सदी का मराठी साहित्य* विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने लेखक-प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रख्यात मराठी लेखक श्री सदानंद मोरे ने संगोष्ठी में उद्घाटन भाषण दिया। अपने वक्तव्य में श्री मोरे ने बताया कि बीसवीं सदी के दौरान बदलते हुए बौद्धिक व सामाजिक दृश्यों के साथ साहित्यिक परिदृश्य भी बदल रहा है। प्रसिद्ध आलोचक श्री प्रमोद मुंघटे ने बीज वक्तव्य दिया और बताया कि औद्योगिक क्रांति, बदलती जीवन शैली और प्राथमिकताओं, नई राजनीतिक विचारधाराओं के उदय ने बीसवीं सदी के मराठी साहित्य को प्रभावित किया था। प्रख्यात लेखक श्री राजन गवस ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि शताब्दी के दौरान गद्य लेखन का उल्लेखनीय उदय और विकास हुआ है। आलेख प्रस्तुति के इस सत्र में जानेमाने आलोचक श्री नितिन रिंधे ने कथासाहित्य पर, श्री एकनाथ पगार ने काव्य पर, श्री आशुतोष पोद्दार ने नाटक पर, सुश्री अरुणा दुभाषी ने आलोचना, श्री प्रभाकर देसाई ने साहित्य

के इतिहास लेखन पर, सुश्री अंजली मसकारेहन्स ने जनजातीय साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता मराठी परामर्श मंडल के संयोजक श्री रंगनाथ पठारे ने की।

भारत भूषण अग्रवाल जन्मशताब्दी संगोष्ठी

21 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

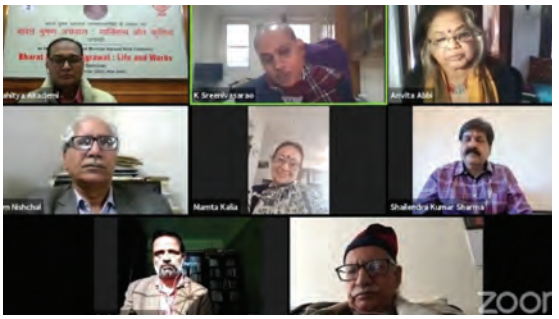

संगोष्ठी का दृश्य

भारत भूषण अग्रवाल की जन्मशताब्दी के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा 21 दिसंबर 2020 को आभासी मंच पर 'भारत भूषण अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात कवि अरुण कमल ने किया। भारत भूषण अग्रवाल की सुपुत्री अन्विता अब्बी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थीं। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रो. अरुण कमल ने कहा कि भारत भूषण अग्रवाल शहरी जीवन के प्रथम प्रबुद्ध कवि थे। उन्होंने मध्यम वर्ग की पेचीदगियों और विडंबनाओं को जोशीले शब्दों में व्यक्त किया। वे ऐसे कवियों में से थे जिन्होंने कवियों के कठिन जीवन को अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया। भारत जी ने कविता की सृजनात्मक प्रक्रिया के बारे में गहराई से सोचा और मिथकों की बड़े अद्भुत तरीके से पुनः व्याख्या की। प्रो. अन्विता अब्बी ने उन्हें अपने पूरे परिवार के सर्जक के रूप में याद किया और कहा कि उन्होंने न केवल अपना जीवन बनाया बल्कि परिवार के सभी सदस्यों को प्रेरित, प्रोत्साहित किया। पैसे से अधिक साहित्य सृजन को महत्त्व दिया और सृजन की इसी खोज में 16 नौकरियाँ बदलीं। प्रो. अन्विता अब्बी ने भारत भूषण अग्रवाल की दो अपूर्ण कृतियों पर भी बात की।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए, प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि वह एक सच्चे सर्जक थे। उनकी कविता में उठाए गए सभी प्रश्न स्वयं में क्रांतिकारी हैं। उनकी सभी कविताएँ न केवल कवियों के मस्तिष्क की बल्कि समाज की रूढ़िवादिता से भी लड़ती हैं। एक प्रकार से उनकी कविताएँ नैतिक उल्लघंन का पटाक्षेप प्रस्तुत करती हैं। इससे पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि यह संगोष्ठी कोरोना महामारी के कारण देरी से आयोजित हुई है और अब हम इसे आभासी मंच पर कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि हर तरह के दबावों और संघर्षों के बावजूद भारत भूषण अग्रवाल ने अपनी प्रतिभा को कविता के साथ-साथ नाटक, निबंध, आलोचना, उपन्यास, बाल साहित्य और अनुवाद द्वारा प्रदर्शित किया। भारत जी एक सफल सर्जक थे और बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे।

विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखिका सुश्री ममता कालिया ने की, जो भारत जी की भतीजी हैं। प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा, प्रो. सविता सिंह, डॉ. पंकज चतुर्वेदी, डॉ. ओम निश्चल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ममता कालिया ने भारत जी को अपने अंकल और बहुमुखी प्रतिभा के रूप में याद किया। उन्होंने कहा कि भारत जी हास्य नहीं बल्कि व्यंग्य के कवि थे। उन्होंने अपने सभी समकालीनों और उनकी कृतियों पर व्यंग्यात्मक गीत लिखे। अंत में, साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी), अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर पर द्विशती संगोष्ठी

22 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 22 दिसंबर 2020 को आभासी मंच पर ईश्वरचंद्र विद्यासागर पर द्विशती संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें जानेमाने बाङ्ला लेखकों और विद्वानों ने सहभागिता की।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण देते हुए विद्यासागर को एक महान बहुश्रुत कहकर पुकारा जिन्होंने सभी, विशेषकर वंचित वर्ग, के लिए ज्ञान के द्वार खोले। ज्ञान हेतु विद्यासागर की अतृप्त प्यास के बारे में बोलते हुए डॉ. राव ने विद्यासागर के साथ श्रीरामकृष्ण के संवाद का हवाला देते हुए बताया कि श्रीरामकृष्ण ने भी विद्यासागर के ज्ञान के महासागरीय विस्तार को स्वीकृत किया था। डॉ. राव ने स्त्री सशक्तीकरण पर केंद्रित उनकी अन्य सुधारात्मक गतिविधियों यथा महिला शिक्षा, विधवा विवाह और बहुविवाह का विरोध की भी चर्चा की। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने वक्ताओं का परिचय करवाया।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. सुबोध सरकार ने बताया कि विद्यासागर ने समाज के सभी क्षेत्रों, जहाँ भी बदलाव की ज़रूरत थी, में सक्रिय रूप से कार्य किया। उन्होंने लोगों के लिए बहुत किया और कष्ट भी उठाए। जहाँ सही मार्ग अपनाने का प्रश्न उठा वहाँ उनका दृष्टिकोण अटल और व्यावहारिक था। उन्होंने बंगाली पारंपरिक गद्य में सुधार किया। डॉ. सरकार ने उनके कहानी-संग्रह 'आख्यानमंजरी' का भी संदर्भ दिया। प्रो. बासु ने उनके लेखन से उदाहरण स्वरूप 'सितार बनबास' का हवाला दिया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रो. रंजन चक्रवर्ती ने विद्यासागर की जीवनियों की कई कमियों पर चर्चा की। इनमें से कई जीवनियाँ उनके जीवनकाल में लिखी गई थीं। यद्यपि वो सभी प्रामाणिक नहीं थीं, फिर भी उनमें से कुछ में विद्यासागर के दुर्लभ गुणों का वर्णन किया गया था। समाज के साथ-साथ शिक्षा में आधुनिकता

संगोष्ठी का दृश्य

लाने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया। जब भी उन्होंने व्यक्तिगत लाभ के बगैर, सुधारात्मक कार्य करने चाहे तो तत्कालीन बंगाली प्रबुद्ध वर्ग और उपनिवेश अधिकारियों ने कई तरह से उनका फ़ायदा उठाया। बहुतों के लिए वह एक विप्लवी नायक थे। प्रो. चक्रवर्ती ने बताया कि रवींद्रनाथ, अमलेश त्रिपाठी, अशोक सेन और कई अन्य ने उनके बारे में लिखा है। विद्यासागर दक्षिण एशिया में आधुनिकता के प्रतिनिधि थे।

सुगता बोस ने विद्यासागर के विभिन्न गुणों का बखान करते हुए बताया कि उन्होंने समाज के हर उस क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी जहाँ सुधार की आवश्यकता थी। उनके जीवन के अध्ययन को प्रतिष्ठा का अध्ययन मान सकते हैं। उन्होंने ऐसे कई कार्यों का ज़िक्र किया जिसमें विद्यासागर के सुसंस्कृत व्यवहार ने भावी पीढ़ियों हेतु उदाहरण प्रस्तुत किए। बोस ने टैगोर्स इवेल्यूएशन ऑफ़ विद्यासागर से कई उदाहरण दिए। तत्कालीन बंगाल में महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में वह महान सुधारक थे।

विचार सत्र में, प्रो. शिबाजी प्रतिम बसु ने विद्यासागर के संपूर्ण कृतित्व को प्रकाशित करने की योजना के बारे में बताया। विद्यासागर ने समाज में दो विधियों - शास्त्रों की नई व्याख्या और शैक्षणिक सुधारों - के माध्यम से परिवर्तन लाने का प्रयास किया। उन्होंने जीवन शैली में भारतीय परंपरा और पश्चिमी तर्क को एक साथ लाने का प्रयास करते हुए मध्यम मार्ग अपनाया। प्रोफ़ेसर बसु ने समकालीन शिक्षा व्यवस्था के बारे में भी बात की कि किस प्रकार विद्यासागर ने शिक्षण व्यवस्था और पाठ्य पुस्तकों के नए मॉडल को आरंभ करके नए सुधार लाने

का प्रयास किया। उनका लेखन अक्सर बाङ्ला गद्य के आधुनिकीकरण हेतु लक्षित था। विद्यासागर द्वारा स्थापित कई स्कूल व शिक्षा व्यवस्था, बंगाल में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की नींव को समझने में काफ़ी महत्त्वपूर्ण हैं।

बाङ्ला साहित्य को समृद्ध करने के तरीकों के संबंध में विद्यासागर के दृष्टिकोण पर प्रो. चिन्मय गुहा ने बात की। उन्होंने विद्यासागर के लेखन से कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए। विद्यासागर ने साहित्यिक मूल्यों को समझने के लिए अंग्रेज़ी साहित्य पढ़ने की महत्ता पर बल दिया। बंगाल में पुनर्जागरण का यह सार था। बाङ्ला भाषा के निर्माण में उनके अनुवाद उनके प्रयासों का हिस्सा रहे। प्रो. गुहा ने विद्यासागर के पत्रों का भी संदर्भ दिया तथा साथ ही कई समकालीन बाङ्ला अनुवादकों का भी हवाला दिया। उन्होंने विद्यासागर की अनुवाद संबंधी गतिविधियों के पीछे सक्रिय रहे उद्देश्यों पर भी चर्चा की। विद्यासागर बाङ्ला विराम चिह्न विधान के प्रयोग में भी सुधार लेकर आए। उन्होंने विद्यासागर के लेखन में विषयवस्तु और शैलियों के बारे में भी विस्तार से बताया। उनके मामले में लेखन और सुधार साथ-साथ चलते थे और अंतस्संबंधित थे। उन्होंने विद्यासागर के अनुवादों की तकनीकों की व्याख्या करने हेतु उनके अनुवादों में से विषयों और प्रस्तावनाओं के उदाहरण दिए। बाङ्ला गद्य में विभिन्न शैलियों के प्रयोग में उनका जवाब नहीं था। प्रो. अमृत सूदन भट्टाचार्य ने उनके पुत्र द्वारा विद्यासागर के वर्णपरिचय में किए गए बदलावों और इसकी प्रामाणिकता पर भ्रम के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने वर्णपरिचय के दूसरे भाग की कुछ ग़लतियों पर ध्यानाकर्षित किया। विद्यासागर के गुणों पर चर्चा करते हुए उन्होंने टैगोर, बंकिमचंद्र चटर्जी और विद्यासागर का संदर्भ दिया। उन्होंने विद्यासागर के जीवनकाल में टैगोर के मौन का भी ज़िक्र किया। वास्तव में उनकी मुलाक़ात केवल दो बार ही हुई थी। दूसरी ओर रवींद्रनाथ के पिताजी देवेंद्रनाथ, विद्यासागर को बहुत पसंद करते थे। प्रो. भट्टाचार्य ने टैगोर और विद्यासागर के रिश्तों की शीतलता को ज़ाहिर करने का भी प्रयास किया। अंत में, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'पश्च-आधुनिक गुजराती साहित्य' विषय पर संगोष्ठी

23 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

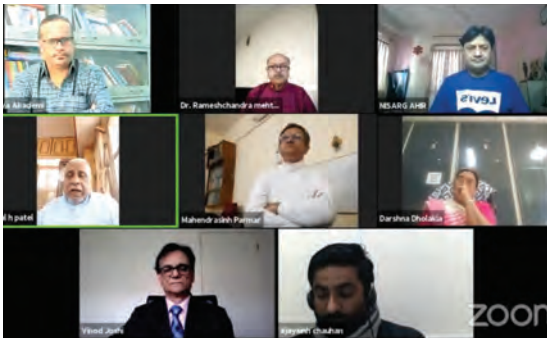

संगोष्ठी का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच पर *पश्च-आधुनिक गुजराती साहित्य* विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने सभी लेखकों, आलोचकों, प्रतिभागियों का स्वागत किया। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. विनोद जोशी ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए कहा कि एक आम मान्यता है कि गुजराती में पश्च-आधुनिक साहित्य वह है जो 1985 के बाद आया। परंतु, वास्तव में एक समय में कई समय शामिल होते हैं इसलिए समय कभी एकाकी नहीं होता। उन्होंने पश्च-आधुनिक गुजराती साहित्य के कुछ विशिष्ट लक्षणों और बदलते विषयों पर चर्चा की। प्रख्यात आलोचक श्री मणिलाल पटेल ने संगोष्ठी में आरंभिक भाषण दिया। उन्होंने बताया कि समय के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य विषयों के साथ अपने रूपों, विन्यास और प्राथमिकता बदल लेता है। 1985 के बाद निर्गत कई साहित्यिक कृतियों का उदाहरण देते हुए श्री पटेल ने गुजराती में पश्च-आधुनिकवाद पर सविस्तार बताया और यह भी कि किस प्रकार यह कभी-कभी साहित्यिक परंपराओं पर प्रतिक्रिया भी करता है और उन्हें ग्रहण भी करता है। आलेख प्रस्तुति सत्र में श्री अजय सिंह चौहान ने पश्च-आधुनिक गुजराती कविता पर, श्री निसर्ग अहीन ने कहानी पर, सुश्री दर्शना ढोलकिया ने

निबंधों पर, श्री रमेश मेहता ने उपन्यासों पर, सुश्री मीनल देवेन ने आत्मकथा पर, श्री महेंद्र सिंह परमार ने नाटक पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रीमती लिमिशा मेहता ने साहित्यिक पत्रकारिता पर आधारित श्री हसित मेहता का आलेख पढ़ा क्योंकि वह वर्चुअली कार्यक्रम में भाग नहीं ले पाए थे। अंत में, साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'संस्कृत कवि के रूप में हरिराम आचार्य का मूल्यांकन' विषय पर परिसंवाद

24 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 24 दिसंबर 2020 को 'संस्कृत कवि के रूप में हरिराम आचार्य का मूल्यांकन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। अपने स्वागत भाषण में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रो. हरिराम आचार्य की संपूर्ण साहित्यिक यात्रा पर प्रकाश डाला और उनकी प्रमुख कृतियों *मधुछंद* और *पूर्वशाकुंतलम* की व्याख्या करते हुए संस्कृत साहित्य में उनके योगदान का भी मूल्यांकन किया। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में कहा कि काव्यात्मक निरूपण में प्रकृति का समावेश और शैली में नवोन्मेष प्रो. हरिराम आचार्य की कविता की विलक्षण विशेषताएँ हैं। साहित्य

परिसंवाद का दृश्य

अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. रमाकांत पांडेय ने अपने बीज वक्तव्य में बताया कि प्रो. हरिराम आचार्य ने मेरे जैसे संस्कृत के युवा शोधार्थियों को संस्कृत काव्य लेखन की ओर आकर्षित किया। हिंदी और राजस्थानी भाषा में भी उनका साहित्यिक योगदान है। ऑनलाइन परिसंवाद की अध्यक्षता संस्कृत के विशिष्ट विद्वान प्रो. दयानंद भार्गव ने की। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए न केवल उन्होंने प्रो. हरिराम आचार्य के साहित्यिक विषय की व्याख्या की बल्कि पूरे विश्व में संस्कृति और परंपरा के उत्थान की संस्कृत भाषा की भूमिका पर भी बल दिया।

प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता की और प्रो. लक्ष्मी शर्मा ने 'प्रो. हरिराम आचार्य - एक मित्रवत् और विद्वान प्रतिनिधित्व' पर, डॉ. सुनीता शर्मा ने 'प्रो. हरिराम आचार्य - पूर्व शाकुंतलम', डॉ. सुषमा सिंघवी ने 'प्रो. हरिराम आचार्य - बहुमुखी विद्वता की निधि' पर तथा प्रो. हरिराम आचार्य की पुत्री डॉ. भावना आचार्य ने 'डॉ. हरिराम आचार्य - एक सम्मानित शिक्षक और सराहनीय कवि' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद के अंत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

संतोख सिंह धीर जन्मशतवार्षिकी

26 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात पंजाबी लेखक संतोख सिंह धीर की शतवार्षिकी पर पंजाबी परामर्श मंडल द्वारा एक प्रत्यक्ष संगोष्ठी की रूपरेखा तैयार की गई थी परंतु कोविड-19 के कारण कई कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से आयोजित नहीं किया जा सका, परंतु सभी बाधाओं के बावजूद साहित्य अकादेमी ने इस कार्यक्रम का वर्चुअली आयोजन संभव किया। संतोख सिंह धीर पर संगोष्ठी का आयोजन आभासी मंच पर 26 दिसंबर 2020 को किया गया। आरंभ में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. सुखदेव सिंह सिरसा ने उद्घाटन भाषण दिया और

श्री अनुपम तिवारी, श्री संजीवन सिंह, श्री सुरजीत सिंह भट्टी, श्री रंजीवन सिंह, श्री सरबजीत सिंह, डॉ. वनीता, सुश्री धनवंत कौर, डॉ. सुखदेव सिंह सिरसा एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

प्रसिद्ध पंजाबी विद्वान श्री सुरजीत सिंह भट्टी ने बीज वक्तव्य दिया। पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वनीता ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रसिद्ध लेखक संतोख सिंह धीर की प्रतिभा की प्रशंसा की। प्रथम सत्र में दस लेखकों ने आलेख प्रस्तुत किए तथा विभिन्न शैलियों में धीर के बहुआयामी पक्षों को प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता धनवंत कौर ने की तथा एक सार्थक सत्र के अंत में पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य गोवर्धन गब्बी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'ओड़िआ नाटकारे नूतनतारा संधान' विषयक साहित्य मंच

29 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा 29 सितंबर 2020 को आभासी मंच पर 'ओड़िआ नाटकारे नूतनतारा संधान' विषयक साहित्य मंच का आयोजन प्रसिद्ध ओड़िआ विद्वानों के साथ किया गया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण देते हुए श्रोताओं से वक्ताओं का परिचय करवाया। डॉ. साहू ने ओड़िआ नाटक के नए आयामों और इस युग में आधुनिक ओड़िआ नाटककारों के विशिष्ट लक्षणों पर चर्चा की। ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. बिजयानंद सिंह ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए आधुनिक ओड़िआ नाटक

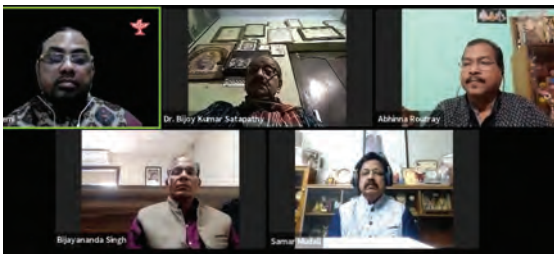

डॉ. मिहिर कुमार साहू, प्रो. विजय कुमार सत्पथी, श्री अभिन्न राउतराय, डॉ. बिजयानंद सिंह तथा श्री समर मुदाली

के पूर्वजों और उनके द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट साहित्यिक तकनीकों का संदर्भ दिया। श्री अभिन्न राउतराय, प्रो. विजय कुमार सत्पथी और श्री समर मुदाली कार्यक्रम के प्रतिभागी थे। उन्होंने कई समकालीन नाटककारों के लेखन पर भी चर्चा की। श्री राउतराय ने नई समकालीन शैली में पुराने नाटकों की प्रस्तुति पर बात की। उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में श्रोताओं की भूमिका भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने लोक नाटकों पर भी बात की। प्रो. सत्पथी ने 'नए ओडिआ नाटक में यथार्थवाद' के विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि कई आधुनिक नाटककार जड़ों की खोज में तल्लीन हैं। उन्होंने ओड़िआ नाटक के विभिन्न चरणों और इन चरणों में नए तत्त्वों के उदय पर विचार व्यक्त किए। श्री मुदाली ने अभिनीत नाटकों के कई तथ्यों और बाधाओं की चर्चा की। साथ ही उन्होंने स्टेज क्राफ्ट और दूसरी नाटकीय संस्थाओं तथा इन संस्थाओं के साथ अपने लंबे संबंधों पर बात की।

अंत में, डॉ. मिहिर कुमार साहू ने सभी वक्ताओं और वेबलाइन मंच के दर्शकों को धन्यवाद दिया।

'स्वामी विवेकानंद : 21वीं सदी हेतु एक वैश्विक स्वर' पर परिसंवाद

12 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

महान दार्शनिक और आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद की 158वीं जन्मशती के उत्सव-स्वरूप साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 12 जनवरी 2021 को प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ 'स्वामी विवेकानंद : 21वीं सदी हेतु

परिसंवाद का दृश्य

एक वैश्विक स्वर' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। विनायक बंद्योपाध्याय, पूर्वा सेनगुप्ता, संजुक्ता दासगुप्ता, सिराजुल इस्लाम और हर्षा दत्ता परिसंवाद के प्रतिभागी थे।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि स्वामी विवेकानंद एक महान संत, दार्शनिक और भक्तिपरक मानवतावाद के एक विरल विचारक थे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने हमें आगाह किया था कि यदि हम अपना कल्याण चाहते हैं तो हमें आध्यात्मिक शक्ति को एकत्रित कर एक साथ खड़े होना होगा। सत्य, मानव जीवन का सबसे अच्छा पहलू है। स्वामी जी ने महिला सशक्तिकरण पर बात की ताकि महिलाएँ अपनी समस्याएँ स्वयं सुलझाने में समक्ष हो सकें। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रों के मध्य सहयोग ज़रूरी है।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम के प्रतिभागियों का परिचय करवाया।

साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि विवेकानंद की आवाज़, 1893 में शिकागो की सम्मोहित करने वाली आवाज़ के मुकाबले अब ज़्यादा सार्थक, गंभीर और संवेदनात्मक हो गई है। स्वामी जी ने कहा था कि किसी एक व्यक्ति को अपना विश्वास परिवर्तित किए बग़ैर दूसरे को आत्मसात् करना चाहिए क्योंकि अंतिम विश्वास तो मनुष्य ही है। स्वामी जी के अनुसार राजनीतिक सत्ता या सामरिक श्रेष्ठता भारत का लक्ष्य नहीं है बल्कि हमें अन्य सभी धर्मों और आध्यात्मिक ऊर्जा को आत्मसात करते हुए उसे एक उदात्त जीवंत सत्ता में परिवर्तित करना है।

डॉ. सोनाली चक्रवर्ती बनर्जी ने कहा कि अपने जीवन और समय के संबंध में स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण वैश्विक था। उन्होंने समझाने का प्रयास किया कि स्वामी जी ने किस प्रकार विज्ञान को अध्यात्म, प्राचीन विरासत को आधुनिक प्रगति और तकनीक को अध्यात्मविज्ञान के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया। स्वामी जी अपनी मातृभूमि से प्रेम करते थे इसलिए एक वैरागी होने के बाद भी वो एक देशप्रेमी थे। वो विश्व को अखंड इकाई के रूप में देखते थे। स्वामी जी एक वैश्विक मानवतावादी बन गए जिनका महत्त्व दिन प्रति दिन बढ़ रहा है।

स्वामी आत्मप्रियानंद ने महात्मा गाँधी के प्रसिद्ध शब्दों कि, 'प्रकृति के पास इंसान की आवश्यकता के लिए पर्याप्त है, परंतु इंसान के लालच के लिए पर्याप्त नहीं है', को फोकस करते हुए रोमां रोलां, स्वामी विवेकानंद और श्री रामकृष्ण के जीवनी लेखक के बारे में बताया, जिन्होंने स्वामी विवेकानंद के 'साम्य और संश्लेषण सिद्धांत' के बारे में बताया था। स्वामी जी का विश्वास था कि विसंगतियाँ केवल मानव मस्तिष्क में होती हैं, प्रकृति में नहीं। उन्होंने पौधों द्वारा कार्बनडाई ऑक्साइड का अंतःश्वसन में प्रयोग और मनुष्यों द्वारा ऑक्सीजन के अंतःश्वसन में उपयोग किए जाने के माध्यम से एक सुंदर उदाहरण दिया। स्वामी जी के दर्शन में प्रकृति एक अविभाज्य समग्र है। स्वामी विवेकानंद की धारणा की व्याख्या हेतु उन्होंने वेदांत और भौतिकी का संदर्भ दिया। उन्होंने यह भी कहा कि यदि अध्यात्म आम आदमी की समस्याएँ नहीं सुलझा सकता तो इसे पढ़ाने का फ़ायदा नहीं है।

प्रो. साधन चक्रवर्ती ने इस परिसंवाद का हिस्सा बनने का अवसर मिलने पर आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी का मानना था कि संयोजकता मानवता की मूलभूत आवश्यकता है और यह हमें निरर्थक आकस्मिकताओं से ऊपर उठने में मदद करती हैं। प्रो. साधन का मत था कि स्वामी जी को सच्ची

श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम व्याख्यान देने की बजाय काम अधिक करें। उन्होंने स्वामी जी के दर्शन का भी उल्लेख किया कि पूरा ब्रह्मांड एक है और हम केवल उसका एक हिस्सा हैं।

विचार सत्र में डॉ. संजुक्ता दासगुप्ता, संयोजक, अंग्रेज़ी परामर्श मंडल ने ब्रह्माण्डीय अध्यात्मवाद के बारे में बताया। उन्होंने कैलिफोर्निया में स्वामी जी के व्याख्यान 'भारत की महिलाएँ' पर चर्चा की और कलकत्ता विश्वविद्यालय में महिलाओं के दाख़िले में स्वामी विवेकानंद द्वारा की गई सहायता के बारे में भी बताया। डॉ. संयुक्ता ने स्वामी जी की कविता 'जीवंत ईश्वर' पढ़ी जिसमें वह सार्वभौमिक मानवतावाद की बात करते हैं। उन्होंने सिस्टर निवेदिता द्वारा स्वामी जी को लिखे गए कुछ पत्रों पर भी चर्चा की।

श्री विनायक बंद्योपाध्याय ने कहा कि उनके लिए स्वामी विवेकानंद का जीवन एक कविता की तरह है। उन्होंने स्वामी जी और रॉबर्ट साउथवैल की कविताओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि स्वामी जी अपने समय में रूढ़िगत विचारों के विरोधी थे। स्वामी जी माइकल मधुसूदन दत्त, विशेषकर 'मेघनादवध काव्य' को काफ़ी पसंद करते थे। श्री बंद्योपाध्याय को स्वामी जी और जीसस क्राइस्ट के मध्य समानता प्रतीत हुई है। उन्हें स्वामी जी की कविता 'काली द मदर' में विलियम ब्लैक की छाया प्रतीत हुई। स्वामी जी बाङ्ला भाषा को विश्व में दूसरे ही स्तर पर ले गए और इस भाषा में नए सृजन के रास्ते खोले। स्वामी जी का मानना था कि महिलाएँ समाज का अभिन्न अंग हैं।

मोहम्मद सिराजुल इस्लाम ने स्वामी जी के विश्वास कि सभी धर्म सत्य हैं, पर चर्चा की। उन्होंने वेदों, उपनिषदों और गीता से अंश पढ़े। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के लेखन में धर्म की उदारता मिलती है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने रोमां रोलां से कहा था कि यदि स्वामी विवेकानंद को जानना चाहते हो तो भारत के बारे में जानो। स्वामी जी का दृष्टिकोण धर्मनिरपेक्ष था। श्रीमती पूर्वा सेनगुप्ता ने महिलाओं के बारे में स्वामी जी के विचारों पर चर्चा की। स्वामी जी मानते थे कि महिलाओं के पास एक विशेष सामाजिक शक्ति होती है। पूर्वा जी ने तत्कालीन समाज में महिलाओं की भूमिका और समय के साथ विकास पर बात की।

श्री हर्षा दत्ता ने स्वामी जी के ऐसे पत्रों और पुस्तकों की चर्चा की जिनसे हमें उनके जीवन के बारे में पता चल सकता है। स्वामी जी ने कहा था कि मनुष्य संसार के किसी भी प्रकार के धन से अधिक महत्त्वपूर्ण है। स्वामी जी की दृष्टि में सभी मनुष्य समान थे। स्वामी जी ने लोगों की आत्मा को जगाया।

क्षेत्रीय सचिव, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अध्यक्ष तथा प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए सत्र का समापन किया।

'विगत दशक के दौरान सिंधी में कथेतर' पर परिसंवाद

15 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच पर 15 जनवरी 2021 को 'विगत दशक के दौरान सिंधी में कथेतर' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया। आरंभ में साहित्य अकादेमी, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने लेखकों-प्रतिभागियों का स्वागत किया। बीज-भाषण में प्रख्यात सिंधी कवि और आलोचक डॉ. मोहन गेहाणी ने बताया कि सिंधी में यात्रा वृत्तांत और संस्मरण उत्कृष्ट हैं। ऐसी कृतियों में विभाजन के दर्द और तकलीफ़ को गहरी संवेदना

परिसंवाद का दृश्य

के साथ व्यक्त किया गया है। अध्यक्ष के रूप में डॉ. कन्हैयालाल लेखवाणी ने सिंधी में आलोचना पर अपने विचार व्यक्त किए। अगले सत्र में डॉ. हासो दद्लाणी ने निबंध पर, श्री मुकेश तिलोकाणी ने आलोचना पर, डॉ. संध्या कुंदनाणी ने शोध पर तथा डॉ. हुंदराज भवाणी ने विनोदपूर्ण साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री जयराम रूपाणी ने सत्र की अध्यक्षता की।

फणीश्वरनाथ रेणु की जन्मशती पर संगोष्ठी

18 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात हिंदी लेखक फणीश्वरनाथ रेणु की जन्मशती पर आभासी मंच पर संगोष्ठी का आयोजन 18 जनवरी 2021 को किया। उद्घाटन भाषण साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य, कवि तथा आलोचक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया। प्रख्यात आलोचक गोपेश्वर सिंह ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने की तथा साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया।

उद्घाटन भाषण में साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि रेणु हिंदी के दुर्लभ और विलक्षण रचयिता थे। अन्य भारतीय भाषाओं में ऐसे बहुत कम लेखक है। प्रेमचंद और जैनेंद्र के बाद वह हिंदी कथासाहित्य को नई प्रवृत्ति देने वाले लेखक थे। उन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात् प्रथम दशक की सरकारी

संगोष्ठी का दृश्य

योजनाओं के बारे में लिखा था। रेणु के साहित्य में राग तत्त्व विलक्षण है। वे शरतचंद्र और रवींद्रनाथ ठाकुर से प्रभावित थे। अपने बीज वक्तव्य में प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि रेणु जी सत्य के प्रति प्रतिबद्ध थे और उसके लिए उन्होंने अपनों की भी आलोचना की। प्रेमचंद के बाद, उनके अलावा उतने कौशल से कोई भी कहानी का कथ्य नहीं बदल सका। एक पिछड़े वर्ग से होने के बावजूद भी उन्होंने अगड़ों-पिछड़ों की राजनीति के बारे में लिखा।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि जहाँ प्रेमचंद जी का गाँव उन्नत था वहीं रेणु जी का गाँव पिछड़ा हुआ था इसलिए उनमें बड़ा अंतर था। रेणु ने प्रेमचंद के गाँव से संबंधित वास्तविकता को न केवल एक नया दृष्टिकोण दिया बल्कि संपूर्णता भी दी। उन्होंने पूरे महत्त्व के साथ और निपुणता से मानव मस्तिष्क को अभिव्यक्ति दी। सही मायनों में रेणु का साहित्य बदलाव की अभिलाषा का प्रतीक है।

संगोष्ठी के आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि फणीश्वरनाथ रेणु को 'स्वतंत्रता के बाद का प्रेमचंद' कहा जा सकता है। उनका लेखन प्रभुत्व के विरोध में था जो वक़्त की माँग भी थी। सभी का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि यदि कोरोना महामारी न हुई होती तो संगोष्ठी का आयोजन बड़े पैमाने पर रेणु जी के गृहनगर अथवा आस-पास के क्षेत्र में किया जाता।

विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक डॉ. रेवती रमण ने की तथा इस सत्र में डॉ. तरुण कुमार, डॉ. देवशंकर नवीन, डॉ. अरुण होता, डॉ. कमलेश वर्मा, डॉ. रश्मि रावत तथा डॉ. मीना बुद्धिराजा ने आलेख प्रस्तुत किए।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. रेवती रमण ने कहा कि रेणु एक महान अन्वेषक थे। अपनी कहानियों और उपन्यासों के कलाकारों के लिए उन्होंने जो सम्मान दिखाया है वह बताता है कि कला उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी। भाषा के आधार पर रेणु पर

चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में रेणु एक कालातीत लेखक थे।

कार्यक्रम का संचालन श्री अनुपम तिवारी, संपादक (हिंदी) द्वारा किया गया।

'डोगरी साहित्य में मनुष्यत्व तथा विश्वबंधुत्व' पर संगोष्ठी

22 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 22 जनवरी 2021 को 'डोगरी साहित्य में मनुष्यत्व तथा विश्वबंधुत्व' पर संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि डोगरी साहित्य बहुत समृद्ध है क्योंकि लेखकों ने साहित्य के हर क्षेत्र में गहन योगदान दिया है। उनके लिए अपनी मातृभाषा और परंपरा का सम्मान सराहनीय है। डोगरी में ऐसे साहित्य का सृजन हुआ है जिसे किसी भी भाषा में श्रेष्ठ माना जा सकता है। आरंभिक वक्तव्य देते हुए डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री दर्शन दर्शी ने कहा कि उक्त संगोष्ठी पिछले वर्ष मार्च में आयोजित की जानी थी परंतु कोविड-19 महामारी के कारण इसका आयोजन न हो सका और अब यह वर्चुअली आयोजित की जा रही है। विषय पर विस्तार से बोलते हुए उन्होंने कहा कि वास्तव में यह एक विचारोत्तेजक विषय है जिस पर सफल लेखकों द्वारा शोध किया जाना चाहिए और यह खुशी की बात है कि साहित्य अकादेमी ने इस कार्य के लिए सही प्रतिभाओं का चयन किया है। जाने-माने डोगरी लेखक डॉ. ज्ञान सिंह ने मनुष्यत्व और विश्वबंधुत्व के संबंध में डोगरी साहित्य में निविष्टि का पूरा ब्यौरा दिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध डोगरी लेखक पद्मश्री जतिंदर उधमपुरी ने की। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि डोगरी लेखकों को ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद, युद्ध के ख़तरों जैसे वैश्विक मुद्दों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

संगोष्ठी दो सत्रों में विभाजित थी। प्रथम सत्र 20वीं और 21वीं सदी में डोगरी कहानी और नाटक में मनुष्यत्व और विश्वबंधुत्व पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक मोहन सिंह ने की तथा श्री जगदीप दुबे, श्री राज राही, डॉ. सुधीर महाजन और डॉ. अशोक कुमार खजूरिया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 20वीं और 21वीं सदी में डोगरी काव्य साहित्य और उपन्यास में मनुष्यत्व और विश्वबंधुत्व पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक श्री शिवदेव सुशील ने की तथा श्री विजय वर्मा, श्री राजिंदर रांझा, श्री तरसेम रैणा और सुश्री हिना चौधरी ने अपने आलेख पढ़े। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संगोष्ठी का दृश्य

भैरव प्रसाद गुप्त पर संगोष्ठी

23 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा 23 जनवरी 2021 को 'भैरव प्रसाद गुप्त का जीवन और कृतित्व' विषय पर आभासी मंच पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रख्यात आलोचक और कवि तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. राजेंद्र कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि भैरव प्रसाद गुप्त मानते थे कि लेखक का हर शब्द एक

संगोष्ठी का दृश्य

ध्वजवाहक की तरह होना चाहिए। उनके उपन्यासों ने स्वतंत्रता के पश्चात् किसान संघर्ष हेतु माहौल तैयार किया। हमारे समक्ष उनका सर्वाधिक विस्मयकारी रूप एक साहित्यिक संपादक के रूप में सामने आया। उन्होंने प्रेमचंद को अपना आदर्श मानते हुए नए कथा लेखकों और आलोचकों की एक पीढ़ी निर्मित की। उनकी परिवर्तनकारी भूमिका के बग़ैर नई कहानी का इतिहास अधूरा है।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रसिद्ध आलोचक डॉ. हरिमोहन शर्मा ने कहा कि हम अक्सर भैरव प्रसाद को एक आयोजक और संपादक के रूप में देखते हैं जबकि वह एक प्रतिबद्ध लेखक भी थे। उन्होंने नई कहानी को एक केंद्रीय विधा की तरह मशहूर किया। उनकी कहानी के चरित्र निष्ठावान हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रख्यात कहानी लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहा कि वह सही मायनों में एक प्रतिबद्ध लेखक थे। उन्होंने अपनी कृतियों में सदैव सत्ता के विरुद्ध शोषित और विद्रोही को प्रस्तुत किया। उनकी दूरदर्शिता व्यापक थी और उसे समझने के लिए हमें भी एक बेहतर दृष्टि की ज़रूरत है। उनके उपन्यासों में केवल गाँव के किसानों का संघर्ष ही नहीं बल्कि श्रमिकों का संघर्ष व विभिन्न समुदायों की महिलाओं की आवाज़ भी मुखर है। संगोष्ठी के आरंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भैरव प्रसाद गुप्त का संक्षिप्त परिचय दिया।

विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक ज्योतिष जोशी ने की तथा डॉ. पल्लव, डॉ. वैभव सिंह, डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सूर्यनारायणन, डॉ. मनोज कुमार सिंह और डॉ. विशाल श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. ज्योतिष जोशी ने कहा कि हिंदी आलोचना का यह एक दुखद पक्ष है जिसमें प्रसिद्ध लेखकों को सार्थक रूप से नहीं आंका जाता। भैरव प्रसाद गुप्त के साथ भी यही हुआ। अनुपम तिवारी, संपादक (हिंदी) ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

मेरे झरोखे से (मलयाळम्) (आत्मारमण ने स्वर्गीय अक्कितम अच्युतन नंबूदिरी पर बात की)

29 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने आभासी मंच पर 29 जनवरी 2021 को जाने-माने मलयाळम् आलोचक एवं लेखक श्री आत्मारमण के साथ *मेरे झरोखे से* कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा प्रतिभागी मलयाळम् लेखक और आलोचक को आमंत्रित किया।

श्री आत्मारमण ने साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता मूर्धन्य मलयाळम् कवि और लेखक स्वर्गीय अक्कितम अच्युतन नंबूदिरी के जीवन और कृतित्व पर बात की।

अक्कितम का जन्म 18 मार्च 1926 को कुमारनल्लूर में हुआ और 15 अक्तूबर 2020 को उनका निधन हुआ। युवा पीढ़ी को प्रेरित करने वाले महान कवि और समाज सेवक को पद्मश्री, इषुथाचन पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार जैसे ही कई सम्मान प्रदान किए गए।

एक संक्षिप्त जीवन-वृत्त बताने के बाद श्री आत्मारमण (भास्करन कृष्ण कुमार) ने अक्कितम के साथ चार दशकों की व्यक्तिगत पहचान पर बात की। उन्होंने कहा कि मैं अक्कितम का शिष्य हूँ। *बालीदर्शन* और अक्कीथम के अन्य काव्य संग्रह केरल की सांस्कृतिक विशिष्टताओं के प्रतीक हैं। उनकी कविताओं में उनके गृहनगर कुमारनल्लूर - मंदिर और उसके आस-पास के सभी लोगों की झलक है। यू. गोपाल पिल्लै ने उनकी आरंभिक कविताएँ प्रकाशित कीं और प्रोत्साहित भी

इस अवसर पर बोलते हुए श्री आत्मारमण

किया। कई बुज़ुर्गों ने भी उनके काव्य को प्रोत्साहित किया जिसे अक्कितम ने सदैव याद रखा।

पशु मनुष्यन (काऊ एंड मैन) अक्कितम की महत्त्वपूर्ण कविताओं में से एक है। उसके बाद *बालीदर्शन, ईरूपाथम नूथानदिंते इतिहास* जैसे महाकाव्यों ने उनको महाकवि बनाया।

कवि इदासेरी, एन.वी. कृष्ण वारियर, कथाकार कुट्टीकृष्णा मरार, अरूब और उनके सभी समकालीन, आरंभिक सृजनशील वर्षों में उनके निकट साथी रहे। अक्कितम की इषुथाचन को समर्पित कविता 'विद्यारम्बानी' अद्‌भुत है। 1950 के दशक के आरंभिक वर्षों में उनकी कृत्तियों की ओर सबका ध्यान गया और यह सिलसिला 20वीं सदी के उनके महाकाव्य तक चलता रहा। आत्मारमण ने अक्कितम को भारतीय साहित्य में दुर्लभ समग्रता के कवि के रूप में याद किया। उनकी कविताएँ अथाह करुणा, भारतीय दार्शनिक और नैतिक मूल्यों की छाप सहित आधुनिकता व परंपरा के मध्य सेतु का काम करती हैं तथा तेज़ी से बदलते समाज में मानवीय भावनाओं पर शोध करती हैं।

'सिनेमा में उपन्यास' पर परिसंवाद

1 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के चेन्नई स्थित उप-कार्यालय ने आभासी मंच पर 1 फ़रवरी 2021 को 'सिनेमा में उपन्यास' पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य सिनेमा को प्रभावित करता है और इसके भावनात्मक प्रभाव से नए और फलदायक परिणाम उत्पन्न होते हैं। उन्होंने कुछ अच्छे उपन्यासों का हवाला दिया जिन पर सफल फ़िल्में बनाई गई हैं और परिसंवाद की सफलता हेतु शुभकामनाएँ दीं। तमिळ् परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रमण्यम ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि तमिळ् साहित्य ने कई क्षेत्रों में सिनेमा को प्रभावित किया और आज के स्तर तक लाने में भी इसकी भूमिका है।

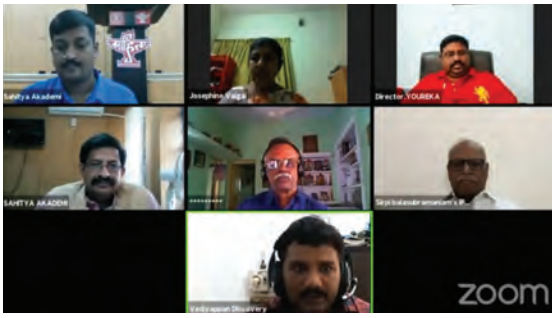

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, डॉ. वेगई सेल्वी, श्री यूरेखा, श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, श्री अकिलनकाननं, प्रो. सिर्पी बालसुब्रमण्यम तथा श्री एम. वेदियप्पन

वर्ष 1935 में वडुवूर दुरैस्वामी अयंगार के उपन्यास 'मेनका' पर एक फ़िल्म बनाई गई थी। उसी तरह कल्कि कृष्णमूर्ति का *पारथीबन कनावू, लक्ष्मी,* त्रिपुर सुंदरी कृत *कंचनाईन कनावू,* नामक्कल रामलिंगम पिल्लै कृत *मलाईक्कालन,* अकीलन कृत *पावै विलाकू* और *वाझ्वू इंगे?* ऐसे प्रसिद्ध उपन्यास थे जिन पर फ़िल्में बनाईं गईं। डॉ. सिर्पी बालसुब्रमण्यम का मानना था कि उपन्यास पर फ़िल्म बनाते समय रूपातंरण अधिक महत्त्वपूर्ण होता था और इससे मूल तत्त्व और साहित्यिक सूक्ष्मता नहीं नष्ट होनी चाहिए। इसके बाद डॉ. वेगई सेल्वी, सदस्य, तमिळ् परामर्श मंडल ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि आरंभ में पौराणिक कथाएँ और साहित्य ही फ़िल्मों का आधार थे। यदि कोई फ़िल्म पुस्तक पर आधारित है तो वह तभी सफल होगी जब उपन्यास पढ़ने के अनुभव का पूरा प्रभाव स्क्रीन पर पूर्णतया संप्रेषित हो। सिनेमा, साहित्य पढ़ने के अनुभव को दृश्य और श्रव्य आनंद के वृहद् संवेदी स्तर तक उन्नत करता है। डॉ. वेगई सेल्वी ने कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों का धन्यवाद दिया और कार्यक्रम की सफलता की शुभकामनाएँ दीं। उनके बाद श्री अकिलनकाननं ने 'सिनेमा में उपन्यास : एक समीक्षा' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा किया कि साहित्य और सिनेमा एक दूसरे को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकते। यद्यपि सिनेमा की अपनी एक विशिष्ट भाषा होती है परंतु सिनेमा और

साहित्य, दोनों के लिए कथावाचन की एक आधारभूत तकनीक है। उनका आलेख फ़िल्म निर्माण अनुभव पर केंद्रित था। उन्होंने कुछ फ़िल्म निर्माताओं की घटनाओं के उदाहरण दिए जो श्रेष्ठ उपन्यासों को सफलतापूर्वक फ़िल्मों में रूपांतरित कर सके थे। श्री एम. वेदियप्पन ने 'लिखित भाषा और सिनेमाई भाषा' पर आलेख प्रस्तुत किया। उनका मत था कि सिनेमा दृश्यिक स्पर्श से चलता है। उपन्यास के व्यापक विवरण को सिनेमा में छोटे-छोटे दृश्य विन्यासों द्वारा चित्रित किया जा सकता है। उन्होंने साहित्य से फिल्मों में चरित्रों के चित्रण और साहित्य और सिनेमा में अपनाई गई कथ्य-तकनीकों का भी विश्लेषण किया। उन्होंने यह भी बताया कि केवल एक निर्देशक में ही बेहतर सृजनात्मक स्पर्श के साथ संवाद और पटकथा को सुधारने की क्षमता होती है जिससे साहित्य के गौरव को सिनेमा में स्थापित किया जा सके। उसके बाद श्री कलाप्रिय ने 'उपन्यासों को सिनेमा में रूपांतरित करने में चुनौतियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

शांडिल्यन की अमर कृति 'यावना रानी', अखिलन की 'कायालविझि' और आर.के. नारायण की 'मालगुड़ी डेज़' से उदाहरण देते हुए उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों और कल्पना से भरपूर एक नए संसार का पुनर्निमाण करने और दृश्यिक कृति विशेषकर ऐतिहासिक कथा, को तदनुरूप रूपांतरित करने में फ़िल्म निर्माता के समक्ष आने वाली कठिनाइयों को भी रेखांकित किया। उन्होंने बताया किया कि फ़िल्म निर्माण एक अलग कला है जिसमें अनवरत सीखने की प्रक्रिया शामिल है। उन्होंने माना कि एक फ़िल्म की सफलता के लिए पटकथा अधिक महत्त्वपूर्ण है और उन्होंने निर्देशक ए.पी. नागराजन के प्रयासों की सराहना भी की जिन्होंने कोथामंगलम सुब्बू के महान उपन्यास 'तिल्लना मोहनाम्बल' को एक सफल फ़िल्म में रूपांतरित किया। अंत में निर्देशक यूरेखा ने 'आधुनिक सिनेमा में उपन्यास : एक समीक्षा' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रसिद्ध लेखकों यथा सुजाता के 'पिरीवोम संधिप्पोम' और पूमानी के 'वेक्कई' का उल्लेख किया। पूमानी कृत 'वेक्कई' पर एक तमिऴ फ़िल्म 'असुरन' बनाई गई है जिसमें कुछ ऐसे दृश्य हैं जो मूल उपन्यास में नहीं हैं। निर्देशक ने मूलपाठ से कथानक को भटका दिया है, फ़िल्म आज भी विवाद का विषय है क्योंकि उपन्यास में वंचितों और बदले की राजनीति का वर्णन है।

उन्होंने कहा कि साहित्य भावनाओं पर आधारित है जबकि सिनेमा दृश्यों और गतिविधियों पर आधारित है। इसलिए मूल कथा की समझ होना बहुत आवश्यक है। किसी भी साहित्य के सफल रूपांतरण के लिए फ़िल्म निर्माताओं को निःस्वार्थ, मूल कथा को समझते हुए और उसकी मौलिकता बनाए रखना कुछ ऐसे ज़रूरी मानदंड हैं जिनका पालन होना ही चाहिए। साहित्य अकादेमी, चेन्नई के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने कार्यक्रम का संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापन किया।

'प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य' (1947 तक) विषय पर परिसंवाद

2 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने आभासी मंच पर 2 फ़रवरी 2021 को परिसंवाद 'प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य' (1947 तक) का आयोजन किया। 2 घंटे के इस कार्यक्रम में देश के पाँच विशिष्ट लेखकों ने भाग लिया तथा प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर राजुल भार्गव, पूर्व संकाय और प्रमुख, अंग्रेज़ी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा की गई। वक्ताओं में प्रो. अल्का सिंह, डॉ. गार्गी तलपात्र, प्रो. राधा चक्रवर्ती, डॉ. सप्तर्षि मलिक और प्रोफ़ेसर सुमन्यु सत्पथी शामिल थे। प्रो. अल्का सिंह ने रवींद्रनाथ ठाकुर की अंतिम कुछ कहानियों पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. गार्गी तलपात्र ने 19वीं सदी में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य और भारतीय भाषा साहित्य के संदर्भ में साहित्यिक समावेशन की प्रक्रिया

परिसंवाद का दृश्य

पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रख्यात अनुवादक एवं शिक्षक, अम्बेडकर विश्वविद्यालय की प्रो. राधा चक्रवर्ती ने टैगोर और विश्व साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किया। सुकांत महाविद्यालय, पश्चिम बंगाल के डॉ. सप्तर्षि मलिक ने राष्ट्र और महिला चरित्रों के साथ व्यवहार के संदर्भ में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के 'राजमोहन्स वाइफ़' पर आलेख प्रस्तुत किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. सुमंयु सत्पथी ने 'प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी कविता 1827-1876' का कथावर्णन करने और 19वीं सदी के दौरान प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी कविता को पाठक व आलोचक कैसे देखते हैं, पर चर्चा स्वरूप आलेख प्रस्तुत किया। प्रस्तुतीकरण के पश्चात् वक्ताओं के मध्य रोचक चर्चा हुई। परिसंवाद का अंत बहुमूल्य सुझावों के साथ हुआ। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एस. राजमोहन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'राजस्थानी साहित्य में पत्रकारिता' पर परिसंवाद

5 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर *राजस्थानी साहित्य में पत्रकारिता* पर परिसंवाद का आयोजन 5 फ़रवरी 2021 को किया। परिसंवाद में, भारत तथा राजस्थानी में पत्रकारिता के इतिहास का व्यापक ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मधु आचार्य ने आरंभिक वक्तव्य दिया और राजस्थानी भाषा में पत्रकारिता के

परिसंवाद का दृश्य

आधारभूत विन्यास पर चर्चा की। राजस्थानी पत्रिकाओं पर विस्तार से बोलते हुए श्री दुलाराम सहारण ने 1941 में 'लड़ाई रा सांचा समाचार', 1942 में 'आगीवान' से लेकर वर्तमान की पत्रिकाओं यथा 'मानक', 'राजस्थली', 'कथेसर', 'हथाई', 'बिणजारो', 'जगती जोत', 'अपरंच', 'रोडो राजस्थान' और ई-पत्रिका 'राजस्थानी वाणी' पर बात की। श्री शंकर सिंह राजपुरोहित ने अपने आलेख में पत्रिकाओं के महत्त्व, पत्रकारिता के इतिहास का उल्लेख करते हुए पाठकों की कमी और उचित प्रबंधन के कारण समाप्त होती पत्रिकाओं पर भी चिंता व्यक्त की। अपनी प्रस्तुति में श्री घनश्याम नाथ कच्छावा ने कहा यदि हम राजस्थानी में पत्रकारिता को बचाना चाहते हैं तो हमें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत राजस्थान की प्रारंभिक शिक्षा में राजस्थानी को जोड़ना होगा। डॉ. सुखदेव राव ने कहा कि पत्रकारिता में अधिक पारदर्शिता की ज़रूरत है। अच्छा होगा यदि राजस्थानी में दैनिक समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि की जा सके, इससे राजस्थानी में पत्रकारिता और सशक्त होगी। सत्र की अध्यक्षता राजेंद्र बारहठ ने की। शूरवीरों के उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने हमारे साहित्य, इतिहास और पत्रकारिता की रक्षा की है। इस कार्यक्रम के आयोजन में साहित्य अकादेमी का प्रयास एक नया और उपयोगी अनुभव है। अकादेमी को प्रत्येक भाषा में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करते रहने चाहिए ताकि भाषा संबंधी पत्रकारिता के नए इतिहास का उदय हो। इस सुझाव के साथ परिसंवाद संपन्न हुआ।

'कोंकणी काव्य में शैलीगत परिवर्तन' विषयक परिसंवाद

8 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच पर 8 फ़रवरी 2021 को 'कोंकणी काव्य में शैलीगत परिवर्तन' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया। क्षेत्रीय

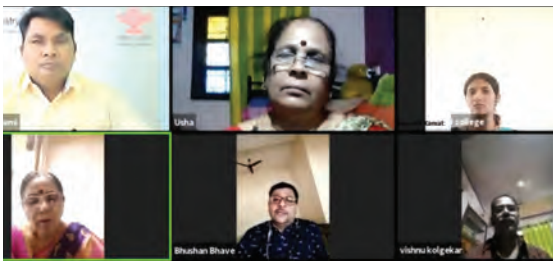

परिसंवाद का दृश्य

सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागी लेखकों का स्वागत किया। कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री उषा राणे ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि शैलीगत भिन्नता में लय, नाटकीय तत्त्व और कथ्यात्मक तकनीक भी शामिल है। इन्हीं तत्त्वों के योगदान के कारण कविता अपने पारखियों तक पहुँचती है। अगले सत्र में सुश्री आनंदी रायकर, श्री विष्णु कोलागेकर और सुश्री गायत्री कामत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में साहित्य अकादेमी, मुंबई में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'सामाजिक न्याय संवाद' पर संगोष्ठी

9 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

आभासी मंच पर पंजाबी परामर्श मंडल द्वारा 9 फ़रवरी 2021 को 'सामाजिक न्याय संवाद' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भारत और विदेशों के विद्वानों ने भाग लिया। साहित्य अकादेमी के सचिव

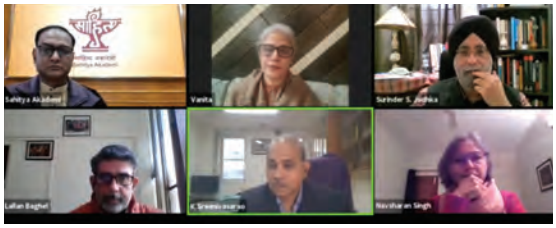

संगोष्ठी का दृश्य

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन सत्र में सभी गणमान्यों का स्वागत किया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रख्यात समाजशास्त्री प्रो. सुरिंदर सिंह जोधका ने बीज भाषण देते हुए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों—साहित्य, न्याय और समाज में नैतिकता की भूमिका पर बात की। अंग्रेज़ी के सेवानिवृत प्रोफ़ेसर और आलोचक प्रो. तेजवंत सिंह गिल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में काफ़ी महत्त्वपूर्ण बातें बताईं। पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वनिता ने संगोष्ठी के विचार, इसकी आवश्यकता तथा प्रासंगिकता के बारे में बताया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. हरविंदर सिंह, सहायक प्रोफ़ेसर और आलोचक द्वारा संयोजित विचार सत्र एक महत्त्वपूर्ण सत्र था जिसमें दैनिक जीवन में लोकाचार, न्याय और नैतिकता की समस्याओं और वर्तमान मुद्दों पर चर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता पंजाबी परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक और दिल्ली विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग के प्रमुख डॉ. रवैल सिंह ने की। इस सत्र में ललन बघेल ने विचारोत्तेजक तरीक़े से अपना आलेख प्रस्तुत किया। पंजाब विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग के प्रमुख डॉ. सर्वजीत सिंह, इतिहासकार डॉ. सुमेल सिंह संधू, विचारक और थिएटर व्यक्तित्व नवशरण कौर की प्रस्तुतियाँ काफ़ी विचारोत्तेजक रहीं। इन वक्ताओं ने सूक्ष्म से विस्तृत मुद्दों तक पर चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के संपादक श्री अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'महिला लेखक और उनका संसार' विषयक परिसंवाद

11 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा आभासी मंच पर 11 फ़रवरी 2021 को प्रख्यात असमिया विद्वानों व लेखकों के साथ 'महिला लेखक और उनका संसार' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया और वक्ताओं का परिचय करवाया। सुविख्यात असमिया आलोचक सुश्री पोरी हिलोइदरी ने बीज भाषण दिया और सोदोउ असम लेखिका समारोह समिति की अध्यक्ष डॉ. चारु सहारिया नाथ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। दोनों ने ही महिला लेखकों ने असमिया साहित्य के इतिहास और विकास पर बात की। उन्होंने विषय पर संक्षेप में अपने विचार रखते हुए प्रख्यात असमिया लेखकों और उनके लेखन का संदर्भ दिया। अकादमिक सत्र में सुश्री बंदिता फूकन, सुश्री बिनीता दत्ता, सुश्री रत्ना भराली तालुकदार और सुश्री शर्मिष्ठा प्रीतम ने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री शर्मिष्ठा प्रीतम ने असमिया महिला लेखकों द्वारा असमिया कथासाहित्य विशेषकर उपन्यास के विकास पर चर्चा की। सुश्री रत्ना भराली तालुकदार ने लेखक के रूप में साहित्यिक सामग्री के व्यवहार में जेंडर की भूमिका पर चर्चा की, उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय महिलाओं का भी उल्लेख किया। सुश्री बिनीता दत्ता ने असमिया महिला लेखकों के सम्मुख आने वाली बाधाओं और संघर्षों के बारे में बताया।

परिसंवाद का दृश्य

'इक्कीसवीं सदी में बच्चों का उर्दू अदब' पर संगोष्ठी

11 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अकादेमी द्वारा आभासी मंच पर 11 फ़रवरी 2021 को 'इक्कीसवीं सदी में बच्चों का उर्दू अदब' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री अनुपम तिवारी, संपादक हिंदी ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया। अपने संक्षिप्त वक्तव्य में उन्होंने उर्दू बाल साहित्य की परंपरा और भारत में इसके वर्तमान परिदृश्य पर प्रकाश डाला। जामिया मिलिया इस्लामिया के उर्दू विभाग के प्रमुख प्रो. शहज़ाद अंजुम, जो साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य भी हैं, ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए बताया कि बाल साहित्य केवल बालकों के लिए नहीं बल्कि सभी साहित्य प्रेमियों के लिए महत्त्वपूर्ण है। हमें अपने बच्चों को बचपन से ही साहित्य की ओर प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे वह समाज के श्रेष्ठ नागरिक के रूप में आगे बढ़ेंगे। साहित्य अकादेमी बाल पुरस्कार विजेताओं के साथ विचार सत्र का भी आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात पत्रकार और बच्चों के लेखक असद रज़ा ने की और इस सत्र में वकील नजीब, नज़ीर फतेहपुरी, रईस सिद्दीक़ी और मुहम्मद ख़लील ने आलेख प्रस्तुत किए। श्री असद रज़ा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि बाल साहित्य को नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने युवा और उभरते उर्दू लेखकों से बाल साहित्य

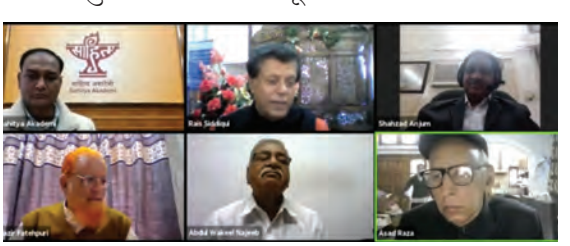

परिसंवाद का दृश्य

लिखने की अपील की क्योंकि उर्दू साहित्य में बाल लेखन की प्रभावशाली परंपरा है। सभी आलेख प्रस्तुतकर्ताओं ने नई पीढ़ी में बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने के महत्त्वपूर्ण तरीक़ों के बारे में परामर्श दिया।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत बहुभाषी कवि सम्मिलन

12 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने राजस्थानी कवि हरीश बी. शर्मा, बोडो कवि जॉयश्री बोरो, असमिया लेखक लक्ष्यजीत बर' तथा हिंदी कवि विनोद पदरज के साथ एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आभासी मंच पर 'बहुभाषी कवि सम्मिलन' का आयोजन 12 फ़रवरी 2021 को किया।

श्री लक्ष्यजीत बर' ने असमिया में कुछ कविताएँ 'रिलेटीविटी' और अन्य अंग्रेज़ी अनुवाद सहित पढ़ीं। श्री हरीश बी. शर्मा ने अपनी मातृभूमि के पौराणिक संबंधों का संक्षिप्त उल्लेख दिया और बाद में राजस्थानी कविताएँ सुनाईं। सुश्री जॅयश्री बर' ने बोडो समुदाय की परंपरा के बारे में बताते हुए बोडो कविताएँ 'जिउ' और अन्य हिंदी अनुवाद के साथ सुनाईं। श्री विनोद पदरज ने 'गरगारिए' सहित अन्य कुछ हिंदी कविताएँ सुनाईं। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में भारतीय साहित्य के विकास की महत्ता पर भी बात की। सभी रचनाओं में लेखकों की गहरी समझ परिलक्षित होती थी।

श्री हरीश बी. शर्मा, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्री विनोद पदरज तथा जॅयश्री बर'

'गुजराती चारणी साहित्य : परंपरा और प्रवाह' पर परिसंवाद

12 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच पर गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के सहयोग से 12 फ़रवरी 2021 को 'गुजराती चारणी साहित्य : परंपरा और प्रवाह' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने लेखक तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य और जानेमाने कवि श्री नितिन वडगामा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के कुलपति श्री नितिन पेथाणी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि चारणी साहित्य व परंपरा मानवी मूल्यों और शौर्य का ख़ज़ाना है और हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाएँ। सागर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री बलवंत जानी ने अपने बीज भाषण में बताया कि चारणी साहित्य, गुजराती साहित्य का *ब्रह्ममुहूर्त* है क्योंकि इसका समाज सुधार में गहन योगदान है और जाति पर आधारित महंतशाही को समाप्त करने में इसकी भूमिका है। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. विनोद जोशी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अगले सत्र में श्री अम्बादान रोहडिया ने 'चारणी साहित्य : इतिहास और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में' पर तथा श्री बलराम चावड़ा

संगोष्ठी का दृश्य

ने 'चारणी साहित्य के विविध स्वरूप' पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री आनंद गढ़वी ने श्री लक्ष्मण गढ़वी का आलेख 'चारणी साहित्य के विविध छंद' पढ़कर सुनाया तथा श्री वसंत गढ़वी ने 'चारणी साहित्य की साम्प्रत में प्रस्तुतता' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। विशिष्ट गुजराती लेखक व विद्वान श्री नरोत्तम पालण ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'समकालीन मैथिली नाटक की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

13 फ़रवरी 2021(आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 13 फ़रवरी 2021 को 'समकालीन मैथिली नाटक की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि विभिन्न चरित्रों के मध्य संवाद नाटक को अधिक रुचिकर और आकर्षक बनाता है।

उन्होंने यह भी कहा कि पढ़ने योग्य विषयवस्तु से अधिक, साहित्य की विधा नाटक–दर्शकों से ज़्यादा संबद्ध होता है। अपना आरंभिक वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कहा कि मैथिली नाटक में अपने आरंभ से लेकर आधुनिक मैथिली साहित्य तक समाज की सही प्रकृत्ति के चित्रण की विशेषता

परिसंवाद का दृश्य

है। लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने में नाटक की प्रमुख भूमिका है। प्रख्यात मैथिली लेखक प्रो. देव शंकर नवीन ने अपने बीज भाषण में बताया कि मैथिली नाटक पर अन्य भाषाओं के नाटकों का गहरा प्रभाव है। प्रख्यात मैथिली लेखक प्रो. उदय नारायण सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और उल्लेख किया कि तकनीकी विकास के कारण आधुनिक मैथिली नाटक में कई बदलाव हुए हैं जो समय की माँग भी हैं।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. प्रेम मोहन मिश्र ने की। उन्होंने सभी आधुनिक मैथिली नाटककारों से तकनीक के अधिक प्रयोग की अपील की ताकि अधिक से अधिक दर्शक नाटक की ओर आकर्षित हों। इस सत्र में डॉ. अशोक कुमार झा ने 'समकालीन मैथिली नाटक की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ' पर, डॉ. प्रकाश झा ने 'समकालीन मैथिली नाटक की नवीन प्रवृत्तियाँ' पर डॉ. अरुण कुमार सिंह ने 'समकालीन मैथिली नाटक के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ' पर तथा डॉ. ऋषि कुमार झा ने 'समकालीन मैथिली नाटक के लोक तत्त्व' पर आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद के अंत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रवासी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य पर संगोष्ठी

15 फ़रवरी 2021(आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 15 फ़रवरी 2021 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 'प्रवासी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य' का आयोजन किया। संगोष्ठी में विशिष्ट विद्वानों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. मंजू जैदका ने की। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एस. राजमोहन ने प्रवासी की अवधारणा, इसका इतिहास, कठिनाइयों, संघर्ष, अनुभव और पहचान के बारे में संक्षेप में बताया तथा कार्यक्रम का संचालन भी किया। शूलिनी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश

संगोष्ठी का दृश्य

की वरिष्ठ प्रोफ़ेसर प्रो. मंजू जैदका ने सभी छः वक्ताओं का परिचय करवाया। सीकॉम स्कीलस् विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. अमित शंकर साहा ने 'प्रवासी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य : अलगाव का अंतराल' पर आलेख प्रस्तुत किया और पूर्व-प्रचलित भाषा संबंधी निरूपणों, संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं की बहुलता, भारतीय ज़मीन से जाने व आने वाले लोगों के बहिर्प्रवाह और अंतर्वाह से निकले विचारों का संदर्भ देते हुए प्रवासी की अवधारणा को स्पष्ट किया। रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता के प्रोफ़ेसर डॉ. देबाशीष बंद्योपाध्याय ने रवींद्रनाथ ठाकुर के अमेरिका के भ्रमण व वहाँ उनके सत्रह महीने के प्रवास पर आलेख प्रस्तुत किया जो उनकी प्रवासी अभिज्ञता और संदर्श अनुभवों को व्यक्त करता था। उन्होंने वर्तमान भारतीय राजनीति से समकालीन संदर्भ प्रस्तुत करते हुए प्रवासी के विचार से जागरूक किया, जो इस कॉर्पोरेट और ग्लोबल जगत में अनवरत रूप से परिवर्तित हो रहे हैं।

पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी की डॉ. कल्पना ने कनाडा के लेखकों - उमा परमेश्वरन, अनिता राउ बादामी, रूपी कौर तथा ट्रांसजेंडर विवेक शराया, की एक शृंखला का विश्लेषण किया। डॉ. कल्पना ने विशिष्ट रूप से कुछ समस्याओं यथा घर से संबंधित अनिर्णय, संबद्ध होने की समझ, अनेकार्थी पहचान, द्विगुण संस्कृतियों में उलझाव की स्थिति, पितृसत्ता और पीढ़ी अंतराल पर चर्चा की। उन्होंने संस्कृति की बहुलता और पहचान की अवधारणा, जो निर्मित, विघटित और पुनर्निमित की जाती है, का भी उल्लेख किया। लॉरेटो कॉलेज, कोलकाता की डॉ. जूली बनर्जी मेहता ने अमल और अभ्यास के सिद्धांत को जोड़ने हेतु सर्वप्रथम प्रवासी लेखकों की कृतियों और फिर प्रतीकों पर फोकस किया। सबसे पहले उन्होंने संकरता की बहुलता को सामने रखते हुए कहा कि अनिता राउ बादामी, श्याम सेल्वादुरै, माइकल ओन्दात, झुम्पा लाहिरी जैसे प्रवासी लेखकों की रचनाएँ पहले तो एक सदृश पश्चऔपनिवेशिक राष्ट्र की किसी रचना को विकेंद्रीकृत और अस्थिर करती हैं दूसरी ओर बाहुल्यता को नष्ट करती हैं। डॉ. सोमदत्त मंडल, पूर्व प्रोफ़ेसर, विश्वभारती शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल ने 'क्या देश-परदेश संलक्षण अभी भी वैध है?' पर आलेख प्रस्तुत किया और प्रेरित विदेशगमन अथवा अनुबंधपत्र और आर्थिक कलात्मक या सामाजिक लाभ हेतु व्यक्तियों के मुक्त चयन पर बात की।

डायमंड हार्बर महिला विश्वविद्यालय की छात्रा कल्याण डीन डॉ. तानिया चक्रवर्ती ने तीन महिला लेखकों भारती मुखर्जी, चित्रा बनर्जी, दिवाकारूनी और झुम्पा लाहिरी तथा उनकी 1960 व 70 के दशक में रचित कृतियों के बारे में उल्लेख किया। स्मृति अध्ययन, महिलावादी आलोचना और भाषा के दृष्टिकोण से इन सभी के कृतित्व में डॉ. तानिया ने पीढ़ी संघर्ष की आलोचना की। उन्होंने कहा कि प्रवासन कार्टोग्राफिक आंदोलन से पहचान की 'स्थिरता' का प्रश्न उठ खड़ा होता है। काल्पनिक गृहभूमि, अनूकूलन, विस्थापन, निर्वासन, पारगमन, रूपांतरण, निकटवर्तीकरण और समावेश जैसे शब्दों व अवधारणाओं पर भी चर्चा हुई। उन्होंने यह भी कहा कि हिंसा अक्सर परिवर्तन और बहु-पहचान हेतु आवर्ती विचार बन जाती है। सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक स्मृति और सामूहिक स्मृति का भी विश्लेषण किया गया। इन महिलाओं के लेखन में एशियाई पितृसत्ता का अमेरिकी पितृसत्ता में समावेश कर लिया गया। अप्रवासी द्विभाषी और द्विसांस्कृतिक हैं, यह दोहरी अथवा टूटी-फूटी पहचान उनकी भाषा के प्रयोग में भी उच्चरित होती है।

मेरे झरोखे से–सुविख्यात मलयाळम् लेखक के. जयकुमार ने सुगता कुमारी (मलयाळम्) पर बात की

16 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु द्वारा आभासी मंच पर 16 फ़रवरी 2021 को आयोजित कार्यक्रम 'मेरे झरोखे से' में अकादेमी पुरस्कार विजेता प्रख्यात मलयाळम् कवि सुगता कुमारी पर श्री के. जयकुमार ने बात की। के. जयकुमार प्रख्यात लेखक, गीतकार और कुशल प्रशासक हैं।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने एस. जयकुमार का परिचय श्रोताओं से करवाया और उनका स्वागत भी किया। उन्होंने भी संक्षेप में सुगता कुमारी के विलक्षण व्यक्तित्व के बारे में बताया।

आरंभ में, श्री जयकुमार ने महान कवि सुगता कुमारी पर वार्ता हेतु उन्हें आमंत्रित किए जाने के लिए अकादेमी के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। अपने भाषण का आरंभ उन्होंने सुगता जी की 1961 में रचित प्रथम कविता 'रात्रिमाझा' की पंक्तियों 'इंगलियम मन्नू जीवीतम निन्ने नजान स्नेहीकून्नू' से की जो उनकी उदार क्षणानुभूति - महान करुणा का रूपक है। फिर अगले छः दशक तक उन्होंने महान काव्य की रचना की जिसने आधुनिक मलयाळम् साहित्य को समृद्ध किया। उनकी 1970 के दशक की कविता 'बिफोर साइलेंट वैली मूवमेंट' प्रकृति संरक्षण हेतु एक मुहिम के रूप में यादगार है। उनकी कविताओं का समकालीन समाज पर गहरा प्रभाव रहा है। 'धर्मपशु' कविता आधुनिक समय की स्थितियों की सूचक है। उनकी कविता में सामाजिक सरोकारों के साथ-साथ समाज में वंचितों के लिए चिंता भी दिखाई देती है। 'अभय' उनका एक घर है जो अनाथ बच्चों और समाज के वंचितों के लिए है।

उनके काव्य ने साहित्यिक रचयिताओं और केरल के सभी क्षेत्रों के लोगों को प्रेरित किया। *रात्रिमाझा* (रात्रि की बरसात) अग्रगण्य रचना है। कृष्ण *कविताकळ* (भगवान कृष्ण पर कविता) में नारीसुलभ करुणा को अभिव्यक्त किया गया है, साथ ही टैगोर की अभिलाषा को भी दिखाया गया है। यह उनकी कविता को आधुनिक मलयाळम् से अलग बनाता है।

के. जयकुमार ने सुगता कुमारी से व्यक्तिगत पहचान का उल्लेख करते हुए बताया कि जब वो पालक्काड ज़िले के उपायुक्त थे तो सुगता जी उनके परामर्शों को मान लेती थीं और समाज की बेहतरी के बारे में बड़ी सकारात्मकता से सोचती थीं।

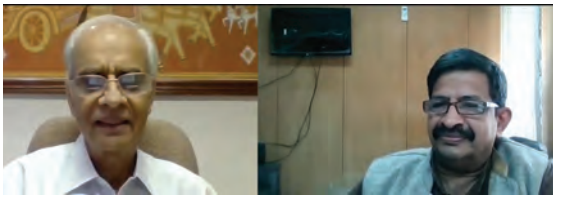

व्याख्यान देते हुए श्री के. जयकुमार

प्रवासी साहित्य और गाँधी पर संगोष्ठी

18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रवासी साहित्य और गाँधी पर संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी द्वारा 18 फ़रवरी 2021 को आभासी मंच पर किया गया, जिसमें भारत और विदेशों के कई प्रवासी साहित्यकारों और गाँधी जी के जीवन पर गहन जानकारी रखने वाले लेखकों ने भाग लिया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात लेखक और महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति गिरीश्वर

संगोष्ठी का दृश्य

मिश्र ने कहा कि गाँधी जी ने समाज से संबंधित सभी क्षेत्रों के बारे में सोचा। गाँधी आज फिर से प्रासंगिक हो गए हैं क्योंकि हिंसा, प्रदूषण, पारिवारिक वातावरण में बदलावों से आज विश्व जूझ रहा है। हमारे बीच न होते हुए भी वे हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। अब हमारे लिए यह चुनौती है कि उनके विचारों का कौन सा हिस्सा हम अपने जीवन में जोड़ें। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए उन्होंने अपने समाचारपत्रों के माध्यम से नए तरह के साहित्य की रचना की। बाद में उनका संघर्ष भारत के साथ-साथ अन्य देशों के लिए भी अगुवाई करने वाला सिद्ध हुआ।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के सदस्य, प्रख्यात आलोचक और प्रेमचंद पर गहरी समझ रखने वाले विद्वान डॉ. कमल किशोर गोयनका ने कहा कि स्वतंत्रता के पश्चात् जिस प्रकार गाँधी का दर्शन राजनीति से ग़ायब हो गया उसी प्रकार साहित्य में भी उनकी अनदेखी हो रही है। उन्होंने कहा कि यह एक व्यापक विषय है और इस महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी के माध्यम से इस पर विचार करना साहित्य अकादेमी का यह प्रयास सराहनीय है। हिंदी साहित्य में, गाँधी साहित्य के लिए प्रेमचंद प्रेरणा के सबसे बड़े स्रोत हैं। मॉरिशस के उदाहरण से उन्होंने बताया कि जब गाँधी जी 1901 में वहाँ गए तो वह केवल 32 वर्ष के थे। वहाँ से प्रकाशित हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा' के संबंध में उन्होंने बताया कि इसमें छपी रचनाओं में गाँधी का प्रभाव साफ देखा जा सकता है। उन्होंने संगोष्ठी में शामिल सभी वक्ताओं से अनुरोध किया कि वे इस दृष्टिकोण से गाँधी को पुनः देखें और आज के संदर्भ में सबके समक्ष इसे प्रस्तुत करें, यह एक बड़ा काम होगा। संगोष्ठी के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि गाँधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक दर्शन थे जिससे पूरा विश्व अछूता नहीं है। गाँधी द्वारा प्रभावित प्रवासी साहित्यकारों की जानकारी देने के साथ-साथ, उन्होंने गाँधी की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों की भी चर्चा की।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुरेश ऋतुपर्ण ने कहा कि मॉरीशस के लोगों ने उनके वचनों को बहुत सम्मान दिया तथा उनके स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरणा ली। फीजी लेखक कमला प्रसाद मिश्र द्वारा गाँधी पर लिखी गई कविताओं का भी उन्होंने संदर्भ दिया। अपने समापन भाषण में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष अनिल शर्मा 'जोशी' ने बताया कि दक्षिण अफ्रीका के बाद, फीजी और मॉरीशस जैसे देशों पर गाँधी जी का बहुत प्रभाव पड़ा जहाँ वो गिरमिटिया आंदोलन हेतु प्रेरणा के मुख्य स्रोत बन गए। वे स्वयं वहाँ उपस्थित नहीं थे परंतु उनके विचार वहाँ पूर्णतया व्याप्त थे। उमापति दीक्षित, आशीष कंधवे, अंजू रंजन (जोहानसबर्ग), अर्चना पैन्यूली (कॉपेनहेगेन), तेजेंदर शर्मा (लंदन), विजय शर्मा, दत्ता कोल्हारे, मुन्ना लाल गुप्ता, विजय मिश्र और शालेहा प्रवीन ने इस सत्र में अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने किया।

साहित्य अकादेमी किताब घर का उद्घाटन

18 फ़रवरी 2021, भुवनेश्वर

पूरे ओड़िशा राज्य तथा भुवनेश्वर में साहित्य अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री हेतु ओड़िशा राज्य संग्रहालय परिसर, भुवनेश्वर में साहित्य अकादेमी ने एक नए किताब घर का उद्घाटन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने सभी का स्वागत करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि साहित्य अकादेमी किताब घर ने साहित्य अकादेमी के प्रकाशनों की बेहतर मार्केटिंग के लिए मार्ग खोला है और इससे ओडिशा में साहित्य अकादेमी पुस्तकों की उपलब्धता

व्याख्यान देते हुए डॉ. रमाकांत रथ

बढ़ेगी। देश के इस भाग में साहित्य अकादेमी की उपस्थिति को सशक्त करने में भी सहायता प्राप्त होगी।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. विजयानंद पांडा ने पूरे वर्ष विभिन्न साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की और आशा व्यक्त की कि भुवनेश्वर में स्थायी साहित्य अकादेमी किताब घर का उद्घाटन एक ऐतिहासिक घटना है जो ओड़िशा में इसकी उपस्थिति और बढ़ाएगी।

साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष तथा महत्तर सदस्य डॉ. रमाकांत रथ ने विचार व्यक्त किए कि स्थायी किताब घरों की घटती प्रवृत्ति के इस युग में साहित्य अकादेमी की उपलब्धि प्रशंसनीय है। इससे साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की व्यापक पहुँच को सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी। उनका यह भी मानना था कि यह किताब घर भारतीय साहित्य की मान्यता हेतु नई संभावनाएँ खोलेगा।

ओड़िशा सरकार के ओड़िआ भाषा, साहित्य और संस्कृति विभाग के निदेशक तथा प्रसिद्ध ओड़िआ कवि श्री रंजन कुमार दास इस अवसर पर सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। किताब घर खुलने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह किताब घर ओड़िआ लोगों में भारतीय साहित्य की भावना का प्रचार करने में सहायक सिद्ध होगा।

ओड़िशा राज्य संग्रहालय के अधीक्षक डॉ. भाग्यलिपि मल्ला ने उद्घाटन समारोह का संचालन किया तथा साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत पैनल चर्चा

18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी, चेन्नई उप-कार्यालय ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत पैनल चर्चा का आयोजन 18 फ़रवरी 2021 को आभासी मंच के माध्यम से किया। साहित्य अकादेमी, चेन्नई के कार्यालय प्रभारी श्री टी. एस. चंद्रशेखर राजू ने स्वागत भाषण दिया तथा अतिथि वक्ताओं का परिचय करवाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. एस. कारलोस ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. एस. कारलोस ने नए युग के उपकरण के रूप में अनुवाद की भूमिका तथा किसी भी साहित्य में अनुवाद के महत्त्व पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि मूल पाठ के प्रति निष्ठा केवल वाक्य रचना से संबंधित नहीं बल्कि अर्थ संबंधी भी है तथा मूल पाठ की लय प्राप्त करने में लेखक से अधिक दायित्व अनुवादक का होता है। उनके पश्चात् डॉ. के. पंजंगम ने लेखक और अनुवादक के रूप में अपने अनुभव साझा करते हुए माना कि भारत जैसे विविध देश में विभिन्न भाषाओं व संस्कृतियों के साथ अनुवाद एक कठिन कार्य है और चुनौती भी है। उन्होंने अनुवाद हेतु पुस्तक के चयन, अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन के मानकीकरण तथा प्रकाशकों के दृष्टिकोण से अनुवाद का बाज़ार जैसे मुद्दे सामने रखे। उन्होंने अनुवाद की भावना की निष्ठा पर चिंता जताते हुए बताया कि

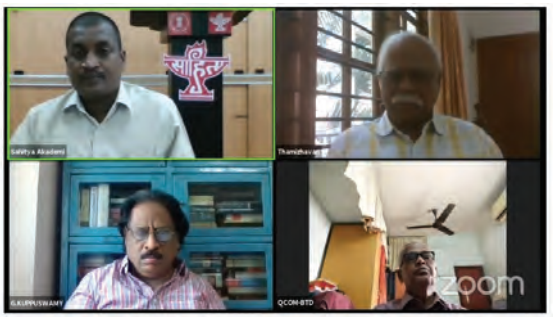

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, डॉ. एस. कारलोस, श्री जी. कुप्पुस्वामी तथा डॉ. के. पंजंगम

अनुवाद केवल मूल के निकट तक ही पहुँच पाते हैं। उनका मत था कि अनुवादक, साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विविध सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परंपरओं के पुनः स्थापन में अनुवाद प्रयास भी हैं तथा उपकरण भी। श्री जी. कुप्पुस्वामी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उल्लेख किया कि मूल पाठ की गुणवत्ता पर अनुवाद की गुणवत्ता निर्भर है। परंतु कई बार अनुवाद मूल के भाव को नहीं बनाए रख पाता। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए कि किस प्रकार एक अनुवादक मूल पाठ की संवेदना, भाव, मुहावरों तथा विषयवस्तु को बनाए रखने में चुनौतियों का सामना करता है। साहित्य अकादेमी, चेन्नई के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने सत्र का संचालन किया तथा कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद व्यक्त किया।

पश्चिमी एवं उत्तरी भारतीय कवि सम्मिलन

19 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 19 फ़रवरी 2021 को *पश्चिमी एवं उत्तरी भारतीय कवि सम्मिलन* का आयोजन आभासी मंच के अंतर्गत किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा इस कार्यक्रम के यूट्यूब पर लाइव देखने वालों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हमारी सभी भाषाओं में कविता की प्रबल परंपरा है। इन परंपराओं ने सामाजिक परिवर्तन और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बड़ा योगदान देने के साथ-साथ विश्व को सार्वभौमिक भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश दिया है। मराठी परामर्श मंडल के संयोजक श्री रंगनाथ पठारे ने इतनी भाषाओं में कवियों को आमंत्रित करके सम्मिलन आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि काव्य की हमारी समृद्ध परंपरा ने हमें जोड़े रखा है। अपने मत के समर्थन में उन्होंने पश्चिमी भारत के संत कवियों के काव्य का विशेषरूप से उदाहरण दिया। सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक श्री अर्जुनदेव चारण ने कहा कि कवियों का समय के साथ एक अनवरत और गूढ़ रिश्ता रहा है। उन्होंने आगे कहा कि कविता एक से दूसरे मस्तिष्क में यात्रा करती है। कवि कभी अकेला नहीं होता, उसकी अपनी भाषा में कविता की परंपरा सदैव उसके साथ होती है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा दो कविताएँ भी सुनाईं। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने सभी को धन्यवाद दिया।

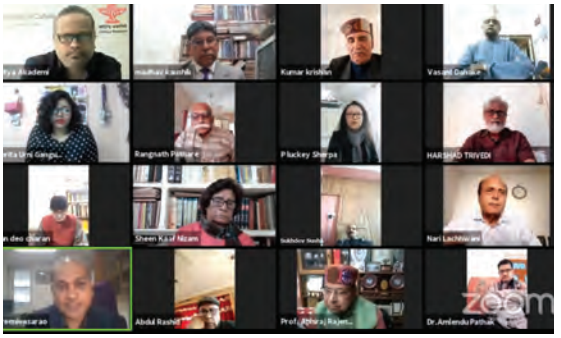

पश्चिमी एवं उत्तरी भारतीय कवि सम्मिलन कार्यक्रम का दृश्य

सम्मिलन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री शीन काफ़ निज़ाम ने की। सुश्री सोमरिता उर्नि गांगुली (अंग्रेज़ी), श्री शिवदेव सुशील (डोगरी), श्री हर्षद त्रिवेदी (गुजराती), श्री कुमार कृष्ण (हिंदी) तथा श्री संजीव वेरेंकर (कोंकणी) ने हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताएँ सुनाईं। प्रख्यात मराठी कवि श्री वसंत आबाजी डहाके ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में कवियों - श्री मजरूह रशीद (कश्मीरी), श्री अमलेंदु शेखर पाठक (मैथिली), पी. लक्की शेरपा (नेपाली), श्री मनमोहन सिंह (पंजाबी), श्री मंगत बादल (राजस्थानी), श्री अभिराज राजेंद्र मिश्र (संस्कृत) तथा श्री नारी लच्छवाणी (सिंधी) ने अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद सहित अपनी कविताएँ सुनाईं। अंत में, साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'राजस्थानी साहित्य : वर्तमान तथा भविष्य' पर संगोष्ठी

19 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत साहित्य अकादेमी ने 'राजस्थानी साहित्य : वर्तमान तथा भविष्य' विषय पर आधारित संगोष्ठी का आभासी मंच के अंतर्गत सीधा प्रसारण किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थानी की एक समृद्ध परंपरा है जो पश्च-आधुनिकवाद तक जारी रही है। राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मधु आचार्य ने कहा कि राजस्थानी साहित्य ने गाँव, गली, किसानों की समस्याओं से आगे का सफ़र तय कर लिया है तथा यह आम जन एवं उनकी संवेदनाओं तक पहुँच गया है। राजस्थानी साहित्य के स्तर में काफी सुधार आया है तथा वह अब अन्य भाषाओं के समतुल्य हो गया है। इस सत्र में श्री दिनेश पंचाल, श्री जितेंद्र निर्मोही, श्रीमती किरण राजपुरोहित नितिला, डॉ. कुंदन माली, श्री नमामिशंकर आचार्य तथा श्रीमती ऋतु शर्मा ने अपने आलेख पढ़े। राजस्थानी साहित्य में कथा शैली पर आलेख प्रस्तुत करते हुए श्री पांचाल ने कहा कि नए विषयों तथा शिल्प के साथ यह काफ़ी विकसित हो गई है। श्री जितेंद्र निर्मोही ने राजस्थानी में ग़ैर-कथात्मक साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किया जिसमें डायरी, स्मृतियाँ तथा व्यंग्य शामिल था। श्रीमती किरण राजपुरोहित ने राजस्थानी में महिला लेखन पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राजस्थानी में महिला लेखकों द्वारा कविता, उपन्यास अथवा कथाओं के क्षेत्र में लिखा जाने वाला साहित्य किसी दूसरी भाषा में लिखे गए साहित्य से कमतर नहीं है। श्री कुंदन माली ने राजस्थानी में लिखी गई कविता पर आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि इसमें अन्य भाषाओं की तुलना में काफ़ी बदलाव आए हैं। राजस्थानी में उपन्यास की शैली पर बोलते हुए श्री नमामीशंकर ने कहा कि कथानक और शिल्प की समृद्ध विविधता की वजह से इसने अपने लिए एक विशेष जगह बनाई है। श्रीमती ऋतु शर्मा ने राजस्थानी में नाटक और बाल साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य भविष्य की नींव है तथा इसने राजस्थानी में अपनी जगह बनाई है। पाठकों की कोई कमी नहीं है। सत्र की अध्यक्षता श्रीलाल मोहता ने की। राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता की वकालत करते हुए उन्होंने बताया कि मान्यता भाषा तथा इसके साहित्य को और मज़बूत करेगी।

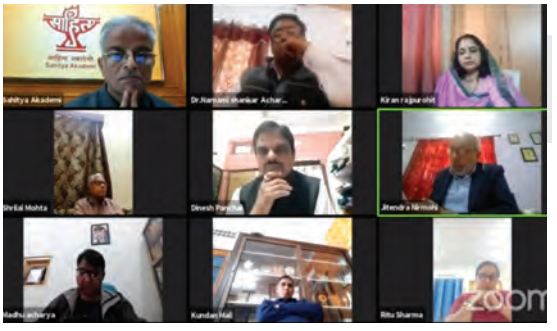

संगोष्ठी का दृश्य

'संस्कृत साहित्य में सिख गुरुओं का चित्रण' पर परिसंवाद

20 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 20 फ़रवरी 2021 को आभासी मंच के अंतर्गत 'संस्कृत साहित्य में सिख गुरुओं का चित्रण' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। आपने स्वागत भाषण में उन्होंने पूरे विश्व में संस्कृति तथा परंपराओं के उत्थान में संस्कृत भाषा की भूमिका और ज्ञान की नगरी वाराणसी, जहाँ

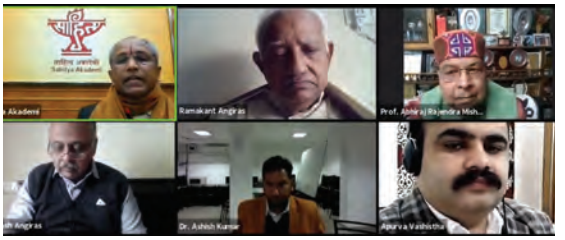

परिसंवाद का दृश्य

से अधिकतर सिख गुरुओं ने अपने शिष्यों को संस्कृत सीखने के लिए प्रेरित किया, के महत्त्व पर चर्चा की। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि सिखों के सभी दसों गुरुओं ने संस्कृत भाषा का संरक्षण किया तथा संस्कृत में लिखे वेदों तथा अन्य पवित्र धर्मग्रंथों के निर्देशों का पालन किया। उन्होंने संस्कृत और इसकी संस्कृति के प्रति सिख गुरुओं की अभिज्ञता को भी समझाया। प्रसिद्ध संस्कृत लेखक प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल ने अपने बीज भाषण में बताया कि संस्कृत की 15 पुस्तकों में स्पष्ट रूप से न केवल धर्म के प्रति सिख गुरुओं की महानता को बल्कि संस्कृत में लिखित भारतीय धर्मग्रंथों के रहस्यों को समझने के लिए संस्कृत भाषा सीखने के महत्त्व को भी उदाहरणों से वर्णित किया गया है। विशिष्ट संस्कृत साहित्यकार प्रो. रमाकांत आंगिरस ने कहा कि संस्कृत शिक्षण ने सिख गुरुओं को धर्म के प्रति अधिक जाग्रत तो बनाया ही, इससे वह विश्व के रहस्यों को भी समझ सके।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। इस सत्र में डॉ. आशुतोष अंगीरस ने '21वीं सदी में गुरुगाथा का सत्त्व और संरचना' पर, डॉ. वीरेंद्र कुमार ने 'दशमेश चरितम में सांस्कृतिक चेतना' पर, डॉ. विशाल भारद्वाज ने 'संस्कृत साहित्य में उल्लेखित सिख गुरुओं की विचारधारा' पर तथा डॉ. आशीष कुमार ने 'गुरुनानक देव चरितम महाकाव्य में दार्शनिक विचार' पर आलेख प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू के धन्यवाद ज्ञापन के साथ परिसंवाद समाप्त हुआ।

'डोगरी में निबंध लेखन की वर्तमान स्थिति तथा भावी संभावनाएँ' विषय पर परिसंवाद

22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

वेबलाइन साहित्य शृंखला के भाग के रूप में साहित्य अकादेमी ने 22 फ़रवरी 2021 को आभासी मंच पर 'डोगरी में निबंध लेखन की वर्तमान स्थिति तथा भावी

परिसंवाद का दृश्य

संभावनाएँ' विषय पर डोगरी परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने सभी का स्वागत करते हुए लंबे समय से विभिन्न भाषाओं में लिखे जा रहे निबंधों का हवाला देते हुए विषय से परिचित करवाया। अपने आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री दर्शन दर्शी ने कहा कि परिसंवाद का विषय सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में इसे चुनने हेतु लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। उनका मानना था कि यद्यपि छात्र बचपन से ही निबंध लिखना आरंभ कर देते हैं परंतु दुर्भाग्य से डोगरी लेखकों ने साहित्य की इस विधा पर अधिक कार्य नहीं किया। विषय पर विस्तार से बोलते हुए उन्होंने कहा कि उनका मत यह है कि वास्तव में यह एक विचारोत्तेजक विषय है जिस पर लेखकों को काफ़ी काम करने की आवश्यकता है। जाने-माने लेखक श्री प्रकाश प्रेमी ने डोगरी भाषा में निबंध लेखन और पाठकों तथा लेखकों पर इसके प्रभाव का पूरा विवरण दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में अधिकाधिक लेखक अभिव्यक्ति के रूप में निबंध लेखन को चुनें ताकि डोगरी साहित्य भी साहित्य की इस विधा से समृद्ध हो सके। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक पद्मश्री नरसिंह देव जम्वाल ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि डोगरी लेखकों को इस विधा पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने पहली बार निबंध लेखन पर पूर्णकालिक परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। अन्यथा निबंध दूसरी संगोष्ठियों का हिस्सा हुआ करता था।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध डोगरी लेखक प्रो. अर्चना केसर ने की। उन्होंने कहा कि निबंध और आलेख में अंतर पहचानने की आवश्यकता है। निबंधों पर अधिक से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने की आवश्यकता है ताकि शोध करने वाले छात्रों को कहानियों, कविताओं और व्यक्ति परिचय के अलावा दूसरे विकल्प भी मिल सकें। इस सत्र में श्री पदमदेव सिंह नादान ने 'डोगरी में व्यंग्य निबंध लेखन' पर, श्री आशुतोष पराशर ने डोगरी में 'डोगरी समीक्षात्मक निबंध लेखन' पर तथा श्री विपिन कुमार उपाध्याय ने 'डोगरी ललित निबंध लेखन' पर आलेख पढ़े। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू के धन्यवाद ज्ञापन से परिसंवाद संपन्न हुआ।

'साहित्य तथा अन्य कलाएँ' पर परिसंवाद

23 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने आभासी मंच के अंतर्गत 23 फ़रवरी 2021 को 'साहित्य तथा अन्य कलाएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्रसिद्ध चित्रकार श्री सुधीर पटवर्धन, जाने-माने आलोचक तथा शास्त्रीय गायक डॉ. मिलिंद माल्शे, प्रसिद्ध आलोचक डॉ. दीपक घारे, विशिष्ट मूर्तिकार तथा कला इतिहासकार डॉ. दीपक कन्नाल ने परिसंवाद में भाग लिया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने कलाकार-लेखक-प्रतिभागियों का स्वागत किया। सभी विशिष्ट प्रतिभागियों ने विविध रचनात्मक आयामों, समय के साथ संबंध, बहु-अर्थ की संभाव्यता, उनकी कलाओं के विकास, कला तथा साहित्य के मध्य संबंध तथा किस प्रकार अन्य कलाएँ और साहित्य एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, सरीखे विषयों पर अपने विचार साझा किए।

परिसंवाद का दृश्य

मी.पा. सोमसुंदरम पर शतवार्षिकी परिसंवाद

24 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के चेन्नई स्थित उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने आभासी मंच पर तमिळ लेखक तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता मी.पा. सोमसुंदरम पर शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन 24 फ़रवरी 2021 को वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत किया। साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने अनुवाद कार्य, मान्यताप्राप्त भाषाओं में विलक्षण साहित्यिक रचना को पुरस्कार देना, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशाला, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम सहित अकादेमी की सभी गतिविधियों के बारे में बताया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. सुंदरा मुरुगन ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए मी.पा. सोमसुंदरम के प्रतिभाशाली साहित्यिक जीवन की चर्चा की। उन्होंने सोमसुंदरम को एक बहुआयामी प्रतिभाशाली लेखक, जो कवि, उपन्यासकार, निबंधकार नाटककार, यात्रा-वृत्तांत लेखक, पत्राकार, संपादक तथा

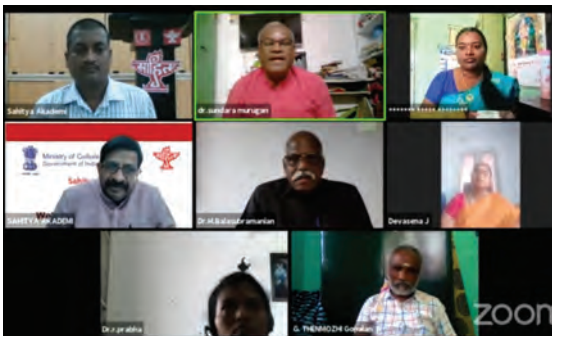

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, डॉ. सुंदरा मुरुगन, डॉ. अनीता परमशिवम, श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, डॉ. एम. बालसुब्रह्मण्यम, डॉ. जे. देवसेना, डॉ. आर. प्रभा तथा श्री पुधुवइ युगभारती

प्रखर वक्ता के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक संस्थाओं में विद्वत्तापूर्ण अंग्रेज़ी साहित्य का योगदान देते हुए तमिऴ भाषा के गौरव का प्रसार किया। उन्होंने तमिऴ पत्रिका के संपादक के रूप में कार्य किया तथा 1958 से 1960 तक तमिऴ मासिक पत्रिका 'ननबन' के संस्थापक-संपादक रहे। उन्होंने आकाशवाणी में 40 वर्षों से अधिक समय तक कार्य किया तथा बड़ी संख्या में कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, ग़ैर-कथात्मक निबंध, यात्रा-वृत्तांत, नाटक तथा संगीत पर शोध लेख लिखे। डॉ. सुंदरा मुरुगन ने ऐसे महान विद्वान की शतवार्षिकी के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा तमिऴ के माध्यम से भारतीय साहित्य में उनके विचारणीय योगदान को याद किया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री पुधुवइ युगभारती ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा मी.पा. सोमसुदंरम के जीवन तथा साहित्यिक कार्यों पर विस्तार से चर्चा की। अकादमिक सत्र में डॉ. एम. बालसुब्रह्मण्यम ने 'मी.पा. सुंदरम की कविताएँ' पर आलेख प्रस्तुत किया। एक सम्मानित कवि और रचयिता सोमसुंदरम ने पहला काव्य 'इलावेनिल' 1946 में प्रकाशित किया जिसे राज्य पुरस्कार मिला। भावों की गहराई, संगीतात्मक गुण तथा उनकी गहरी साहित्यिक समझ का प्रतिबिंब उनकी कविताओं में लक्षित होता है जिससे उनकी कविताओं को बहुत वाह-वाही प्राप्त हुई। तमिऴ एनसाइक्लोपीडिया 'कलाई कालनजीयम' में भी उनका योगदान रहा है। डॉ. एम. बालसुब्रह्मण्यन ने मी.पा. सोमसुंदरम की दो कविताएँ पढ़ीं तथा तमिऴ काव्य परंपराओं के अनुसार उनकी व्याख्या भी की। बाद में डॉ. जे. देवसेना ने 'मी.पा. सोमसुंदरम का सिंधी साहित्य' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। वे युवावस्था से ही अध्यात्म की ओर प्रवृत्त थे तथा सिंधी के विभिन्न गीतों, विशेषकर तिरुमूलर की 'तिरुमंदिरम' का उन्हें गहन ज्ञान था। सिद्धों के गीतों के बारे में गहन ज्ञान के लिए उन्हें 'सिद्धर इलाक्किया चेम्मल' की उपाधि दी गई। तमिऴ श्रोताओं ने सिद्ध साहित्य पर उनके व्याख्यानों को भी काफ़ी पसंद किया। इसके बाद डॉ. आर. प्रभा ने मी.पा. सोमसुंदरम के उपन्यासों पर आलेख प्रस्तुत किया। *एनधाईयुम थायुम, नंदवनम, कदाल कांदा कनावू* तथा *रविचंद्रिका* सोमसुंदरम के कुछ प्रसिद्ध उपन्यास हैं। आलोचनात्मक रूप से प्रसिद्ध उपन्यास 'रविचंद्रिका' पर टी.वी. शृंखला भी बनी। अंत में डॉ. अनीता परमशिवम ने 'मी.पा. सोमसुंदरम की कहानियाँ' पर आलेख प्रस्तुत किया। सुयोग्य युवा लेखक सोमसुंदरम ने 1938 में 'आनंद विकतान' द्वारा संचालित कहानी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता। सोमसुंदरम की विद्वतापूर्व कुशाग्रता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कल्लाराई मोहिनी, तिरुप्पुगज सामियार, *उदय कुमारी, मनाई मंगलम* तथा *मंजल रोजा* उनकी कुछ विशिष्ट रचनाएँ हैं। साहित्य अकादेमी, चेन्नई के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने सत्र का संचालन किया तथा धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'समकालीन साहित्य में महिला चरित्र' पर साहित्य मंच

8 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 8 मार्च 2021 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आभासी मंच के अंतर्गत 'समकालीन साहित्य में महिला चरित्र' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें सुश्री भाग्यलिपि मल्ल (ओड़िआ), सुश्री जी.ए. घनप्रिया (मणिपुरी), सुश्री इंदु बसुमतारी (बोडो), सुश्री जया मित्र (बाङ्ला), सुश्री जोबा मुर्मू (संताली) तथा सुश्री परी हिलोईदारी (असमिया) सरीखी बहुभाषी महिला लेखकों ने भाग लिया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय भी करवाया। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने

सुश्री जोबा मुर्मू, सुश्री जी.ए. घनप्रिया, सुश्री भाग्यलिपि मल्ल, सुश्री परी हिलोईदारी तथा डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

संबंधित साहित्य में महिला चरित्र-चित्रण पर बात की। उन्होंने कई चरित्रों तथा विषय वस्तु का संदर्भ देते हुए बताया कि किस प्रकार साहित्य में महिला चरित्र-चित्रण समाज का प्रबल दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। साहित्य से उद्धरण लेते हुए उन्होंने एक महिला लेखक के रूप में अपने अनुभवों का उल्लेख किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी चेतना (बहुभाषी)

8 मार्च 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2021 को साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने आभासी मंच के अंतर्गत *नारी चेतना* कार्यक्रम का आयोजन किया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने आरंभिक भाषण दिया तथा प्रतिभागी अतिथियों को आमंत्रित किया। सुविख्यात कन्नड लेखिका श्रीमती सविता श्रीनिवास, प्रसिद्ध मलयाळम् लेखिका श्रीमती सी.एस. चंद्रिका, जानी-मानी तमिळ लेखिका श्रीमती एस. चित्रा, प्रख्यात तेलुगु लेखिका डॉ. किन्नेरा श्रीदेवी तथा सुविख्यात हिंदी लेखिका और अनुवादक डॉ. उषा रानी राव ने कार्यक्रम में सहभागिता की तथा अपनी-अपनी भाषाओं में अपने व्यावसायिक अनुभवों तथा साहित्यिक कार्यों की पृष्ठभूमि में महिलाओं के मुद्दों पर बात की।

श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने वक्ताओं का स्वागत करते हुए बताया कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, महिलाओं की पहचान और आज़ादी का उत्सव है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2021 का विषय 'चुनौती को चुनना' है। चुनौतीपूर्ण जगत एक सचेत जगत है और चुनौती से ही बदलाव आता है, इसलिए आइए हम सभी जेंडर पूर्वग्रहों और रूढ़िवादिता को चुनौती दें। आमंत्रित अतिथि अपने जीवन की वास्तविक लक्ष्य प्राप्तिकर्ता हैं तथा भारत में महिलाओं के जीवन और पहचान का प्रतिनिधित्व करती हैं।

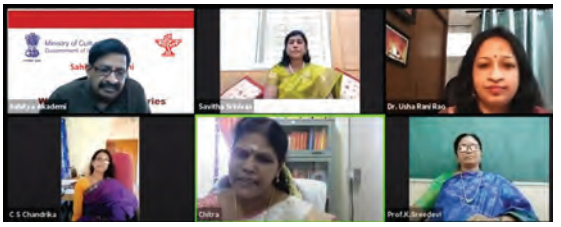

श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, श्रीमती सविता श्रीनिवास, डॉ. उषा रानी राव, श्रीमती एस. चित्रा तथा डॉ. किन्नेरा श्रीदेवी

सुविख्यात कन्नड लेखिका और आईपीएस श्रीमती सविता श्रीनिवास ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि राजनीतिक, सामाजिक, कानूनी, श्रम अधिकारों और स्वतंत्रता हेतु महिलाओं की माँग के कारण ही अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं को सशक्त बनाया है, उन्होंने कन्नड महिलाओं के लेखन की चर्चा की। कन्नड महिला लेखकों ने उस युग में अपनी रचनाएँ लिखीं जब समाज में महिलाओं का उत्पीड़न अधिक था, उन्होंने कर्नाटक की महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु रास्ता बनाया। इस अवसर पर उन्होंने ननजागुडु तिरूमालम्बा, आर. कल्याणम्मा, बेलगेरे जनकाम्मा, सरस्वती बाई रजवाड़ा के लेखन और वैदेही, नागवेणी, नेमिचंद्रा आदि के लेखन में वर्णित अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के विषय पर चर्चा की। उन्होंने घर और कार्यस्थल, दोनों ही जगह महिलाओं की दुर्दशा पर बात की। कोरोना वैश्विक महामारी ने महिलाओं पर अपराधों में वृद्धि, कार्य संरचना में संशोधन और बेरोज़गारी को जन्म दिया है। लड़कियों तथा महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में शिक्षित और प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकार चल सकें।

मलयाळम् लेखिका श्रीमती सी.एस. चंद्रिका ने अपने वक्तव्य में कहा कि केरल की महिलाएँ शिक्षित और सशक्त होने के कारण अपने को अभिव्यक्त करने में सफल हो सकीं। उन्होंने कहा कि सभी महिलाओं के साथ समान व्यवहार नहीं हुआ, न ही उन्हें समान अवसर दिए गए। ग़रीबी, जाति और लिंगभेद के कारण वह स्वयं को असुरक्षित महसूस करती थीं। टॉसजेंडर, लेस्बियन को समाज में बराबरी का दर्जा दिया जाना चाहिए।

उन्होंने मलयाळम् में महिलावादी लेखन के विविध पक्षों तथा वर्तमान साहित्यिक परिदृश्यों पर भी प्रकाश डाला।

जानी-मानी तमिळ लेखिका एस. चित्रा ने तमिळ साहित्य में प्राचीनकाल से लेकर पुरुषों व महिलाओं को समान रूप से चित्रित करने वाले महाकवि सुब्रह्मण्य भारतियार के आधुनिक काल तक के नारीवादी विचारों का वर्णन किया। ईरोम शर्मिला, मलाला की भाँति तमिलनाडु में भी महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई और कमला हैरिस (यूएसए की उपाध्यक्ष) और सौम्या स्वामीनाथन (डब्ल्यू.एच.ओ.) को विश्वख्याति प्राप्त हुई। तमिळ साहित्य में वेदनायकम पिल्लै, पेरियार, भारतियार तथा अन्यों ने महिलाओं के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया और समाज में उनकी स्थिति पर प्रकाश डाला। अंत में उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है जब हम महिलावादी संदर्भ में स्वयं का आकलन करें और अपने अनुभवों से साहित्य को समृद्ध करें।

द्रविड़ियन विश्वविद्यालय, कुप्पम के तेलुगु की प्रोफ़ेसर के. श्रीदेवी, जो एक सुविख्यात तेलुगु लेखिका भी हैं, ने इस अवसर पर महिलाओं के सशक्तीकरण और उनके गौरवपूर्ण विकास के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की। भारत में राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक सुधारों ने सभी क्षेत्रों में महिलाओं की प्रतिभागिता सुनिश्चित की। भारत के संविधान में महिलाओं की प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई। भारत के संविधान में महिलाओं के लिए संविधानगत गारंटी प्रदान की गई है जिससे उनकी प्रगति हुई। फिर भी भारतीय संसद में महिलाओं का समान आरक्षण लागू नहीं हो पाया क्योंकि अभी भी यह 8 प्रतिशत है। उनका मत था कि जो वर्षों से महिला आरक्षण बिल लंबित है, अच्छा संकेत नहीं है तथा उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने तेलुगु साहित्य में महिलाओं के लेखन पर बात की।

हिंदी लेखिका और हिंदी की प्रोफ़ेसर डॉ. उषा रानीराव ने एक शिक्षक और कार्यकर्ता के रूप में अपने अनुभवों को याद किया। 'नारी चेतना' एक अच्छा विषय है जिसे विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से अकादेमी ने चिन्हांकित किया है। उन्होंने जयशंकर प्रसाद की कविता कामायनी से कुछ पंक्तियाँ 'तुम भूल गईं। पुरुषत्व के मोह में', पढ़ीं जिसमें नारीवादी 'चेतना' को उठाया गया है। साथ ही उन्होंने 12वीं सदी की आध्यात्मिक चेतनाओं का भी उल्लेख किया जिसमें राजस्थान की मीराबाई, कर्नाटक की अक्का महादेवी, *कश्मीर की लल द्यद* और अन्यों को याद किया जिन्होंने परंपराओं को तोड़ते हुए शाही प्रथा के विरुद्ध लड़ाई छेड़ी और अध्यात्मिक तथा साहित्यिक जगत में उच्च स्थान प्राप्त किया। उन्होंने कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग चित्रा मुदगल तथा अन्य कई आधुनिक महिला लेखकों के योगदान पर भी प्रकाश डाला। अपने वक्तव्य का अंत उन्होंने यह कहते हुए किया कि केवल साहित्य और रचनात्मकता ही महिला और पुरुष के मध्य समानता ला सकते हैं।

नारी चेतना

8 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने अकादेमी की वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 8 मार्च 2021 को 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया। आभासी मंच पर इस कार्यक्रम का आयोजन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर किया गया। कार्यक्रम में गुजराती, कोंकणी, मराठी तथा सिंधी भाषाओं की कवयित्रियों को अपनी-अपनी भाषा में, अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद सहित, कविताएँ सुनाने के लिए आमंत्रित किया गया।

युवा गुजराती कवयित्री एशा दादावाला ने अपनी कविताओं यथा *एक्शन रीप्ले, पगफेरा, घर* आदि में

डॉ. ओम प्रकाश नागर, सुश्री ग्वाडालूप डायस, सुश्री दिव्या विधाणी, सुश्री एशा दादावाला तथा सुश्री योगिनी सातारकर-पांडे

महिला जीवन की संवेदनाओं और संघर्ष का वर्णन किया। दूसरी कवयित्री सुश्री ग्वाडालूप डायस ने कोंकणी भाषा में अपनी कविताओं में क्षेत्रीय जीवन, प्रकृति की तस्वीर बनाई। युवा मराठी कवयित्री योगिनी सातारकर - पांडे ने 'मुँह था अँधियारे में', 'इतना ही इतिहास रचती जाती स्त्री' के साथ-साथ कुछ अन्य कविताओं का हिंदी अनुवाद भी सुनाया। योगिनी जी ने अपनी कविताओं में एक स्त्री के जीवन संघर्ष, समाज में उसकी स्थिति को प्रस्तुत किया जबकि सिंधी कवयित्री दिव्या विधाणी ने हिंदी अनुवाद सहित सिंधी में *हड़प्पा* और *मोहन-जो-दारो* कविताएँ सुनाईं।

यूट्यूब और फेसबुक जैसे वर्चुअल मंचों पर कार्यक्रम को काफ़ी संख्या में लोगों ने देखा। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने किया।

'स्वतंत्रता के बाद बाङ्ला नाटक' पर साहित्य मंच

18 मार्च 2021, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने अपने क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में 18 मार्च 2021 को साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'स्वतंत्रता के बाद बाङ्ला नाटक' विषय पर प्रख्यात रंगमंच-कलाकारों और विद्वानों के साथ कार्यक्रम आयोजित किया।

डॉ. मिहिर कुमार साहू, सुश्री अर्पिता घोष, डॉ. सुबोध सरकार तथा श्री देवाशीष मजूमदार

आरंभ में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने वक्ताओं का परिचय करवाया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक भाषण दिया। उन्होंने किसी समुदाय के मस्तिष्क को आकार देने में नाटक के महत्त्व के बारे में बताते हुए बंगाल के महान रंगमंच व्यक्तित्वों पर भी चर्चा की। बीज भाषण देते हुए रंगमंच की प्रख्यात कलाकार सुश्री अर्पिता घोष ने भरत के *नाट्यशास्त्र* में नाटकीय चर्चा से लेकर भारतीय नाटक के इतिहास पर चर्चा की। उन्होंने भारत में आज तक की रंगमंच की यात्रा के बारे में भी विस्तार से बताया। अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए प्रसिद्ध नाटककार श्री देवाशीष मजूमदार ने बाङ्ला में 'नाटक' शब्द के विभिन्न आयामों पर तथा 'ड्रामा' और 'प्ले' के बीच अंतर पर भी बात की। आलेख प्रस्तुति सत्र में श्री अवि चक्रवर्ती ने एक ड्रामा में निर्देशकों की भूमिका के बारे में बताया तो सुश्री तरुणा दास और श्री गौतम हालदार ने ड्रामा में 'नटी' और 'नट' की भूमिका पर बात की। श्री चक्रवर्ती ने ड्रामा और इसके इतिहास में विभिन्न प्रकार के निर्देशों पर चर्चा की। सुश्री दास ने ड्रामा में 'नट' के उद्भव और उसकी भूमिका के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व के बारे में बताया। श्री गौतम हालदार ने एक नाटक में किसी के मनोभावों को व्यक्त करने में 'नट' (अभिनेता) की भूमिका पर विवेचना की। उन्होंने *मृच्छकटिक* और टैगोर की कविताओं से उद्धरण भी दिए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. मिहिर कुमार साहू ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पंजाबी साहित्य में महिलाएँ

19 मार्च 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 19 मार्च 2021 को पंजाबी साहित्य में महिलाओं के योगदान और भूमिका पर आभासी मंच पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बहुत ख़ास था क्योंकि पंजाब विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग की प्रमुख डॉ. जसपाल कौर, जिन्होंने कई पुस्तकें लिखीं तथा उन्हें कई पुरस्कार

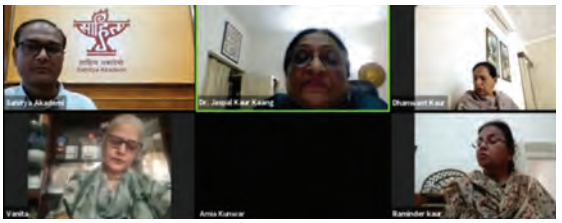

परिसंवाद का दृश्य

भी प्रदान किए गए, ने मध्ययुगीन अवधि विशेषकर गुरबाणी और श्री गुरुग्रंथ साहिब के संदर्भ में महिलाओं की भूमिका से संबंधित वार्ता की। कई आलोचनात्मक पुस्तकों की लेखिका और कई पुरस्कारों से सम्मानित पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के पंजाबी विभाग की प्रमुख डॉ. धनवंत कौर ने बहुत संतुलित तरीक़े से 20वीं सदी से अब तक पंजाबी कहानियों में महिलाओं की भूमिका और स्थिति पर बात की। विशिष्ट विद्वान तथा गुरुनानक देव विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग प्रमुख ने 'उपन्यास' विधा पर संवाद प्रस्तुत किया। उन्होंने बेहिचक यह बताया कि पंजाबी उपन्यासों में महिलाओं को कैसे प्रस्तुत किया जाता है, परंतु उन्होंने अपना वर्णन और विश्लेषण महिला लेखकों द्वारा सृजित साहित्य व एक महिला के दृष्टिकोण की ओर से प्रस्तुत किया। श्री गुरु तेगबहादुर खालसा कॉलेज की एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. अमरजीत कौर ने आधुनिक कविता के बारे में अपने विचार साझा किए, वे स्वयं भी एक कवयित्री और अनुवादक हैं। उन्होंने कवयित्रियों द्वारा लिखित आधुनिक कविता पर चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता एस.जी.टी.बी. खालसा कॉलेज के सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ेसर और पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वनीता ने की। डॉ. वनीता एक कवयित्री, आलोचक, अनुवादक तथा 50 से अधिक पुस्तकों की लेखिका हैं। डॉ. वनीता ने वक्ताओं पर बोलने के साथ-साथ पंजाबी में मध्ययुगीन काल से पश्च महिलावादी साहित्य तक नारीवाद पर बात की तथा पंजाबी साहित्य में पुरुष अवलोकन पर भी चर्चा की। अंत में श्री अनुपम तिवारी ने वक्ताओं को धन्यवाद दिया।

खारवार से कोंकणी कहानियाँ- पठन और वार्ता पर परिसंवाद

19 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा आभासी मंच पर आयोजित परिसंवाद 'खारवार से कोंकणी कहानियाँ-पठन और वार्ता' में खारवार से कोंकणी कहानियों पर वार्ता और पठन शामिल था। परिसंवाद का सीधा प्रसारण 19 मार्च 2021 को यूट्यूब पर किया गया। साहित्य अकादेमी, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। जाने-माने शोधकर्ता श्री दीपराज सतारडेकर ने बीज भाषण दिया। उन्होंने बताया

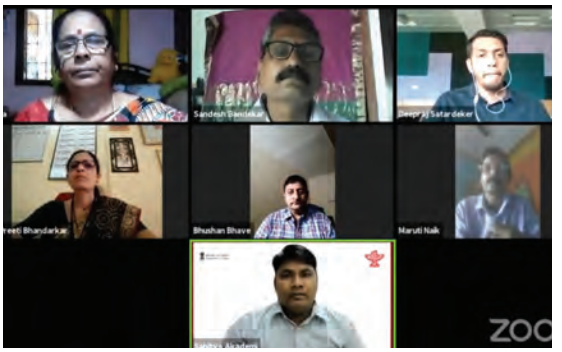

परिसंवाद का दृश्य

कि बोली, भाषा की विपुलता में वृद्धि करती है। उन्होंने विशेष रूप से कोंकणी भाषा में खारवारी बोली का संदर्भ दिया। कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्या सुश्री उषा राणे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अगले सत्र में श्री संदेश बांदेकर, सुश्री प्रीति भंडारकर और सुश्री वैशाली नायक ने कुछ कहानियाँ पढ़ीं और अपने विचार रखे। डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'महाकाव्य परंपरा और समकालीन भारतीय साहित्य' पर संगोष्ठी

20-21 मार्च 2021, मोइरंग, मणिपुर

भारतीय उपमहाद्वीप के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले

(बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री एन. किरणकुमार सिंह, श्री रतन थियाम, श्री बीरबाबू सिंह तथा श्री के. मोहनचंद्र

महाकाव्यों को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने थानजिंग यागिरेल मरूप, मोइरंग तथा लोकतक खोरजेई लूप, थांगा के सहयोग में 20-21 मार्च 2021 को 'महाकाव्य परंपरा और समकालीन भारतीय साहित्य' पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन आईएनए, मारटिरस् मेमोरियल कॉम्पलेक्स, मणिपुर में किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया तथा साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एन. किरणकुमार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रसिद्ध रंगमंच निर्देशक श्री रतन थियाम ने मानवीय सभ्यता के दौरान महाकाव्यों के अद्भुत प्रभाव तथा भारत व विश्व के सामाजिक-धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास पर गहरे प्रभाव के संबंध में विचारोत्तेजक भाषण दिया। श्री थियाम ने महाकवि हिजाम अनगांघल द्वारा लिखे गए महाकाव्य 'खम्बा तोईबी शेरेंग' के योगदान पर भी चर्चा की। उद्घाटन सत्र के सम्माननीय अतिथि श्री एल. बीरबाबू सिंह, उपाध्यक्ष, लोकतक खोरजेई लूप ने संगोष्ठी आयोजन हेतु साहित्य अकादेमी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठियाँ विभिन्न भाषाओं तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के साहित्य का एक दूसरे से परिचय करवाने के साथ-साथ शैक्षणिक चर्चा हेतु नए मार्ग भी खोलती हैं। थानजिंग यागिरेल मरूप, मोइरंग के उपाध्यक्ष श्री के. मोहनचंद्र ने मणिपुर राज्य की समृद्ध मौखिक परंपरा के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. रवैल सिंह (पंजाबी) ने की। सत्र का विषय था—'धमर्रू अधिकार संहिता और नैतिक आचरण'। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुश्री जय मित्र (बाङ्ला) द्वारा की गई तथा डॉ. राजेंद्र मेहता (गुजराती) एवं प्रो. एम. नरेंद्र (तेलुगु) ने 'स्वदेश और विदेश में भारतीय महाकाव्यों का अभिग्रहण' पर आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे दिन श्री एन. किरणकुमार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस. रंगनाथ (संस्कृत) ने की। डॉ. फूकन चंद्र बसुमतारी (बोडो) तथा श्री एस.आर. विजयशंकर (कन्नड) ने 'हमारे महाकाव्यों में अंतर्वेशन और संशोधन' पर आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. एस. रंगनाथ ने 'धार्मिक साहित्य और संस्कृति' में महाकाव्य और इसके प्रभाव के संबंध में कुछ मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की। डॉ. बसुमतारी ने समकालीन बोडो साहित्य में महाकाव्य रूपांकनों के प्रभाव पर बात करने के साथ-साथ मौखिक कथ्यों के महत्त्व पर भी बल दिया। श्री एस.आर. विजयशंकर ने 'कन्नड साहित्य में रामायण और महाभारत' के प्रभाव तथा किस प्रकार महाकाव्य कर्नाटक के सांस्कृतिक व धार्मिक परिदृश्य में व्याप्त हैं, पर चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि कन्नड साहित्य के विकास में अनुवाद कार्य ने महान भूमिका निभाई। अध्यक्ष की टिप्पणी के साथ सत्र समाप्त हुआ।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री शमीम तारिक़ (उर्दू) ने की। इस सत्र में 'लोक संस्करण में हमारे महाकाव्य/ मनुष्य के जीवन व संघर्षों को दर्शाते महाकाव्य'' विषय पर, डॉ. प्रदीप्त कुमार पांडा (ओड़िआ), डॉ. खेमराज नेपाल (नेपाली) तथा श्री बुलाकी शर्मा (राजस्थानी) ने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. पांडा ने बताया कि किस प्रकार *महाभारत* और *रामायण* जैसे महान महाकाव्य ओड़िआ साहित्य में प्रविष्ट हुए तथा ओडिशा की लोक मान्यताओं रिवाज़ों तथा परंपराओं को आकार दिया। इन महाकाव्यों ने ओडिशा राज्य के लोगों के जीवन पर अमिट छाप छोड़ी और पिछली कई शताब्दियों से यह महाकाव्य जीवन के विविध पक्षों पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। डॉ. खेमराज नेपाली ने नेपाली साहित्य में रामायण

के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार लोक साहित्य और संस्कृति के अवयव इन महाकाव्यों से प्रभावित हुए हैं। श्री बुलाकी शर्मा ने राजस्थानी साहित्य पर रामायण के प्रभाव की चर्चा की। सत्र के अंत में अध्यक्ष ने टिप्पणी दी। पंचम सत्र का आरंभिक वक्तव्य श्री एन. किरणकुमार ने दिया। सत्र की अध्यक्षता श्री एन. खगेंद्र सिंह ने की। सत्र में श्री एल. जॉयचंद्र सिंह ने 'मणिपुर की कला, साहित्य, संस्कृति पर खम्बा थोइबी शेरेंग के प्रभाव' पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. चिरोम राजकेतन सिंह ने 'हिजाम अनगाघंल का खम्बा तोईबी शेरेंग एक महाकाव्य के रूप में' पर तथा डॉ. एच. बिहारी सिंह ने 'महाकवि अनगाघंल का खम्बा तोईबी शेरेंग एक साहित्यिक काव्य के रूप में' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

विश्व कविता दिवस पर काव्यपाठ

21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने विश्व कविता दिवस के अवसर पर 21 मार्च 2021 को प्रसिद्ध बहुभाषी कवियों - श्री अनुभव तुलसी (असमिया), सुश्री पायल सेनगुप्ता (बाङ्ला), सुश्री मंजू रानी दैमारी (बोडो), श्री प्रह्लाद शर्मा (मणिपुरी), सुश्री कमला राई (नेपाली), सुश्री रंजीता नायक (ओड़िआ) तथा श्री शिबू सोरेन (संताली) के साथ आभासी मंच पर काव्यपाठ कार्यक्रम आयोजित किया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण दिया तथा वक्ताओं का परिचय करवाया। सभी प्रतिभागियों ने अपनी कविताएँ अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद सहित अपनी भाषा में पढ़ीं। श्री तुलसी की कविताओं में 'स्वाधीनता', सुश्री पायल सेनगुप्ता की कविताओं में 'भालोबाशा अमार देश' शामिल थीं।

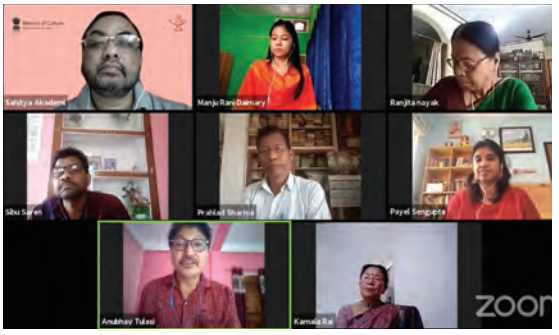

डॉ. मिहिर कुमार साहू, सुश्री मंजू रानी दैमारी, सुश्री रंजीता नायक, श्री शिबू सोरेन, श्री प्रह्लाद शर्मा, सुश्री पायल सेनगुप्ता, श्री अनुभव तुलसी तथा सुश्री कमला राई

विश्व कविता दिवस

21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अकादेमी की वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 21 मार्च 2021 को 'विश्व कविता दिवस' के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन आभासी मंच पर आयोजित किया, जिसमें गुजराती, कोंकणी, मराठी तथा सिंधी भाषा के कवियों को अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ उनके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद सहित पढ़ने के लिए आमंत्रित किया गया। आरंभ में जाने-माने गुजराती कवि हरीश मीनाश्रु ने अपनी कविता 'अख़बार वाला छोकरा, साधो कहाँ ढूँढ़ना गंगा' आदि सुनाई जिसमें प्रकृति की संवेदनशीलता और सच्चाई का उल्लेख किया गया है। प्रसिद्ध कोंकणी कवि प्रकाश नाईक ने अपनी कविता 'पंखा' हिंदी अनुवाद सहित सुनाई। प्रसिद्ध मराठी प्रफुल्ल शिलेदार ने 'हे परमेश्वर', 'नदी' और 'समुद्र' कविताएँ

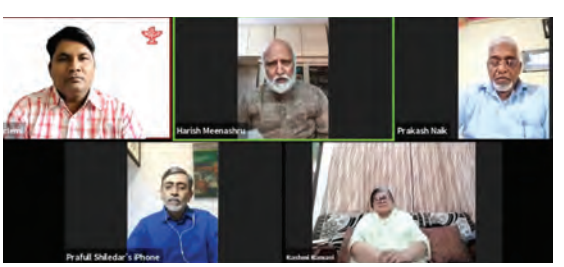

डॉ. ओम प्रकाश नागर, श्री हरीश मीनाश्रु, श्री प्रकाश नाइक, श्री प्रफुल्ल शिलेदार तथा सुश्री रश्मि रमानी

सुनाईं। सम्मिलन की अंतिम प्रतिभागी वरिष्ठ सिंधी कवयित्री रश्मि रमानी ने अपनी सिंधी कविता 'स्त्री होने के बावजूद' हिंदी अनुवाद सहित सुनाई। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने किया।

बहुभाषी कविता पाठ

21 मार्च 2021(आभासी मंच)

विश्व कविता दिवस के अवसर पर 21 मार्च 2021 को साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने बहुभाषी कविता-पाठ का आयोजन आभासी मंच पर किया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने आरंभिक भाषण दिया तथा प्रतिभागी कवियों को आमंत्रित किया। सुविख्यात कन्नड कवि श्री शुद्रा श्रीनिवास, प्रख्यात मलयाळम् कवि श्री देशमंगलम रामकृष्णनं, तमिळ् कवि श्री ना.वे. अरुल तथा जाने-माने तेलुगु कवि श्री वाई. मुकुंद रामाराव ने कार्यक्रम में अपनी कविताएँ सुनाईं।

वक्ताओं का स्वागत करते हुए क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने कहा कि कविता हमारे जीवन का सार है कविता सभी विधाओं की माँ है। *विश्व कविता दिवस* भाषा संबंधी बहुलता का उत्सव है। उन्होंने विश्व के महान कवियों कालीदास, माघ, पम्पा, राना, शेक्सपियर, विलियम वर्ड्स्वर्थ, रवींद्रनाथ ठाकुर तथा अन्य को याद किया, जिन्होंने विश्व कविता को समृद्ध किया।

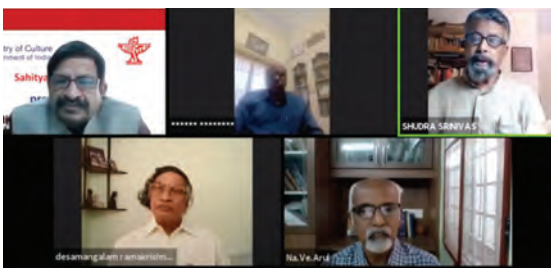

श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, श्री वाई. मुकुंद रामाराव, श्री शुद्रा श्रीनिवास, डॉ. देशमंगलम रामकृष्णनं तथा श्री ना.वे. अरुल

कन्नड की प्रख्यात लेखक और कार्यकर्ता श्री शुद्रा श्रीनिवास ने *विश्व कविता दिवस* के महत्त्व पर विस्तार से बात करते हुए अपने साथी कवियों को बधाई दी। फिर उन्होंने कन्नड में दो कविताएँ पढ़ीं। एक तो साहित्य अकादेमी के पुरस्कार विजेता कन्नड कथा लेखक पी. लंकेश को श्रद्धांजलि स्वरूप थी जिसमें लेखक के सौम्य व्यक्तित्व का उल्लेख था, इन्हें अपने लेखन और आवधिक 'लंकेश पत्रिके' के कारण मेस्त्रु (शिक्षक) के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने सामाजिक सरोकार की एक कविता भी पढ़ी जो उनके नागरिक अधिकार और सामाजिक सशक्तीकरण के कार्यकर्ता के रूप में अनुभवों से समृद्ध थी।

मलयाळम् के प्रोफ़ेसर तथा प्रख्यात मलयाळम् कवि डॉ. देशमंगलम रामकृष्णनं ने अपनी महत्त्वपूर्ण कविताएँ पढ़ीं। एक कविता गाँधी और स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित रूपक कविता थी। केरल की संस्कृति के प्रति उनका प्रेम उनकी कविताओं में समाविष्ट है, साथ ही कविता के माध्यम से वह लोगों के प्रयोजनों को उच्च एवं धीमी सुरसंगति में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने *विश्व कविता दिवस* पर सुस्पष्ट ढंग से चर्चा की और बताया कि अनुदेश के माध्यम के रूप में कविता मलयाळम् में साहित्य संग्रह के सृजन की अभिव्यक्ति में निर्णायक है।

श्री ना.वे. अरुल ने अपने संबोधन में कहा कि हम सभी अपनी भाषाओं में कविता का उत्सव मानते हैं परंतु हमें साहित्य अकादेमी को विभिन्न भाषाओं में कविता-पाठ के साथ *विश्व कविता दिवस* मनाने के लिए बधाई देना चाहिए। उन्होंने *कविताई, कादावुल* तथा *सेलून शॉप* तीन कविताएँ पढ़ीं। *विश्व कविता दिवस* को समर्पित उनकी प्रथम कविता महाकवि सुब्रह्मण्यम भरतियार को श्रद्धांजलि थी। उनकी कविता सुब्रह्मण्यम भरतियार की रचनाओं, जो तमिळ् का वास्तविक निधि है, से भी अग्रगामी सोच से समृद्ध थी कि किस प्रकार सांसारिक कार्य एक कविता में बुन दिए जाते हैं। कविता *कविताई* एक महान कवि को श्रद्धांजलि थी। तीसरी कविता एक अनुभवहीन नाई द्वारा काटे गए बालों के

अनुभव के माध्यम से दैनिक क्रियाओं का वर्णन करती है। उन्होंने बहुत व्यंग्यात्मक और हास्यकर कविताएँ पढ़ीं।

सुविख्यात तेलुगु कवि श्री वाई. मुकुंदराव ने एक यादगार काव्य दिवस के लिए साथी कवियों को बधाई दी। उन्होंने अपनी तेलुगु की कविताएँ 'आलोचनामलो' (गहरे विचारों में), 'ई मेघालु एमिटो' (बादल) तथा 'वक्र रेखालु' (वक्र रेखाओं में) पढ़ीं।

नारी चेतना (मलयाळम्)

21 मार्च 2021, पुष़ानाद, तिरुअनंतपुरम, केरल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने भावना पुस्तकालय पुष़ानाद, तिरुअनंतपुरम, केरल के सहयोग से *विश्व कविता दिवस* के अवसर पर 21 मार्च 2021 को 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया। साहित्य समुदाय तथा आमजन से कार्यक्रम को सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। यह कार्यक्रम महिला लेखकों के लिए था ताकि वो अपनी जीवन यात्रा और लेखन के अनुभवों को साझा कर सकें।

कार्यक्रम का आयोजन भावना पुस्तकालय, तिरुअनंतपुरम में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मेरी मेबल ने की तथा प्रसिद्ध मलयाळम् कवयित्री एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. आर्याम्बिका ने दीप प्रज्जवल करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

उद्घाटन भाषण में, डॉ. आर्याम्बिका ने कहा कि एक महिला का जीवन अधिक सृजनात्मक है। उन्होंने कहा कि माँएँ, बहनें और दादियाँ अपना कार्य रचनात्मक तरीक़े से करती हैं। उन्होंने बच्चों के लालन-पालन के उदाहरण से इसे समझाया क्योंकि बच्चों का मस्तिष्क उनके परिवार के सदस्यों द्वारा सुनाई गई कहानियों और गीतों से प्रभावित होता है। उन्होंने केरल के महान कवि वल्लतोल नारायण मेनन को याद किया, जिन्होंने कहा था कि वे जितनी बार भी अपनी माता से बात करेंगे, वे हर बार एक नई कविता लिख सकते हैं।

कार्यक्रम में व्याख्यान देती हुई एक प्रतिभागी

डॉ. आर्याम्बिका ने कहा कि महिलाएँ जब गर्वित होती हैं तभी उन्हें सम्मान मिलता है। 'लेखन की तरह, महिलाओं को भी रचनात्मक होने के लिए स्वतंत्रता चाहिए तथा महिलाओं के परिवार के सदस्यों को इस स्वतंत्रता के बारे में याद दिलाते रहना चाहिए।

अपने बीज भाषण के दौरान साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री एल.वी. हरिकुमार ने कहा कि साहित्य अकादेमी कई कार्यक्रमों का आयोजन करती है, कोविड-19 लॉकडाउन तथा एकत्रित होने की पाबंदियों के कारण अकादेमी ऑनलाइन माध्यम से ही कार्यक्रमों का आयोजन कर सकी। प्रतिबंधों में ढील की वजह से अब अकादेमी 'नारी चेतना' कार्यक्रम आयोजित कर सकी है।

श्री एल.वी. हरिकुमार ने महिला लेखकों को मुख्यधारा में लाने के साहित्य अकादेमी के ऐतिहासिक मिशन को पूरा करने की साहित्य अकादेमी की प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम महिला लेखकों को अपने लेखन अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए वादा किया कि अकादेमी भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करेगी।

प्रसिद्ध लेखक एवं अनुवादक डॉ. रेमा उन्नीथन, आरती कोत्तुर तथा प्रिया श्याम ने कार्यक्रम में भाग लिया और अपने लेखन अनुभवों के बारे में बताया।

राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी पुष़ानाद गाँव में 'नारी चेतना' का आयोजन कर रही है जो कि तिरुअनंतपुरम शहर से 30 कि. मी. की दूरी पर है। गाँव के लोगों ने इस प्रयास को

सराहा। भावना पुस्तकालय के संयोजक राजेश कृष्णनं ने अतिथियों का स्वागत किया जबकि सचिव टी. गंगन ने धन्यवाद व्यक्त किया।

'असमिया साहित्य की स्थिति, प्रवृत्तियाँ और परिपाटी' पर संगोष्ठी

22-23 मार्च 2021, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी ने तेजपुर विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के सहयोग से 'असमिया साहित्य की स्थिति, प्रवृत्तियाँ और परिपाटी' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 22-23 मार्च 2021 को किया। संगोष्ठी विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्वानों को एक साथ लाने के लक्ष्य से आयोजित की गई थी। विद्वानों ने समकालीन असमिया साहित्य से संबंधित कई सरोकारों पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी का उद्घाटन 22 मार्च 2021 को किया गया। स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि प्रकृति और जीवन के बीच निरंतर परिवर्तन होता है तथा प्रकृति को हमारे जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। साहित्य विलक्षण है। यह न केवल जीवन का प्रतिबिंब है बल्कि लोगों की आशाओं व आकांक्षाओं का प्रतीक भी है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पिछले दशक के विलक्षण लेखकों तथा विद्वानों के साथ-साथ विविध विधाओं के उदय की बात की। उन्होंने कहा कि अरुणी कश्यप, उद्दीपना गोस्वामी, अरूप कुमार तांती तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण रचनाकारों के कारण असम के साहित्य का भविष्य हैं। असमिया साहित्य ने अनुवाद के क्षेत्र में भी काफ़ी कुछ किया है तथापि दूसरी संस्कृतियों और साहित्य से बढ़कर और श्रेष्ठ साहित्य असमिया में लाए जाने की आवश्यकता है ताकि यह साहित्य और समृद्ध हो। अपने भाषण के अंत में उन्होंने अनुवाद की महत्ता पर बात की जिसके माध्यम से असमिया साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके। नागालैंड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और तेजपुर विश्वविद्यालय के एमबीबीटी विभाग के प्रोफ़ेसर बोलिन कंवर ने उद्घाटन भाषण में पिछली दो शताब्दियों के दौरान असमिया साहित्य के इतिहास पर बात की। उन्होंने विज्ञान साहित्य और लेक्सिकोग्राफी पर भी चर्चा की। उनके अनुसार विचक्राफ्ट जैसे मुद्दों पर लोगों को शिक्षित करने हेतु विज्ञान साहित्य निर्णायक भूमिका अदा करता है। उन्होंने असमिया साहित्य के कुछ प्रमुख प्रख्यात लेखकों का नाम लिया। प्रख्यात आलोचक प्रदीप आचार्य ने बीज-भाषण दिया। सुब्रत ज्योति नियोग ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

स्वागत भाषण देते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव, साथ में हैं प्रो. बोलिन कंवर, डॉ. ध्रुवज्योति बोरा तथा डॉ. प्रदीप आचार्य

प्रथम सत्र का विषय 'विश्व में समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ और असमिया साहित्य की स्थिति' था, जिसकी अध्यक्षता श्री प्रदीप आचार्य ने की। प्रथम सत्र में एम. कमालुद्दीन अहमद ने 'पश्च-आधुनिक और समकालीन असमिया कविताएँ' पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने पिछले दो दशकों में असम में अशांति और साहित्य पर इसके प्रभाव की बात की। विरोधों और अराजक स्थिति ने लेखकों के जीवन को भी प्रभावित किया है। पश्च-आधुनिक साहित्य इस अशांति को संबोधित करता है। उनके बाद श्री विभास चौधरी ने तीन लेखकों की कहानियों पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि असमिया साहित्य की स्थिति को परिभाषित करना आसान नहीं है। सत्र के अंतिम वक्ता श्री प्रभात बोरा ने 'मेटाफिक्शन' पर आलेख प्रस्तुत किया। विभास चौधरी की तरह उन्होंने भी वर्तमान समय में असमिया साहित्य की स्थिति पर सवाल उठाया।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 'समकालीन असमिया साहित्य में शोषितों की उपस्थिति तथा अन्य मुद्दे' पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता श्री विभास चौधरी ने की। द्वितीय सत्र में चार प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री दिलीप फूकन ने व्याख्या की कि किस प्रकार कहानियों में हाशिये पर रह रहे चरित्रों और हाशिये की भाषाओं के प्रयोग ने एक दूसरे को समझने में मदद की है। सुश्री गीताली शइकीया ने 'समकालीन असमिया काव्य में वर्णित अधिकारहीन वर्गों और जातियों' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाषा किस प्रकार विद्रोह हेतु हथियार बन जाती है और इसका समुचित प्रयोग सत्ता निर्माण में अनुवर्ती परिवर्तन का नेतृत्व कर सकता है। श्री देवभूषण बोरा ने अनामिका बोरा के उपन्यास 'अस्तिव' का विश्लेषण किया। श्री दालिम दास ने असमिया साहित्य, विशेषकर कहानियों में वर्तमान प्रवृत्तियों पर आलेख प्रस्तुत किया। इसके लिए उन्होंने मोनिका देवी, पंचानन हाज़रिका, अभिजीत बोरा आदि का संदर्भ दिया।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र का विषय था—'असमिया साहित्य में इतिहास का प्रतिनिधित्व और पुनर्रचना', इस सत्र की अध्यक्षता श्री प्रभात बोरा ने की। इस सत्र में चार प्रतिभागी थे— श्री चंदन कुमार शर्मा ने 'अभिलेख से आगे' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया तथा ध्रुवज्योति बोरा के उपन्यास 'अजार' का विश्लेषण किया। श्री अरिंदम बरकाकाती ने साहित्य, इसकी भूमिका और इतिहास को आकार देने में इसकी क्षमता पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री ओशुमी कंदली ने लेखक की आंतरिक/बाहरी दुविधा पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री जूरी दत्ता ने तीन विषय वस्तुओं पर बल देते हुए नव हिस्टोइज़्म और किस प्रकार व्यक्तिगत कथ्य साहित्य को रचते हैं, पर आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री रॉबिन डेका ने की तथा विषय था 'असमिया साहित्य तथा ईको आलोचना' इस सत्र में श्री ज्योतिषमन दास ने चयनित असमिया उपन्यासों में ईको आलोचना पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री दिव्यज्योति बोरा ने चयनित असमिया कविता में ईको आलोचना पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री मानवेंद्र शर्मा ने बादुंगदुप्पा के थिएटर पर आलेख प्रस्तुत किया।

'लिंगभेद और असमिया साहित्य' विषयक पंचम सत्र की अध्यक्षता चंदन कुमार शर्मा ने की। इस सत्र में चार प्रतिभागियों ने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री अरूपा पतंगिया कलिता ने अपने उपन्यास 'टोकोरा बाहोर सोनार बेजी' का विश्लेषण करते हुए तीन पीढ़ियों में महिला चरित्रों और समय की बदलती भूमिकाओं और स्थिति की व्याख्या की। सुश्री गरिमा कलिता ने कुछ प्रख्यात महिला लेखकों के उपन्यासों के संबंध में समानता और भेद पर वार्ता की। सुश्री पोली हिलोदारी ने पश्च-आधुनिकता की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हुए वाद के पक्ष में बात की क्योंकि वाद ने द्विगुणों पर प्रश्न उठाए जिसकी आधुनिकतावाद में उपेक्षा हुई सुश्री लखीप्रिया गोगोई ने असमिया साहित्य में पुरुषार्थ के चित्रण पर आलेख प्रस्तुत किए।

षष्ठ सत्र में 'असमिया साहित्य तथा अनुवाद अध्ययन' विषय की अध्यक्षता श्री चंदन कुमार शर्मा ने की। इस सत्र में श्री संजीव साहू ने अनुवाद और बाज़ार नीतियों पर आलेख प्रस्तुत करते हुए उस अंतराल को दिखाया जो अक्सर अनुवाद नहीं भर पाता।

कार्यक्रम के अंत में सत्र की अध्यक्षता तेजपुर विश्वविद्यालय के असमिया विभाग की विभाग प्रमुख डॉ. सुब्रत ज्योति नाग ने की। ज्योतिषमन दास, सहायक प्रोफ़ेसर, असमिया विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय ने आयोजक समिति की ओर से धन्यवाद दिया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव पर कवि सम्मिलन

23 मार्च 2021, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश करने पर आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 23 मार्च 2021 को अपना पहला कार्यक्रम - *भारत के 75*

कवि सम्मिलन का दृश्य

वर्ष पर हिंदी कवि सम्मिलन आयोजित किया। प्रख्यात हिंदी कवियों कुँवर बेचैन, अशोक चक्रधर, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, सरिता शर्मा तथा उपेंद्र कुमार पांडेय ने अपनी देशभक्ति की कविताओं से श्रोताओं को अभिभूत किया।

कार्यक्रम के आरंभ में, अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सूती गाँधी माला के साथ सभी का स्वागत किया तथा माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा आरंभ आज़ादी के अमृत महोत्सव के बारे में श्रोताओं को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि आज के कार्यक्रम की प्रतिष्ठा शहीदी दिवस के अवसर पर आयोजित होने के कारण बढ़ गई है। वरिष्ठ कवि कुँवर बेचैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता तथा लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने संचालन किया।

'कवि सम्मिलन' की शुरुआत उपेंद्र कुमार पांडेय के गीत से हुई जिसमें उन्होंने शहीदों को याद किया और युवाओं को विवेकानंद से प्रेरणा लेने की अपील की। सरिता शर्मा ने एक युवा शहीद की पत्नी की संवेदना, जिसमें शहीद का प्रेम पत्नी की बजाय देश के लिए अधिक है, का वर्णन करते हुए छू जाने वाला गीत गाया।

अशोक चक्रधर ने अपनी कविता में स्वतंत्रता सेनानी मजूमदार के अनुभवों को व्यक्त किया, जो कि सेल्यूलर जेल में थे। उन्होंने कविता में वर्णन किया कि किस प्रकार ब्रिटिशों के हर अत्याचार पर क्रांतिकारियों के मुँह से वंदेमातरम् निकलता था। लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने छंदों में स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित कई सच्ची कहानियाँ प्रस्तुत कीं तथा शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक गीत भी सुनाया। कवियों ने सभी से भाषा और धर्म की दीवार तोड़कर एक होने तथा एक सुंदर गीत के माध्यम से राष्ट्र को आगे ले जाने की अपील की।

मानवतावाद के दर्शन के संदर्भ में : इक़बाल, टैगोर तथा राधाकृष्णन पर परिसंवाद

25 मार्च 2021, मुजफ्फरपुर, बिहार

साहित्य अकादेमी ने बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के सहयोग से 'मानवतावाद के दर्शन के संदर्भ में : इक़बाल, टैगोर तथा राधाकृष्णन' पर 25 मार्च 2021 को परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के छात्रों तथा स्थानीय उर्दू प्रेमियों ने भाग लिया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात लेखकों एवं रजिस्ट्रार ने दीप प्रज्वलित करके किया। उर्दू विभाग के प्रमुख प्रो. हामिद अली खान ने सभी प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया और इक़बाल, टैगोर तथा राधाकृष्णन जैसे लेखकों में मानवतावाद के दर्शन के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण विषय पर राष्ट्रीय स्तर के परिसंवाद के आयोजन में सहयोग देने के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद दिया। प्रो. एहसान अशरफ़ ने बीज-भाषण दिया तथा इस समय के ज्वलंत मुद्दे पर चर्चा के कारण इस परिसंवाद को ऐतिहासिक बताया। आगे उन्होंने कहा कि भारत बहुसंस्कृति और पहचान का प्रतिमान

बाएँ से दाएँ : श्री मोहम्मद मूसा रज़ा, प्रो. रवि कुमार सिन्हा, प्रो. आले ज़फ़र, प्रो. हामिद अली ख़ान, प्रो. दबीर अहमद, प्रो. हुमायूँ अशरफ़ तथा प्रो. शहाब ज़फ़र आज़मी

है तथा इक़बाल, टैगोर और डॉ. राधाकृष्णन विभिन्न राष्ट्रीयताओं और समुदायों में सुविख्यात थे। जहाँ इक़बाल पवित्र कुरान की शिक्षाओं और पश्चिमी जीवन दर्शन से प्रभावित थे, वहीं टैगोर और राधाकृष्णन को वेदांत, उपनिषद और गीता से प्रेरणा मिली।

अपने संबोधनों में प्रो. मनोज कुमार तथा प्रो. प्रमोद कुमार ने उपमहाद्वीप के दो महान कवियों को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें 'पूर्व की आवाज़' कहा तथा उनका अभिनंदन करते हुए कहा कि उनकी कविता हमारी राष्ट्रीय भावनाओं के उत्थान के साथ-साथ स्वतंत्र राष्ट्र के अर्थ की व्याख्या करती हैं।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. दबीर अहमद ने व्यक्त किया कि विषय की महत्ता को देखते हुए परिसंवाद के कुछ घंटे पर्याप्त नहीं हैं। बल्कि सभी विचारधाराओं तथा विचारों के आलोक में इस विषय पर विस्तृत चर्चा की आवश्यकता है। उन्होंने वक्ताओं द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की सराहना की और कहा कि इससे विषय पर चर्चा और संवाद के नए रास्ते खुलेंगे। आमंत्रित अतिथियों और श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए अकादेमी की उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. हुमायूँ अशरफ़ ने भविष्य के कार्यक्रमों में साहित्य अकादेमी के और अधिक सहयोग की आशा व्यक्त की।

आलेख प्रस्तुति के दूसरे सत्र में जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के उर्दू विभाग के प्रमुख प्रो. अरशद मसूद हाशमी, प्राचार्य आर.के. सिन्हा तथा आर.एन. कॉलेज के प्रो. सुमन सिन्हा, प्रो. दबीर अहमद (कोलकाता), विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारी बाग के उर्दू विभाग के डॉ. हुमायूँ अशरफ, पटना विश्वविद्यालय के विभाग प्रमुख प्रो. शहाब जफ़र आज़मी तथा सेंट्रल विश्वविद्यालय, गया के डॉ. कफ़ील अहमद ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद में प्रस्तुत किए गए सभी आलेखों का निष्कर्ष था कि इक़बाल और टैगोर दोनों ही महान कवि थे जिन्होंने मनुष्य को बड़ी ताक़त माना और अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्र की विरासत और अभिमान का अन्वेषण किया। उनकी राय यह भी थी कि डॉ. राधाकृष्णन एक महान विचारक थे जिन्होंने ऐसी राष्ट्रीय संस्कृति की वकालत की जिससे हमारे देश और लोगों की शान बढ़े।

'तमिऴ साहित्य तथा व्याकरण में मौजूद प्रवृत्तियाँ' पर परिसंवाद

25 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के चेन्नई स्थित उप-कार्यालय ने अकादेमी की वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 25 मार्च 2021 को 'तमिऴ साहित्य तथा व्याकरण में मौजूद प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन आभासी मंच के अंतर्गत किया। साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य के प्रसार हेतु पूरे भारत में किए जा रहे प्रयासों के बारे में संक्षेप में बताया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. सुंदर मुरुगन ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने परिसंवाद के विषय से परिचित करवाते हुए तमिऴ साहित्य में मौजूद प्रवृत्तियों की चर्चा की। उन्होंने संक्षेप में आधुनिक तमिऴ कथा साहित्य में प्रस्तुत समस्याओं और समाधान तथा सामाजिक परिदृश्यों पर सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। उनके बाद साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री पुदुवई युगभारती ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा तमिऴ साहित्य और व्याकरण में वर्तमान प्रवृत्तियों पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती की रचनाओं का उल्लेख किया जो

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, प्रो.सी. वासुकी, श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, डॉ. सी. ईलुमलै, डॉ. के. कावेरी, श्री पुधुवइ युगभारती, डॉ. के. पंजंगम, डॉ. एस. थिरूनावुक्करासु, डॉ. सुंदर मुरुगन तथा डॉ. थिरुप्पुर कृष्णनं

20वीं सदी में तमिऴ काव्य को ऊँचाईयों तक लेकर गए और उनके निधन के कई दशकों बाद भी, तमिऴ साहित्य में उनका लेखन गुंजायमान है। उन्होंने कहा कि बी.एस. रमैया की साहित्यिक पत्रिका 'मनीक्कोडी' और सी.एस. चेलप्पा के 'ईमुथु' में सृजनात्मक लेखन की बारीकियाँ हैं। वानमपदी आंदोलन के कई कवि तमिऴ कविता को वृहद तमिऴ लोगों तक लेकर गए। उन्होंने राष्ट्रकवि भारती द्वारा तत्कालीन समय में निर्मित नए मार्ग पर बात की, जिस समय हर कोई सामाजिक मुद्दों और परंपराओं के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण रखता था। अपने वक्तव्य के अंत में श्री पुदुवई युगभारती ने आधुनिक कवियों को नए विचार अंतर्ग्रहण करने और ऐसे ट्रेंडसेटर रचयिताओं द्वारा स्थापित आदर्शों के अनुसार वास्तविकतावादी साहित्य रचने की नसीहत दी।

विचार सत्र में, डॉ. के. पंजनगम ने 'स्त्रीवादी काव्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने आधुनिक कथा साहित्य में महिलाओं के अस्तित्व और उनके लिए उपलब्ध स्थान का विश्लेषण करते हुए माना कि अन्य विधाओं की बजाय कविता महिलाओं की भावनाओं को व्यक्त करने का आदर्श माध्यम है। 20वीं सदी के साहित्य में महिलाओं को कमज़ोर, उपेक्षित, मृदु तथा दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में दिखाया गया है। तथापि 1990 के बाद स्त्रीवाद को प्राधान्य मिला। महिलाओं की शिक्षा और रोज़गार के माध्यम से नई पीढ़ी की महिलाओं के सशक्तीकरण ने पूरे दृश्य को बदल दिया। महिलाएँ स्वतंत्र, मज़बूत, व्यक्तिपरक हुईं तथा यथापूर्व स्थिति के प्रति विद्रोह भी किया। लीना मनीमेगालाई, मालती मैत्री, कुट्टी रेवती, सलमा, सुकीर्तारानी और कृष्णाग्नि अग्रणी लेखिकाओं के रूप में सामने आईं। वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो उन्होंने युवा महिला लेखकों मानुषी, मुबीन साधिका, इलाम्पीराई की सराहना की जो नवोन्मेषी होने के साथ-साथ विद्रोही भी हैं। बाद में डॉ. तिरुप्पूर कृष्णन ने 'साहित्यिक पत्रकारिता' पर आलेख प्रस्तुत किया जिसमें उच्चवर्गवादी साहित्य के समक्ष छोटी पत्रिकाओं द्वारा वृहद रूप से प्रकाशित प्रसिद्ध साहित्य का उल्लेख किया गया था, यद्यपि थोड़े समय के लिए 'मनीक्कोडी' पत्रिका ने लेखकों के ऐसे समूह का पोषण किया जिन्होंने आधुनिक तमिऴ साहित्य में पूर्णतः समर्पित लेखन दिया। उन्होंने यह भी बताया कि 'कल्कि' और 'कुमुदम' पत्रिकाओं ने कहानियों के प्रकाशन हेतु पुरस्कार घोषित किए तथा लेखकों को प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि छोटी पत्रिकाएँ गंभीर लेखकों को अवसर देती हैं तथा उनकी लड़ाई साहित्य के लिए होती है, जबकि प्रसिद्ध पत्रिकाएँ गंभीर और प्रसिद्ध साहित्य के बीच दुविधा में रहती हैं। उनके बाद प्रो. सी. वासुकी ने 'उपन्यास साहित्य' पर आलेख प्रस्तुत किया, जो विशिष्ट रूप से गाँधीवादी साहित्य के विषय पर केंद्रित था। उन्होंने बताया कि गाँधीवादी लेखकों की गाँधी के बारे में लिखने की सदैव ही एक सशक्त इच्छा रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई लेखक गाँधी से काफ़ी प्रभावित थे तथा उन्होंने उनके आदर्श मूल्यों को अपने लेखन में स्थान दिया।

अकीलन, कल्कि कृष्णमूर्ति, बी.एस. रमैया तथा अन्य तमिऴ लेखकों ने गाँधीवादी दर्शन पर आधारित श्रेष्ठ कृतियों की रचना की। उनका आलेख समकालीन महिलावादी मुद्दों तथा तमिऴ साहित्य की प्रवृत्तियों पर केंद्रित था। बाद में प्रो. के. कावेरी ने 'थोलकप्पियम' की इझुथादिकारम - वर्तमान व्याकरण प्रवृत्तियों पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें तमिऴ अक्षरों, शब्दों तथा शब्दसमूहों का उल्लेख था। उनके आलेख ने सिद्ध किया कि तमिऴ भाषा में गुणार्थक और विन्यासात्मक रूप में काफ़ी बदलाव हुए तथा समकालीन तमिऴ साहित्य में भाषा का स्तर घटाए बगैर, बोली के शब्दों की व्यापक श्रेणी हमारे सामने आई है। उनके बाद प्रो. सी. ईलुमलै ने 'थोलकप्पियार के सोल्लाधिकारम - वर्तमान व्याकरण प्रवृत्तियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें तमिऴ राज्य के अनुसार भाषा की विविधिता का उल्लेख किया गया। शास्त्रीय तमिऴ साहित्य की दो शैलियाँ हैं - अगम (आंतरिक जगत) साहित्य जो स्त्री-पुरुष संबंधों की बात करता है तथा पुरम (बाहरी जगत) साहित्य जो साहस, उदारता और योग्य गुणों का उल्लेख करता है। दोनों आलेखों में थोलकप्पियम की व्याकरण विषयवस्तु के प्रकाश में वर्तमान व्याकरण प्रवृत्तियों पर चर्चा की गई

है। अंत में साहित्य अकादेमी के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'बाङ्ला साहित्य में गाँधी' पर संगोष्ठी

25 मार्च 2021, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 25 मार्च 2021 को 'बाङ्ला साहित्य में गाँधी' पर साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में संगोष्ठी का आयोजन किया।

आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने भारतीय साहित्यिक क्षेत्र में गाँधी के उदय पर बात की। उन्होंने उनके साहित्यिक करियर की शुरुआत को याद करते हुए बताया कि 1902 में बाङ्ला पत्रिका 'भारती' में प्रकाशन के लिए गाँधी जी ने आलेख भेजा था। डॉ. राव ने उत्तरोत्तर वर्षों में गाँधी जी द्वारा और उनके बारे में लिखे गए लेखों पर विस्तार से चर्चा की। बाङ्ला लेखकों की उत्तरोत्तर पीढ़ियों पर गाँधी जी के प्रभाव की बात की। आरंभिक भाषण में डॉ. सुबोध सरकार ने भारतीय साहित्य में गाँधी जी के ऊँचे क़द और उस समय के बाङ्ला महापुरुषों के साथ उनके रिश्तों पर चर्चा की। उन्होंने गाँधी जी कृत 'एक्सपेरिमेंट विद ट्रूथ' की प्रशंसा की, जिसका अनुसरण वो अपने पूरे जीवन में करते रहे। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री शंकर ने गाँधी जी की आत्मकथा के लेखक से संवाद के अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए। उन्होंने टैगोर, सुभाष निवेदिता तथा अन्य महान व्यक्तित्वों के साथ गाँधी जी के रिश्तों पर प्रकाश डाला। बाङ्ला पाठक समूह में उन्होंने 'गाँधी कथामृत' जैसी पुस्तक की कमी पर भी बात की तथा उस क्षण को याद किया जब उन्होंने गाँधी जी के निधन की पहली घोषणा सुनी थी। बीज भाषण देते हुए प्रख्यात इतिहासकार प्रो. सुगता बोस ने गाँधी जी और बंगालियों के मध्य संबंधों पर विशेष क़िस्से सुनाए तथा विभाजन, जातीय दंगों, स्वतंत्रता दिवस आदि से संबंधित गाँधी जी की गतिविधियों की महत्त्वपूर्ण तिथियों की जानकारी भी दी। रवींद्र भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सब्यसाची बसु रॉयचौधुरी ने गाँधी जी के राजनीतिक संबद्धता के महत्त्व तथा किस प्रकार इसने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के साथ उनके रिश्तों पर असर डाला, के बारे में चर्चा की। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

व्याख्यान देते हुए प्रो. सुगता बोस

प्रथम सत्र में, प्रो. विश्वजीत राय तथा श्री सैयद हशमत जलाल ने 'बाङ्ला निबंधों में गाँधी' और 'शिक्षा से संबंधित गाँधीवादी विचार' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुमिता चक्रवर्ती ने की। श्री राय ने गाँधी जी के बारे में लिखित कई बाङ्ला निबंधों तथा इन निबंधों के विशिष्ट गुणों का संदर्भ दिया। श्री जलाल ने 'हरिजन' और 'यंग इंडिया' जैसी कई पत्रिकाओं में शिक्षा योजना पर गाँधी जी के लेखन पर बात की, साथ ही शिक्षा के गाँधीवादी विचारों के संबंध में टैगोर के दृष्टिकोण की भी चर्चा की। प्रो. राय ने बाङ्ला निबंधकारों पर गाँधी जी के प्रभाव से संबंधित अपने उद्बोधन में टैगोर, देशबंधु, शाहिद अमीन, हितेश रंजन, निर्मल कुमार तथा अन्यों के लेखों और भाषणों से उद्धरण दिए। द्वितीय सत्र में, प्रो. हिमवंत बंद्योपाध्याय तथा श्री शीर्ष बंद्योपाध्याय ने सतिनाथ भादुड़ी की *धोनराय चरित मानस* पर गाँधी जी के प्रभाव व बाङ्ला कथाकारों पर गाँधी के असर का उल्लेख किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. बिस्वजीत राय ने की। प्रो. हिमवंत बंद्योपाध्याय ने हाशिये पर रह रहे आम-जन की नज़रों में गाँधी की महानता पर फोकस करने के लिए उपन्यास के कथानक व स्वरूप पर विस्तार से विश्लेषण किया। प्रो. शीर्ष बंद्योपाध्याय, सतिनाथ भादुड़ी, माणिक

बंद्योपाध्याय, प्रेमेंद्र मित्र, आनंद शंकर राय, गोपाल हलदर, मनोज बसु आदि बाङ्ला कथाकारों पर गाँधी जी के प्रभावों की चर्चा की। उन्होंने गाँधीवादी विचारों के प्रभाव के अन्वेषण हेतु उनके लेखन से उद्धरण प्रस्तुत किए।

'बोडो साहित्य पर सामाजिक दृश्य का प्रतिबिंब' पर परिसंवाद

25 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 25 मार्च 2021 को प्रसिद्ध बोडो विद्वानों यथा—प्रो. अंजली बसुमतारी, प्रो. इंदिरा बर', सुश्री राहेल मुसाहारी, सुश्री भैरबी बर', सुश्री लाईश्री महिलारी तथा श्री गणेश बर' के साथ 'बोडो साहित्य पर सामाजिक दृश्य का प्रतिबिंब' पर परिसंवाद का आयोजन आभासी मंच पर किया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण दिया तथा वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से करवाया।

आरंभिक भाषण बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने दिया तथा श्रोताओं का परिचय परिसंवाद के विषय से करवाया। उद्घाटन भाषण प्रो. अंजली बसुमतारी ने किया। डॉ. अनिल कुमार बर' ने सत्र की अध्यक्षता की तथा डॉ. इंदिरा बर' ने बीज भाषण दिया। उन्होंने परिसंवाद के विषय का परिचय दिया। वक्ताओं ने बोडो साहित्य पर सामाजिक दृश्य के प्रतिबिंब की प्रवृत्ति के विभिन्न लक्षणों पर आधारित अपने विचार व्यक्त किए।

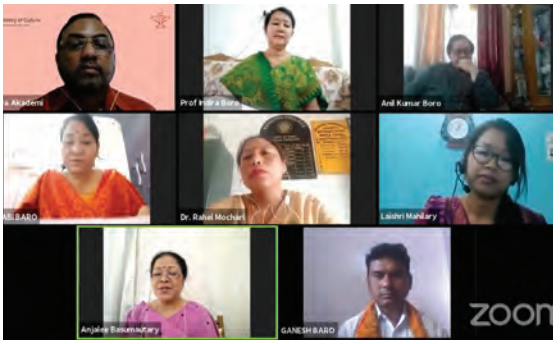

परिसंवाद का दृश्य

'मिथिलाक्षर : स्थिति तथा संभावनाएँ' विषय पर मैथिली परिसंवाद

26 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 26 मार्च 2021 को 'मिथिलाक्षर : स्थिति तथा संभावनाएँ' विषय पर मैथिली परिसंवाद का आयोजन आभासी मंच के अंतर्गत किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा कहा लिपि किसी भी भाषा के अस्तित्व का स्रोत है। आरंभिक वक्तव्य में डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' संयोजक, मैथिली परामर्श मंडल ने कहा कि मैथिली की लिपि मिथिलाक्षर पर ध्यान देने का यही सही समय है। प्रख्यात मैथिली लेखक प्रो. रमन झा ने अपने बीज भाषण में कहा कि मैथिली भाषा की मूल लिपि तिरहुता, मिथिलाक्षर के पुनर्स्थापन हेतु मैथिली भाषा के सभी लेखकों को साथ आना चाहिए तथा भावी पीढ़ियों को मैथिली भाषा सीखने में मदद करनी चाहिए। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति प्रो. शशिनाथ झा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी मैथिली लेखकों से अपील की कि वह युवा पीढ़ी को मैथिली भाषा सीखने व देवनागरी की बजाय मैथिली में लिखने में मदद करें। उन्होंने इसके लिए कार्यशालाएँ आयोजित करने की आवश्यकता पर भी बात की।

आलेख प्रस्तुति सत्र के अध्यक्ष डॉ. भवनाथ झा ने उस कार्ययोजना के बारे में विस्तार से बताया जो मिथिलाक्षर के प्रसार हेतु की जा रही हैं। युवा मैथिली शोधकर्ता श्री कौशल कुमार ने 'मिथिलाक्षर - परंपराएँ तथा महत्त्व' पर आलेख प्रस्तुत किया। एक मिथिलाक्षर

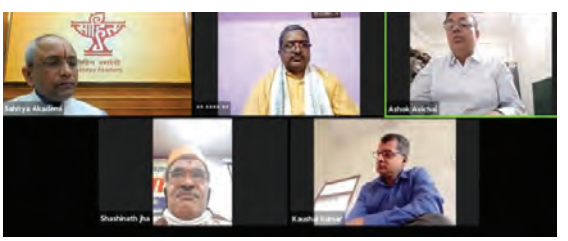

परिसंवाद का दृश्य

कार्यकर्ता श्री अजय नाथ झा शास्त्री ने अपने आलेख 'मैथिली में मिथिलाक्षर - स्थिति तथा दिशा' में तिरहुता लिपि की आवश्यकता पर बल दिया। प्रख्यात मैथिली लेखक श्री कौशल किशोर झा ने 'मिथिलाक्षर को समृद्ध करने हेतु प्रयास, स्थिति तथा दिशा' पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने परिसंवाद के अंत में धन्यवाद ज्ञापन दिया।

मणिपुरी - हिंदी कवि सम्मिलन एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम

26 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने एक भारत श्रेष्ठ भारत परियोजना के अंतर्गत 'मणिपुरी - हिंदी कवि सम्मिलन' का आयोजन आभासी मंच पर प्रसिद्ध मणिपुरी कवियों श्री अकेंद्र तेनसुबा तथा सुश्री थोकचॅम मोनिका देवी और हिंदी कवियों सुश्री नीलेश रघुवंशी तथा श्री रवींद्र स्वप्निल प्रजापति के साथ किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने श्रोताओं से वक्ताओं का परिचय करवाते हुए कार्यक्रम की विशेष प्रकृति के बारे में भी सूचित किया। सुश्री मोनिका ने अपनी दो कविताएँ हिंदी अनुवाद सहित सुनाईं, जिसमें से एक का शीर्षक ''मैं'' था। रवींद्र स्वप्निल प्रजापति द्वारा पढ़ी गई कविताओं में 'दुनिया के बारे में' और 'मेरे शब्द' शामिल थीं। श्री तेनसुबा ने 'बदसूरत विधाता' जैसी कविताएँ हिंदी अनुवाद के साथ सुनाईं। सुश्री नीलेश रघुवंशी द्वारा पढ़ी गई पाँच-छः कविताओं में 'साइकिल का रास्ता' तथा अन्य शामिल रहीं। इन सभी कविताओं में कवियों के गहरे सामाजिक सरोकार अभिव्यक्त हुए।

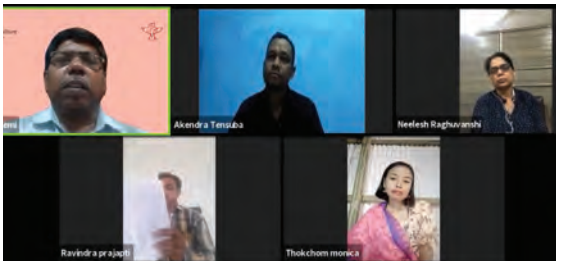

डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्री अकेंद्र तेनसुबा, सुश्री नीलेश रघुवंशी, श्री रवींद्र स्वप्निल प्रजापति तथा सुश्री थोकचॅम मोनिका देवी

'भारत का केंद्रण : भारतीय शिक्षा में तुलनात्मक साहित्य पाठ्यक्रम' पर परिसंवाद

26 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 26 मार्च 2021 को 'भारत का केंद्रण : भारतीय शिक्षा में तुलनात्मक साहित्य पाठ्यक्रम' विषयक परिसंवाद का आयोजन आभासी पर किया। सत्र की अध्यक्षता तथा संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग की सेवानिवृत प्रोफ़ेसर मालाश्री लाल ने की, वह साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की सदस्य भी हैं।

आरंभिक टिप्पणी में मालाश्री लाल ने तुलनात्मक साहित्य के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाए; मुख्यतः भारत के बहुभाषी समाज हेतु उपयुक्त इसकी परिभाषा तथा पश्च-औपनिवेशिक संदर्भ में शिक्षण हेतु फ्रेमवर्क पर प्रश्न उठाए। अनुवाद, साहित्य अकादेमी का मूलभूत कार्य है इसलिए श्रेष्ठ अनुवाद के माध्यम से साहित्यिक विषयों की रचना और प्रसार में भी इसकी रुचि है। उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्या हमें तुलनात्मक साहित्य को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है और यदि हाँ, तो पाठ्यक्रम और विधियों में क्या निर्देश दिखते हैं?

प्रथम वक्ता भारतीय तुलनात्मक साहित्य संघ के महासचिव और अंतरराष्ट्रीय तुलनात्मक साहित्य संघ की शोध समिति के अध्यक्ष प्रो. चंद्रमोहन ने तुलनात्मक

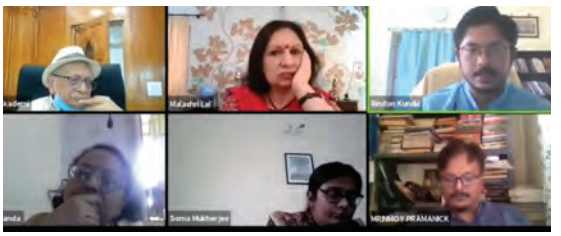

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अध्ययन में शिशिर के. दास, अमिय देव, नवनीता देव सेन तथा कई अन्य को याद करते हुए जादवपुर, केरल, दिल्ली तथा अन्य विश्वविद्यालयों में विधा के विकास को याद किया। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से इस विधा के आरंभ की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत के तुलनात्मक साहित्य संघ की उन्नति के लिए अंतर्सांस्कृतिक, अंतर्भाषायी मंचों की आवश्यकता है। उन्होंने ऐसे विषयों के अध्ययन हेतु उपयुक्त शिक्षा विज्ञान पर बल दिया जो विभिन्न भारतीय भाषाओं से अनुवाद पर बहुत अधिक निर्भर हो। तुलनात्मक साहित्य में मूल शोध हेतु अच्छा अवसर है जो भारतीय साहित्य की जटिलताओं को स्पष्ट करता है। श्री श्री विश्वविद्यालय, ओडिशा के अंग्रेज़ी विभाग में प्रोफ़ेसर तथा श्री श्री सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन एडं इंटरप्रिटेशन स्टडीज़ के निदेशक डॉ. रिन्दन कुंदु ने ओडिशा की स्थिति का वर्णन किया, जहाँ विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य हेतु पृथक विभाग नहीं होते, बल्कि उन्हें एकल साहित्य विभागों, मुख्यतः अंग्रेज़ी अथवा ओड़िआ के साथ ही पढ़ाते हैं। अंगीकृत शिक्षा विज्ञान 'ईस्ट वर्सेस वेस्ट मॉडल' है जिसे बदलने की आवश्यकता है चूँकि ओडिशा एक समृद्ध साहित्यिक राज्य है तथा उसका पड़ोसी राज्यों से सांस्कृतिक और भाषा संबंधी संवाद भी है इसलिए तुलना तथा अनुवाद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। नवोन्मेष हेतु अवसर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्देशों के अनुसार प्रदान किए जाते हैं। कुंदु ने परामर्श दिया कि तुलनात्मक भारतीय साहित्य पढ़ाने वाले विश्वविद्यालयों का डिजिटल नेटवर्क बनाया जाए तथा लचीलेपन, संकरता तथा साख हस्तांतरण की छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन साझा करने चाहिए। महामारी के दौरान डिजिटल क्रांति का उपयोग भारत में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को कारगर बनाने के लिए किया जा सकता है।

सेंटर फ़ॉर कम्पेरेटिव लिटरेचर (तुलनात्मक साहित्य केंद्र) विश्व भारती से प्रो. सोमा मुखर्जी ने कहा कि तुलनात्मक साहित्य केंद्र, भारत और विदेशों में बहु अंतर्साहित्यिक संबंधों की खोज का इच्छुक है। प्रामाणिक विषय-वस्तु और अल्पज्ञात सामग्री के मध्य संबंधों का खाका बनाना महत्त्वपूर्ण है। विश्व भारती में कई भाषा इकाइयाँ असमिया, मराठी, संताली, संस्कृत आदि हैं। छात्र तुलनात्मक साहित्य अध्ययन में एक अलग भाषा-साहित्य को समझने के लिए किसी एक भाषा का चयन करते हैं। मुखर्जी ने रामकथा परंपरा का उदाहरण दिया जो कई रूप लेती है और जिसमें 'वंशगत सामग्री' और 'समकालीन' प्रतिपादन के जटिल विश्लेषण की भी गुंजाइश है। सिद्धांतों तथा उसकी परिधि की महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं किंतु तुलनात्मक साहित्य की कार्यप्रणाली शिक्षाविदों और चिकित्सकों के मध्य प्रस्तावित संवादों पर निर्भर करती हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय के तुलनात्मक भारतीय भाषा और साहित्य विभाग के संकाय सदस्य डॉ. मृण्मय प्रमाणिक ने 19वीं शताब्दी से कलकत्ता विश्वविद्यालय में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के विकास की अवधारणा पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। तुलनात्मक भारतीय भाषा और साहित्य में एम.ए. पाठ्यक्रम वर्ष 2005 में शुरू किया गया था। बाङ्ला सामग्री को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की संरचना कुछ इस प्रकार की गई थी कि जिससे अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ तुलना की जा सके। पाठ्यक्रम में हाल ही में अतीत के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए संशोधन के साथ नए आयाम जोड़े गए हैं। इसे 'साहित्यिक कार्टोग्राफ़ी का युग' कहते हुए डॉ. प्रमाणिक ने साहित्य और भाषा में दक्षिण एशियाई संपर्कों को समायोजित करने के लिए अनुशासन का विस्तार करने का आग्रह किया। उनके अपने शोध के कारण म्यांमार में बर्मी-बाङ्ला पत्रिकाओं की खोज हुई थी, जो भारतीय गिरमिटिया श्रमिकों के जीवन को दर्शाती हैं।

अंग्रेज़ी तथा विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद में तुलनात्मक साहित्य विभाग की प्रो. इप्शिता चंदा ने बताया कि किस प्रकार तुलनात्मक साहित्य को सिद्धांत और चलन में व्यक्त किया गया है। हैदराबाद के जादवपुर विश्वविद्यालय और अंग्रेज़ी तथा विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम का ज़िक्र करते

हुए उन्होंने कहा कि तुलनात्मक साहित्य के अभ्यास में बहुलता अंतर्निहित है जिसकी जाँच सौंदर्यशास्त्र, सिद्धांत तथा नैतिकता के तीन दृष्टिकोणों से की जा सकती है। चूँकि बहुसंस्कृतिवाद भारतीय जीवन शैली का एक हिस्सा है, इसलिए किसी भी साहित्य को सीमांत या 'जनजातीय' कहने की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। 'अंतर' का सम्मान करना अति महत्त्वपूर्ण कारक है। यद्यपि पाठ्यक्रम बनाने की अपनी बाध्यताएँ हैं। यद्यपि तुलनात्मक साहित्य अक्सर एकल साहित्य विभागों के साथ जुड़ा हुआ है, बहुलता और अंतर के बीच का संबंध महत्त्वपूर्ण है। महामारी ने एकरूपता के टूटने तथा 'दूसरे' तक पहुँचने की आवश्यकता को दर्शाया है। यह तुलनात्मक साहित्य का सार है।

पैनलिस्टों के बीच एक जीवंत चर्चा हुई, जिसमें तुलनात्मक साहित्य के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। यह विविधता, बहुलता और भारतीयता को समझने का माध्यम है। अनुवाद के माध्यम से भाषाओं की सीमाओं को कम करने, अंतःविषयक दृष्टिकोणों के माध्यम से शैली भेद पर नियंत्रण तथा विषय के लिए शैक्षणिक नवाचारों की ओर बढ़ने जैसे विषयों पर भी चर्चा की गई।

'डोगरी साहित्य में ओ.पी. शर्मा 'सारथी' का योगदान' विषय पर परिसंवाद

27 मार्च 2021 (आभासी मंच)

अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत साहित्य अकादेमी ने 27 मार्च 2021 को 'डोगरी साहित्य में ओ. पी. शर्मा 'सारथी' का योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन आभासी मंच पर किया। उद्घाटन सत्र में डॉ. एन. सुरेश बाबू, उपसचिव (प्रकाशन) साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया तथा कहा ओ.पी. शर्मा कई आधुनिक डोगरी लेखकों के लिए आदर्श हैं। आरंभिक वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री दर्शन दर्शी ने बताया कि

परिसंवाद का दृश्य

ओ.पी. शर्मा 'सारथी' का जीवन समाज के विभिन्न पक्षों की व्याख्या करता है, तो उनकी काव्यात्मक मनोवृत्ति समय की माँग से संबद्ध प्रतीत होती है। डॉ. ओ.पी. शर्मा 'सारथी' के बहुआयामी व्यक्तित्व, लेखन तथा जीवन पर सुविख्यात विद्वान तथा डोगरी व हिंदी भाषा के लेखक श्री अनिरुद्ध कपिल ने बीज भाषण दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. चंपा शर्मा ने कहा कि डॉ. सारथी डोगरी भाषा में ट्रेंडसेटर थे। समय की माँग है कि उनके पूरे कृतित्व पर विद्वानों तथा शोधकर्ताओं द्वारा शोधकार्य किया जाए।

आलेख प्रस्तुति सत्र में श्री रोशन बराल, श्रीमती प्रवीण शर्मा तथा श्री सूरज प्रकाश रतन ने ओ.पी. शर्मा 'सारथी' के काव्य तथा कहानी लेखन पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री इंदरजीत केसर ने कहा कि डोगरी के लेखकों को सारथी जी के लेखन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अंत में, डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'तेलुगु साहित्य में आत्मकथाएँ' विषय पर परिसंवाद

27 मार्च 2021, विजयवाड़ा

साहित्य अकादेमी ने सिद्धार्थ कलापीठम विजयवाड़ा के सहयोग से 'तेलुगु साहित्य में आत्मकथाएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन सिद्धार्थ सभागार, पी.बी.

व्याख्यान देते हुए श्री माधव कौशिक, साथ में हैं डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा श्री के. शिवा रेड्डी

सिद्धार्थ आर्ट्स एडं साइंस कॉलेज परिसर, विजयवाड़ा में 27 मार्च 2021 को किया।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक तथा प्रख्यात तेलुगु कवि श्री के. शिवा रेड्डी, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री एन. ललिता प्रसाद तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों को मंच पर आमंत्रित किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने तेलुगु साहित्य में एक विधा के रूप में आत्मकथा के उद्भव, विकास और संवृद्धि पर विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि एक आत्मकथा लेखक के दृष्टिकोण, समकालीन दशाओं और स्थानीय इतिहास को प्रतिबिंबित करती है। उन्होंने कहा कि कंदुकूरी वीरेशलिंगम, चिलकामार्ती ने आत्मकथा को एक विशिष्ट साहित्यिक विधा के रूप में विकसित करने में योगदान दिया।

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री के. शिवा रेड्डी ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को, सामान्य लोगों सहित किसी को भी आत्मकथा लिखने का अधिकार है। उन्होंने बताया कि आत्मकथा को एक संयोजी शैली बनाने में ईमानदारी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

आत्मकथा के बारे में बोलते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष तथा प्रख्यात हिंदी कवि श्री माधव कौशिक ने कहा कि भारतीय विद्वान सदैव स्व-यशगान से बचते हैं तथा इसीलिए हमारे यहाँ आत्मकथा एक साहित्यिक विधा नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार साहित्यिक जीवन-वृत्त, राजनीतिक आत्मकथाओं से भिन्न है। मैक्सिको पुस्तक मेले में अपने दौरे को याद करते हुए श्री कौशिक ने बताया कि वो किस प्रकार आर.के. नारायण की 'माई डेज़' और हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा से प्रभावित थे। वस्तुनिष्ठता, पारदर्शिता तथा प्रामाणिकता किसी भी आत्मकथा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

आंध्र ज्योति के संपादक श्री के. श्रीनिवास ख़राब स्वास्थ्य के कारण कार्यक्रम में भाग नहीं ले सके तथा उनका भाषण साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री वासिरेड्डी नवीन द्वारा पढ़ा गया। श्री के. श्रीनिवास के आलेख में विस्तार से बताया गया कि किस प्रकार आत्मकथा के कुछ पक्ष संस्कृत तथा तेलुगु कृतियों यथा *कादंबरी* में प्रतिबिंबित किए गए। एक आत्मकथा से पाठक को लेखक के जीवन में झाँकने का अवसर मिलता है। यह यात्रा-वृत्तांत से अलग है तथा आत्मकथा लिखने के लिए लेखक को एक जटिल यात्रा करनी पड़ती है। उन्होंने यह भी कहा कि तेलुगु आत्मकथा में अंग्रेज़ी साहित्य का प्रभाव दिखाई पड़ता है तथा उन्होंने श्री वेन्नेलाकांति सुब्बाराव, श्री कंदूकरी वीरेशलिंगम के जीवनवृत्तों को याद किया। उन्होंने कहा कि गाँधी, हिटलर से बराक ओबामा तक कई राजनीतिक नेताओं ने आत्मकथाएँ लिखीं। श्री सुब्रह्मण्य शास्त्री तथा श्री श्री की आत्मकथाएँ अभी अपूर्ण हैं। महिला लेखकों तथा श्रमिक वर्ग के व्यक्तियों की आत्मकथाएँ उनके जीवन के तथ्यों और संघर्षों को दर्शाती हैं।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री के. शिवारेड्डी ने की। श्री कुरा जितेंद्र बाबू, डॉ. गुम्मन नगरी बाला श्रीनिवासमूर्ति तथा सुश्री के.एन. मल्लेश्वरी ने क्रमशः राजनीतिक आत्मकथाओं, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आत्मकथाओं तथा महिला आत्मकथाओं पर आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री मंदालि बुद्ध प्रसाद ने की। उन्होंने उल्लेख किया कि आत्मकथा का प्रकाशन एक साहसिक कार्य है। अपने अनुभवों को याद करते हुए बताया कि किस प्रकार आत्मकथा इतिहास पुनर्निर्माण

में हमें मदद करेगी तथा एक घटना का भी वर्णन किया जिसमें उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों से सात आत्मकथाओं के बारे में बताया।

श्री कल्लूरी भास्करम ने अपनी प्रस्तुति में श्री तंगुतूरी प्रकाशन पंतुलु की 'ना जीवित यात्रा' पर बात की। डॉ. कोलकलूरि मधु ज्योति ने दासाराधी कृष्णानामाचार्यिालु द्वारा 'यात्रा स्मृति' पर बात की। अपनी वार्ता में श्री वासिरेड्डी नवीन ने तिरुमाला रामचंद्र की 'हंपी नुंची हरप्पा डाका' पर चर्चा करते हुए उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं तथा उनके व्यक्तिगत व्यक्तित्व के गुणों के बारे में बताया। उन्होंने कई अध्यायों को भी पढ़ा जो इस रचना को प्रामाणिकता देते हैं। 'चिनूकु' पत्रिका के संपादक श्री नंदूरी राजगोपाल ने नंबूरी परिपूर्ण तथा कोंदापल्ली कोटेश्वरम्मा द्वारा लिखित दो पुस्तकों पर चर्चा की।

परिसंवाद ने तेलुगु आत्मकथा के अलग-अलग पक्षों पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों ने सत्र का पूर्णतया आनंद उठाया।

'संताली में महिला लेखन' पर परिसंवाद

29 मार्च 2021(आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा 29 मार्च 2021 को 'संताली में महिला लेखन' पर परिसंवाद का आयोजन आभासी मंच के अंतर्गत किया गया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण दिया तथा वक्ताओं का परिचय करवाया। उद्घाटन भाषण प्रख्यात संताली लेखक सुश्री दमयंती बेसरा ने दिया तथा साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने आरंभिक भाषण दिया। दोनों वक्ताओं ने संताली में महिला लेखन के इतिहास तथा विकास पर संक्षिप्त रूप से बात करते हुए संताली साहित्य के योगदान के बारे में भी बताया। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के सदस्य श्री लक्ष्मण मरांडी ने बीज भाषण दिया तथा प्रख्यात संताली आलोचक सुबोध हांसदा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने संताली में महिला केंद्रित साहित्य की यात्रा के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की। अकादेमिक सत्र में प्रसिद्ध संताली विद्वानों सुश्री सपना हेमब्रम, सुश्री सारो हांसदा, सुश्री सुचित्र हांसदा तथा सुश्री सुमित्र सोरेन ने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने महिलाओं द्वारा संताली लेखन के गुणों और विभिन्न लक्षणों पर बात की तथा अपने तर्कों के समर्थन में उदाहरण भी दिए।

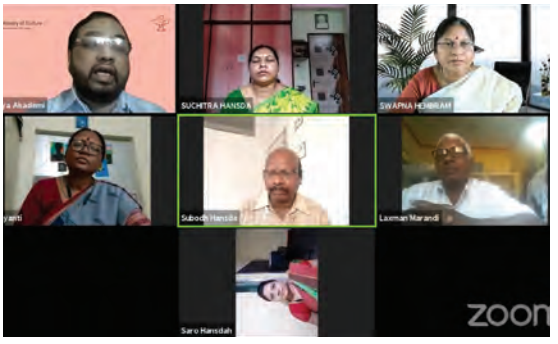

परिसंवाद का दृश्य

'गुजरात का कच्छी साहित्य' पर परिसंवाद

29 मार्च 2021(आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 'गुजरात का कच्छी साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन 29 मार्च 2021 को आभासी मंच के अंतर्गत किया गया। अपनी

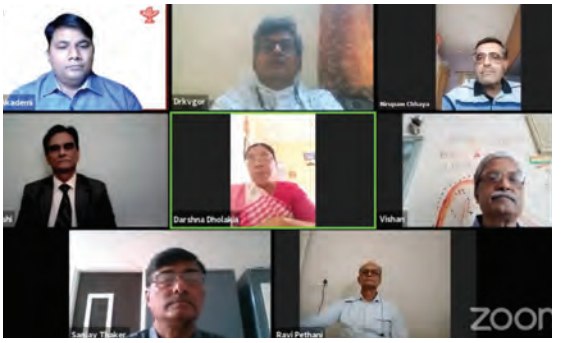

परिसंवाद का दृश्य

आरंभिक टिप्पणी में गुजराती परामर्श मंडल की सदस्या डॉ. दर्शना ढोलकिया ने कच्छी साहित्य की परंपरा तथा विविधता के बारे में बताया। श्री कांति गौड़ ने बीज भाषण दिया। उन्होंने कच्छ के भूगोल तथा इसकी सांस्कृतिक प्रचुरता की विशेषताओं का उल्लेख किया।

गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. विनोद जोशी ने सत्र की अध्यक्षता की। अगले सत्र में श्री रवि पेथाणी 'तिमिर' ने 'गुजराती : कच्छी भाषा की लाक्षणिकताएँ', श्री विशन नागड़ा ने 'कच्छी भाषा में बाल साहित्य', श्री संजय ठाकर ने 'कच्छी पत्र-पत्रिकाओं में अनुवाद प्रवृत्ति' पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री निरुपम छाया ने समापन भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'आधुनिक असमिया साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

30 मार्च 2021(आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 30 मार्च 2021 को 'आधुनिक असमिया साहित्य में प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन आभासी मंच के अंतर्गत प्रख्यात असमिया विद्वानों तथा लेखकों के साथ किया।

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से करवाया। विशिष्ट असमिया लेखक सुश्री मल्या खाउंद ने बीज भाषण दिया तथा प्रख्यात असमिया लेखक, प्रोफ़ेसर लक्ष्मीनंदन बोरा ने सत्र की अध्यक्षता की। अकादमिक सत्र में श्री दिगंत सइकिया, श्री गजेन मिली, सुश्री जूरी बोरा बोरगोहेन, श्री रामानंदन बोरा तथा श्री सिद्धार्थ शंकर कलिता ने आलेख प्रस्तुत किए। श्री सिद्धार्थ शंकर कलिता ने आधुनिक असमिया कविता पर, सुश्री जूरी ने असमिया कथा साहित्य की प्रवृत्तियों पर, श्री रामानंदन बोरा ने 'आधुनिक असमिया उपन्यास' पर तथा श्री दिगंत सइकिया ने 'असमिया साहित्य का विकास एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ' विषय पर बात की। लक्ष्मीनंदन बोरा ने चर्चा के अंत में समापन भाषण प्रस्तुत किया।

वर्ष 2020-2021 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

संताली लेखिकाएँ
29 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

उर्दू लेखिकाएँ
30 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखिकाएँ
03 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

गुजराती लेखिकाएँ
04 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

बोडो लेखिकाएँ
04 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

पंजाबी लेखिकाएँ
23 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

बाङ्ला लेखिकाएँ
06 मार्च 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखिकाएँ
19 मार्च 2021, ज़िला नागाँव, असम

पुरस्कार एवं महत्तर सदस्यताएँ

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पित
13 मार्च 2021, नई दिल्ली

प्रख्यात विद्वान, लेखक तथा शिक्षाविद् प्रो. वेलचेरू नारायण राव को मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त
27 मार्च 2021, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश

दलित चेतना

दलित चेतना के अंतर्गत साहित्य मंच
30 जून 2020 (आभासी मंच)

दलित चेतना : हिंदी कहानी-पाठ
14 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

दलित चेतना : हिंदी कवि-सम्मिलन
28 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

दलित चेतना : हिंदी कवि-सम्मिलन
10 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

दलित चेतना : हिंदी कवि-सम्मिलन
28 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

दलित चेतना के अंतर्गत साहित्य मंच
20 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

वृत्तचित्र प्रदर्शन (दर्पण)

अकादेमी ने *दर्पण* शीर्षक के अंतर्गत अपने वृत्तचित्रों का प्रसारण फेसबुक के माध्यम से किया। *दर्पण* शीर्षक के अंतर्गत प्रसारित वृत्त चित्रों का ब्यौरा निम्नलिखित है :

सुब्रह्मण्यम भारती
02 मई 2020 (आभासी मंच)

यू.आर. अनंतमूर्ति
03 मई 2020 (आभासी मंच)

नारायण सुर्वे
04 मई 2020 (आभासी मंच)

मुल्कराज आनंद
05 मई 2020 (आभासी मंच)

नबनीता देव सेन
06 मई 2020 (आभासी मंच)

अमृता प्रीतम
07 मई 2020 (आभासी मंच)

पंडित विद्यानिवास मिश्र
08 मई 2020 (आभासी मंच)

गिरीश कर्नाड
02 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

रेवा प्रसाद द्विवेदी
03 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

सी. नारायण रेड्डी
04 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

लक्ष्मी नंदन बोरा
05 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

नैयर मसूद
06 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

पोन्नीलन
07 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

भीष्म साहनी
08 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

निर्मल वर्मा
12 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

नबनीता देव सेन
12 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

पंडित विद्यानिवास मिश्र
13 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

खुशवंत सिंह
13 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

भीष्म साहनी
14 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

दिलीप कौर टिवाणा
14 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

रामधारी सिंह 'दिनकर'
15 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

गुलज़ार
15 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

बाबा नागार्जुन
16 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

महेश एलकुंचवार
16 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

कुँवर नारायण
19 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

आर.के. नारायण
19 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

धर्मवीर भारती
20 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

गोपीचंद नारंग
20 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

कैलाश वाजपेयी
21 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

मनोज दास
21 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

गोविंद मिश्र
22 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

गुरदयाल सिंह
22 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रतिभा राय
23 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

ओ.एन.वी. कुरुप
23 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

एक भारत श्रेष्ठ भारत शृंखला

मराठी-ओड़िआ अनुवाद
20 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

समकालीन हिंदी-कोंकणी कविता पर परिसंवाद
11 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

मराठी-ओड़िआ कवि सम्मिलन
28 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
12 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अनुवाद में चुनौतियाँ
18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

कन्नड - कोंकणी कवि सम्मिलन
26 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

हिंदी कवि सम्मिलन
23 मार्च 2021 (आभासी मंच)

कोंकणी और हिंदी लेखकों के साथ वचन और भक्ति साहित्य पर साहित्य मंच
24 मार्च 2021 (आभासी मंच)

मणिपुरी-हिंदी कवि सम्मिलन
26 मार्च 2021 (आभासी मंच)

गुजराती - ओड़िआ लेखक सम्मिलन
27 मार्च 2021 (आभासी मंच)

कोंकणी - मैथिली कविता-पाठ कार्यक्रम
30 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्योत्सव 2021

(12-14 मार्च 2021, नई दिल्ली)

प्रख्यात हिंदी कवि, समालोचक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य द्वारा संवत्सर व्याख्यान। उनके व्याख्यान का विषय था - कविता और सृजनात्मक साहित्य का 'स्व' भाव।
12 मार्च 2021, नई दिल्ली

अनुवादक सम्मिलन, जिसमें पुरस्कार विजेताओं ने अपने सृजनात्मक अनुभवों को साझा किया।
14 मार्च 2021, नई दिल्ली

ग्रामालोक

ग्राम फाइयेंग देबन, लम्पक, मणिपुर
27 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

ग्राम निश्चिंता कोइली ग्रामपंचाया, कटक, ओडिशा
07 मार्च 2021

ग्राम उचेचक्कोन, इंफ़ाल, मणिपुर
25 मार्च 2021

कवि अनुवादक

जानेमाने हिंदी लेखक श्री दिविक रमेश ने अपनी हिंदी कविताओं का पाठ किया तथा जानीमानी कोंकणी अनुवादक सुश्री प्रशांति तलपणकर ने उनका कोंकणी अनुवाद प्रस्तुत किया।
28 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात असमिया कवि श्री अनीस-उज़-ज़मां ने अपनी असमिया कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने हिंदी लेखक एवं अनुवाक श्री दिनकर कुमार ने उनका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया।
17 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात गुजराती लेखक श्री मणिलाल एच. पटेल ने अपनी गुजराती कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने हिंदी लेखक एवं अनुवादक डॉ. आलोक गुप्त ने उनका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया।
10 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. राणि सदाशिव मूर्ति ने अपनी संस्कृत कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने हिंदी लेखक एवं अनुवादक डॉ. भारत भूषण रथ ने उनका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया।
21 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु कवि डॉ. एन. गोपी ने अपनी तेलुगु कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने ओड़िआ अनुवादक डॉ. बंगाली नंदा ने उनका ओड़िआ अनुवाद प्रस्तुत किया।
09 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली लेखक श्री रूपचंद हांसदा ने अपनी संताली कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने बाङ्ला अनुवादक श्री लक्ष्मण किस्कु ने उनका बाङ्ला अनुवाद प्रस्तुत किया।
17 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखक श्री परेश नरेंद्र कामत ने अपनी कोंकणी कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने कश्मीरी लेखक एवं अनुवाक श्री सतीश विमल ने उनका कश्मीरी अनुवाद प्रस्तुत किया।
17 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला कवि डॉ. सुबोध सरकार ने अपनी बाङ्ला कविताओं का पाठ किया तथा जानेमाने असमिया अनुवादक श्री कमालुद्दीन अहमद ने उनका असमिया अनुवाद प्रस्तुत किया।
05 मार्च 2021 (आभासी मंच)

कथासंधि

प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. सुबोध जावडेकर
14 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. पद्मिनी नागराजू
19 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक डॉ. सी.एस. चंद्रिका
25 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात संताली लेखक श्री गौर चंद्र
25 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री यूसुफ़ जहाँगीर
28 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखक श्रीमती शकुंतला शर्मा 'बिरपुरी'
28 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखक श्री जी.के. ऐनापुरे
02 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री भगवानदास मोरवाल
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओडिआ लेखक श्री सत्य मिश्र
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक सुश्री क्षमा कौल
31 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री जयनंदन
06 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री बी.एस. रामुलु
26 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखक श्री गौतमी पुत्र काम्बले
27 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री संजीब चट्टोपाध्याय
08 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री सी. राधाकृष्णन
24 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात राजस्थानी लेखक श्री सत्यनारायण सोनी
01 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात कोंकणी लेखक श्री गजानन जोग
15 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री जॉर्ज ओनाक्कूर
23 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात तमिऴ लेखक श्री बावा चेल्लादुरै
03 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखक डॉ. सरजू काटकर
12 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात असमिया लेखक श्री मदन शर्मा
18 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. सीला वीराराजू
20 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री अशोकन चारुविल
25 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखक श्री के. सत्यनारायण
28 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु लेखक डॉ. कुप्पिली पद्मा
04 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखक श्री आत्माराम गोडबोले
05 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखक डॉ. कमलाकांत त्रिपाठी
10 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री एस. आर. हरनोट
12 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखक श्री शमोएल अहमद
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखक श्री पंकज कुमार
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखक श्री एच. गिरीश राव (जोगी)
24 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमानी हिंदी कथाकार डॉ. मंजुला राणा
11 मार्च 2021 (आभासी मंच)

कवि संधि

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री कुलदीप सलिल
16 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात राजस्थानी लेखक श्री राजेंद्र जोशी
25 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखक डॉ. ज्ञान सिंह
29 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात कोंकणी लेखक श्री परेश कामत
01 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात अंग्रेज़ी तथा उर्दू कवि प्रो. अनीसुर रहमान
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात उर्दू लेखक श्री प्रितपाल सिंह 'बेताब'
31 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी कवि श्री श्रीधर नांदेकर
02 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात गुजराती कवि श्री जवाहर बक्शी 'फना'
14 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक सुश्री सावित्री राजीवन
17 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखक श्री प्रकाश सिंह ओंकार
11 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री बी.वी.वी. प्रसाद
15 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी कवि श्री विल्सन कतील
21 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात असमिया कवि श्री मनोज बरपुजारी
30 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखक सुश्री प्रियदर्शी ठाकुर ख़याल
08 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी कवि श्री रफ़ीक़ राज़
13 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी कवि डॉ. विजया ठाकुर
15 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मैथिली कवि श्री बुद्धिनाथ झा
16 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी कवि श्री ज्ञान सिंह पगोच
16 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखक श्री के.वी. रामकृष्णन
27 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात पंजाबी लेखक श्री मोहन त्यागी
28 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने पंजाबी लेखक श्री अंबरीश
28 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु कवि सुश्री शिलालोलिथा
03 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी कवि श्री गोपाल कृष्ण 'कोमल'
09 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संस्कृत लेखक श्री जगदीश प्रसाद सेमवाल
12 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखक श्री एस. दिवाकर
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमानी बोडो कवयित्री सुश्री धनश्री स्वर्गिआरी
25 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखक श्री नाओरेम बिद्यासागर
25 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी कवि श्री गोविंद माथुर
11 मार्च 2021 (आभासी मंच)

साहित्य मंच

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
17 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ साहित्य मंच
19 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखकों के साथ साहित्य मंच
22 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ साहित्य मंच
23 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली लेखकों के साथ साहित्य मंच
23 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ साहित्य मंच
23 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ लेखकों के साथ साहित्य मंच
24 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत लेखकों के साथ साहित्य मंच
28 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला लेखकों के साथ साहित्य मंच
29 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिळ लेखकों के साथ साहित्य मंच
01 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिळ लेखकों के साथ साहित्य मंच
03 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत लेखकों के साथ साहित्य मंच
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

साहित्य मंच : कोविड-19 के समय में बोडो लेखकों की भूमिका
07 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
07 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ 'मेरा अनुवाद–मेरा अनुभव' पर साहित्य मंच
08 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली लेखकों के साथ साहित्य मंच
09 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
09 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने पंजाबी लेखकों के साथ 'समकालीन दौर में समाज और ज्ञान' पर साहित्य मंच
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने राजस्थानी लेखकों के साथ साहित्य मंच
12 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखकों के साथ साहित्य मंच
12 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ लेखकों के साथ साहित्य मंच
21 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ साहित्य मंच
21 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत लेखकों के साथ साहित्य मंच
23 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ साहित्य मंच
27 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया लेखकों के साथ साहित्य मंच
31 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखकों के साथ साहित्य मंच
02 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
03 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ साहित्य मंच
06 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

टैगोर की स्मृति में साहित्य मंच
08 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ साहित्य मंच
13 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ़ लेखकों के साथ साहित्य मंच
13 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली लेखकों के साथ साहित्य मंच
17 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
18 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ़ लेखकों के साथ 'मदुरै लेखकों का आधुनिक लेखन' विषय पर साहित्य मंच
18 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखकों के साथ साहित्य मंच
20 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
20 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ साहित्य मंच
21 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ साहित्य मंच
21 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

'शिवराम कारंत तथा तकषि़ शिवशंकर पिल्लै के लेखन की तुलना' पर साहित्य मंच
24 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखकों के साथ साहित्य मंच
26 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

मलयाळम् तथा कन्नड के संदर्भ के साथ अनुवाद सिद्धांतों की प्रवृत्तियों पर साहित्य मंच
27 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

साहित्य तथा भक्ति आंदोलन पर साहित्य मंच
30 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
31 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ साहित्य मंच
31 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ एस. कालीदमन के जीवन तथा कार्यों पर साहित्य मंच
02 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु लेखकों के साथ 'तेलुगु लिटरेरी वर्ल्ड ऑफ़ पोस्ट कोरोना पेंडैमिक' विषय पर साहित्य मंच
06 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ आधुनिक बोडो कविता पर साहित्य मंच
15 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
21 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखकों के साथ 'लोक कथा साहित्य को अंग्रेज़ी में अनूदित करने की चुनौतियाँ' विषय पर साहित्य मंच
25 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ़ लेखकों के साथ 'दलित साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषय पर साहित्य मंच
26 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखकों के साथ 'कोंकणियों का मलयाळम् भाषा तथा साहित्य को योगदान' विषय पर साहित्य मंच
05 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

इंद्रकांत वासुदेव शिनॉय की जन्मशती के अवसर पर साहित्य मंच
10 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

तेलुगु साहित्य में युवा स्वर पर साहित्य मंच
22 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
27 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला लेखकों के साथ 'रंगमंच और साहित्य के बीच संबंध' विषय पर साहित्य मंच
06 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ मणिपुरी साहित्य में रेडियो नाटक विषय पर साहित्य मंच
07 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखकों के साथ साहित्य मंच
11 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली लेखकों के साथ 'संताली भाषा में बाल साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
11 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ मधुराम बर' पर साहित्य मंच
12 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया लेखकों के साथ 'असमिया और बाङ्ला की ऐतिहासिक कड़ी' विषय पर साहित्य मंच
20 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

'आधुनिक असमिया साहित्य में पद्दलित' विषय पर साहित्य मंच
07 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
08 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ 'उत्तर बंगाल का बोडो साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
10 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
11 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली लेखकों के साथ 'शारदा प्रसाद किस्कु के जीवन और कार्यों' पर साहित्य मंच
15 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ 'आधुनिक बोडो कविता की वर्तमान प्रवृत्तियाँ' विषय पर साहित्य मंच
16 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओड़िआ लेखकों के साथ 'ओड़िआ नाटकारे नूतनतार संधान' विषय पर साहित्य मंच
29 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
08 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

'संताल्स इमर्शन साँग्स : ए लिटरेरी एवोलूशन' विषय पर साहित्य मंच
19 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
19 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखकों के साथ साहित्य मंच
20 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

एच.एम. गुरुभाखानी का सिंधी साहित्य में योगदान पर साहित्य मंच
27 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला लेखक प्रमथनाथ बिशी पर साहित्य मंच
27 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्राचीन मणिपुरी लोकगीतों के साहित्य तत्त्वों पर साहित्य मंच
29 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने राजस्थानी लेखकों के साथ साहित्य मंच
29 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
05 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली लेखकों के साथ साहित्य मंच
17 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य मंच : बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय
18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत लेखकों के साथ साहित्य मंच
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

साहित्य मंच : एक शाम आलोचक के साथ – जानेमाने तेलुगु लेखक श्री के. श्रीनिवास ने तेलुगु साहित्य और समालोचना पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
25 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखकों के साथ साहित्य मंच
05 मार्च 2021 (आभासी मंच)

जानीमानी असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी, ओड़िआ तथा संताली भाषाओं की महिला रचनाकारों के साथ 'समकालीन साहित्य में महिला पात्र' विषय पर साहित्य मंच
08 मार्च 2021 (आभासी मंच)

'मणिपुरी भाषा की बदलती प्रवृत्तियाँ' पर साहित्य मंच
24 मार्च 2021 (आभासी मंच)

लेखक से भेंट

प्रख्यात बोडो लेखक श्री अरबिंदो उजीर
20 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

विविध

जानीमानी योग प्रशिक्षक सुश्री सविता पवार द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर व्याख्यान।
21 जून 2020 (आभासी मंच)

श्री एस. महाकुड द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग के लाभों पर व्याख्यान तथा प्रस्तुति।
21 जून 2020 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर यम तथा नियम के विशेष संदर्भ के साथ प्रो. सरस्वती कला द्वारा योग पर व्याख्यान।
21 जून 2020 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग गुरु तथा सामाजिक विशेषज्ञ श्री नारायण द्वारा व्याख्यान।
21 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात तमिळ लेखक तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री सा. कंदासामी को श्रद्धांजलि देने हेतु शोक सभा।
11 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात भारतीय विद्वान डॉ. कपिला वात्स्यायन को श्रद्धांजलि देने हेतु शोक सभा।
21 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

श्री दिविक रमेश द्वारा संकलित तथा संपादित पुस्तक 'प्रतिनिधि बाल कविता संचयन' का लोकार्पण कार्यक्रम।
15 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात उर्दू लेखक तथा समालोचक डॉ. शमसुर रहमान फ़ारूक़ी को श्रद्धांजलि देने हेतु शोक सभा।
06 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

भुवनेश्वर, ओडिशा में अकादेमी के किताब-घर का उद्घाटन कार्यक्रम। प्रख्यात ओड़िआ लेखक तथा साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष श्री रमाकांत रथ ने किताब-घर का उदघाटन किया।
18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अकादेमी ने फेडरेशन ऑफ़ सार्क रायटर्स एंड लिटरेचर (एफ.ओ.एस.डब्लू ए.एल.) के सहयोग से दक्षिण एशियाई ऑनलाइन साहित्य सम्मलेन का आयोजन किया, जिसमें भारत, अफगानिस्तान, श्रीलंका, भूटान, बांग्लादेश तथा मालदीव के जानेमाने लेखकों/विद्वानों ने भाग लिया।
15-18 मार्च 2021 (आभासी मंच)

मुलाक़ात

युवा असमिया लेखक
25 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

युवा मणिपुरी लेखक
23 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

युवा बाड्ला लेखक
27 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

युवा बोडो लेखक
23 मार्च 2021, कोकराझार, असम

बहुभाषी सम्मिलन

संस्कृत, तेलुगु तथा उर्दू भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
09 मई 2020 (आभासी मंच)

हिंदी, कश्मीरी तथा नेपाली भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
12 मई 2020 (आभासी मंच)

असमिया, बाड्ला तथा मणिपुरी भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
14 मई 2020 (आभासी मंच)

बोडो, कोंकणी, मराठी तथा राजस्थानी भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
15 मई 2020 (आभासी मंच)

डोगरी, पंजाबी तथा तेलुगु भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
16 मई 2020 (आभासी मंच)

असमिया, मणिपुरी तथा संताली भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
12 जून 2020 (आभासी मंच)

कोंकणी तथा मराठी भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
14 जून 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
15 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
22 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
11 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
27 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

महात्मा गाँधी की 150 वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
02 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

महात्मा गाँधी की 150 वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
02 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
31 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
27 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने भारतीय लेखकों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
03 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

कन्नड, तमिऴ तथा तेलुगु भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता पाठ कार्यक्रम
21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

असमिया, बाड्ला, बोडो, मणिपुरी, ओड़िआ, नेपाली तथा संताली भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

मराठी, गुजराती, कोंकणी तथा सिंधी भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

अवधी, भोजपुरी, डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, निमाडी, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत तथा उर्दू भाषाओं के कवियों के साथ बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

नारी चेतना

जानीमानी कोंकणी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
16 जून 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी गुजराती महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
25 जून 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी तेलुगु महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
26 जून 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी पंजाबी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
27 जून 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी बाङ्ला महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी मणिपुरी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

'गत 50 वर्षों में असमिया उपन्यासों में महिलाओं के अधिकार तथा समानता' विषय पर नारी चेतना कार्यक्रम
08 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी तमिळ महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी बोडो महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
20 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी हिंदी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
28 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी कोंकणी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
03 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी हिंदी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
05 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी हिंदी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
07 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी गुजराती महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
25 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी बाङ्ला महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
27 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी तेलुगु महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
29 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी संताली महिला रचनाकारों के साथ 'संताली महिला लेखिकाओं के समक्ष चुनौतियाँ' विषय पर नारी चेतना कार्यक्रम
07 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी बाङ्ला महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
14 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी मणिपुरी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
27 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी नेपाली महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
10 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी ओडिआ महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
16 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी मैथिली महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
19 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी मलयाळम् महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
23 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी तमिऴ महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
07 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी डोगरी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
09 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी पंजाबी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
12 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

विभिन्न भारतीय भाषाओं की जानीमानी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
18 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानीमानी संस्कृत महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
20 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

कन्नड, मलयाळम्, तमिऴ तथा तेलुगु भाषाओं की जानीमानी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
08 मार्च 2021 (आभासी मंच)

मराठी, गुजराती, सिंधी तथा कोंकणी भाषाओं की जानीमानी तेलुगु महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
08 मार्च 2021 (आभासी मंच)

डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, राजस्थानी, पंजाबी, संस्कृत तथा उर्दू भाषाओं की जानीमानी महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
08 मार्च 2021 (आभासी मंच)

जानीमानी मलयाळम् महिला रचनाकारों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
21 मार्च 2021, पूष़ानाड, तिरुवनंतपुरम, केरल

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2020

16-27 नवंबर 2020 : अकादेमी ने अपने नई दिल्ली तथा बेंगळुरु, कोलकाता, मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों तथा चेन्नै स्थित अपने उप-कार्यालय में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का आयोजन किया। प्रख्यात हिंदी लेखक डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने दिल्ली में, प्रख्यात बाङ्ला लेखक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने कोलकाता में, प्रख्यात गुजराती लेखक डॉ. वर्षा आडालजा ने मुंबई में तथा प्रख्यात तमिऴ लेखक श्री राम गुरुनाथन ने चेन्नै में पुस्तक प्रदर्शनियों का उद्घाटन किया। प्रख्यात कन्नड कवि डॉ. ए. सिद्धलिंगय्या ने बेंगळुरु में पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। पुस्तक सप्ताह के दौरान निम्नलिखित साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
19 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात उर्दू लेखक डॉ. शरीफ़ हुसैन क़ासमी के साथ पुस्तक परिचर्चा, इसमें उन्होंने अकादेमी के नवीनतम प्रकाशन ग़ालिब : अर्थवत्ता, रचनात्मकता एवं शून्यता पर अपने विचार व्यक्त किए।
23 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री उपेंद्र कुमार के साथ कविसंधि
24 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
25 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

पूर्वोत्तर-क्षेत्रीय सम्मिलन

अकादेमी ने पूर्वोत्तर तथा उत्तर भारतीय भाषाओं के लेखकों के साथ पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया।
31 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

वाचिक और जनजातीय साहित्य कार्यक्रम

मिसिंग भाषा के कवियों के साथ जनजातीय कवि सम्मिलन
03 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

भीली भाषा के कवियों के साथ जनजातीय कवि सम्मिलन
11 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

काकबोराक भाषा के कवियों के साथ जनजातीय कवि सम्मिलन
23 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय देशज दिवस के अवसर पर जनजातीय कवि सम्मिलन
09 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जनजातीय कवि सम्मिलन
17 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

तुलु भाषा के कवियों के साथ जनजातीय कविता - पाठ कार्यक्रम
19 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

कार्बी भाषा के कवियों के साथ जनजातीय कविता - पाठ कार्यक्रम
20 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जनजातीय (हो) कवि सम्मिलन
21 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जनजातीय कवि सम्मिलन
21 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

पैनल परिचर्चा

रवींद्रनाथ ठाकुर पर आधारित गुरुदेव की स्मृति में : भारत के महान साहित्य की यादें
08 मई 2020 (आभासी मंच)

भारतीय साहित्य में भारतीयता
17 मई 2020 (आभासी मंच)

वैश्विक महामारी, मानवीय मूल्य तथा मराठी साहित्य
22 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ, निटिंग इंडिया : ट्रांसलेशन सीरीज़
26 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ – भाषा साहित्य कितने अंग्रेज़ीकृत हैं?
26 मई 2020 (आभासी मंच)

तमिऴ मीडिया तथा साहित्य
09 जून 2020 (आभासी मंच)

वैश्विक महामारी, मानवीय मूल्य तथा गुजराती साहित्य
11 जून 2020 (आभासी मंच)

तमिऴ अनुवाद परिदृश्य
13 जून 2020 (आभासी मंच)

वैश्विक महामारी और तमिऴ साहित्य
15 जून 2020 (आभासी मंच)

वैश्विक महामारी, मानवीय मूल्य तथा कोंकणी साहित्य
16 जून 2020 (आभासी मंच)

बदलते समय का साहित्य : भूमिका और समस्या
18 जून 2020 (आभासी मंच)

महामारी तथा असमिया साहित्य : विपत्ति के समय मानव आत्मा की पुनः परीक्षा
19 जून 2020 (आभासी मंच)

तमिऴ कविता का भविष्य
23 जून 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखकों के साथ सृजनात्मकता और पृथकता पर चर्चा।
27 जून 2020 (आभासी मंच)

संस्कृत विद्वानों का समग्र दृष्टिकोण
28 जून 2020 (आभासी मंच)

अनुवाद में मेरा अनुभव
29 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओड़िआ लेखकों के साथ वैश्विक महामारी और साहित्य पर चर्चा
01 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ डोगरी साहित्य में वाचिक कविता का महत्त्व विषय पर चर्चा।
15 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत विद्वानों के साथ प्राचीन संस्कृत शास्त्रों में एकांतवास का महत्त्व विषय पर चर्चा।
15 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों/विद्वानों के साथ भारतीय साहित्य में विचारवान कथा साहित्य पर चर्चा।
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों/विद्वानों के साथ बहुभाषी समाज में अनुवाद की भूमिका पर चर्चा।
20 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों/विद्वानों के साथ नई सामान्य तथा नई साहित्यिक प्रवृत्तियाँ विषय पर चर्चा।
20 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला लेखकों के साथ 'क्या साहित्य साहित्यिक उत्सवों के बिना जीवित रह सकता है?' विषय पर चर्चा।
29 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ 'मैथिली कविता की समकालीन चुनौती' विषय पर चर्चा।
31 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला लेखकों के साथ 'क्या बाङ्ला साहित्य अपना पाठक खो रहा है?' विषय पर चर्चा।
07 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया लेखकों के साथ 'स्वतंत्रता, अपेक्षा और पूर्ति' विषय पर चर्चा।
14 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओड़िआ लेखकों के साथ 'ओड़िआ साहित्य में हास्य' विषय पर चर्चा।
18 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत लेखकों के साथ 'अन्य भारतीय भाषाओं के संवर्धन में संस्कृत की भूमिका' विषय पर चर्चा।
24 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखकों के साथ 'कोंकणियों का कन्नड भाषा तथा साहित्य को योगदान' विषय पर चर्चा।
01 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओड़िआ लेखकों के साथ 'समकालीन ओड़िआ कहानियों में प्रतिबिंबित सामाजिक वास्तविकता विषय पर चर्चा।
17 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ ई-लिटरेचर विषय पर विमर्श।
21 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ 'गुजरात का लोक साहित्य' विषय पर चर्चा।
23 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया लेखकों के साथ 'आधुनिक असमिया साहित्य में पूर्व-औपनिवेशिक आख्यान' विषय पर चर्चा।
24 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखकों के साथ 'महाराष्ट्र का लोकसाहित्य' विषय पर चर्चा।
28 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस पर 'ज्ञान अधिग्रहण में अनुवाद की भूमिका' विषय पर चर्चा।
30 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखकों के साथ 'कथेतर साहित्य लेखन' विषय पर चर्चा।
09 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखकों के साथ 'महाकाव्य तथा आधुनिक साहित्य' विषय पर चर्चा।
16 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखकों के साथ 'विगत दशक में गुजराती साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषय पर चर्चा।
21 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

मणिपुरी साहित्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में सांख्य इबोतोम्बी का योगदान।
31 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ 'डोगरी लोक साहित्य में मान्यताएँ' विषय पर चर्चा।
05 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ 'गुजराती साहित्य और मीडिया : विगत दशक' विषय पर चर्चा
17 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ 'गुजराती बाल साहित्य : विगत दशक' विषय पर चर्चा।
23 नवंबर 2020 (आभासी मंच)
जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ पैनल परिचर्चा कार्यक्रम।
14 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखकों के साथ कन्नड में यात्रा लेखन पर चर्चा।
16 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

व्यक्ति और कृति

पूर्व जन संपर्क अधिकारी, पोट्टी श्रीमालु तेलुगु विश्वविद्यालय के श्री जुर्रू चेन्नय्या
05 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात चित्रकार श्री नितिन दादरावाला ने जिन पुस्तकों ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए।
24 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात भरतनाट्यम व्याख्याता डॉ. राजाश्री वॉरियर
03 मार्च 2021 (आभासी मंच)

कविता-पाठ

जानेमाने ओड़िआ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
11 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
13 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
20 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
16 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
16 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
16 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
17 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
18 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
23 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
23 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
24 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
25 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
25 जून 2020 (आभासी मंच)

जाने माने राजस्थानी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
25 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
25 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
26 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
26 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
27 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
29 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
29 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
30 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
30 जून 2020 (आभासी मंच)

विभिन्न जनजातीय भाषाओं के जानेमाने कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
30 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
30 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
01 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
01 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
03 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने पंजाबी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने राजस्थानी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
07 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने राजस्थानी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
07 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
07 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
10 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
11 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
12 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
17 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
21 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

भोजपुरी कविता-पाठ कार्यक्रम
27 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
29 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अवधी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
04 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
06 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
26 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
28 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
28 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
07 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
07 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
08 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
18 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

संबलपुरी भाषा के कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
19 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संताली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
24 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
30 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

महात्मा गाँधी की 150 वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर असमिया, बाङ्ला, बोडो, ओड़िआ, संताली तथा मणिपुरी भाषाओं के कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
02 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
08 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
27 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
28 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
02 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
07 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
05 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
09 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
12 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
18 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
10 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
17 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

विश्व कविता दिवस के अवसर पर कविता-पाठ कार्यक्रम
21 मार्च 2021 (आभासी मंच)

कवि सम्मिलन

हिमाचली-पहाड़ी कवि सम्मिलन
13 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

तुलु रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
19 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
22 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
17 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
30 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
17 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
19 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
21 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
17 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
17 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
31 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
24 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
24 दिसंबर21 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
26 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
31 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी रचनाकारों के साथ कवि सम्मिलन
31 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

पश्चिमी तथा उत्तरी भारतीय कवि सम्मिलन
19 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

इंडिया@75 के अंतर्गत भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर हिंदी कवि सम्मिलन
23 मार्च 2021, नई दिल्ली

गाँधी की स्मृति में काव्य-संध्या
25 मार्च 2021, क्षेत्रीय कार्यलाय, कोलकता

प्रवासी मंच

यू.एस.ए. के जानेमाने तेलुगु लेखकों के साथ प्रवासी मंच
23 जून 2020 (आभासी मंच)

यू.एस.ए. के जानेमाने तेलुगु लेखकों के साथ प्रवासी मंच
24 जून 2020 (आभासी मंच)

यू.एस.ए. के जानेमाने तेलुगु लेखकों के साथ प्रवासी मंच
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

बांग्लादेश के जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ प्रवासी मंच
01 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रवासी मणिपुरी लेखकों के साथ प्रवासी मंच
22 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

यू.एस.ए. के जानेमाने ओडिआ लेखक तथा शिक्षाविद् श्री बिजॅय मोहन मिश्र के साथ प्रवासी मंच, जिसमें उन्होंने सृजनात्मक लेखन पर अपने विचार व्यक्त किए।
18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

संगोष्ठियाँ

कोंकणी बाल साहित्य की नई प्रवृत्तियाँ विषय पर संगोष्ठी
20 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

बोडो शिक्षा माध्यम : अतीत और वर्तमान विषय पर संगोष्ठी
22 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

तमिऴ में आलोचना और सिद्धांत विषय पर संगोष्ठी
19 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

भारत भूषण अग्रवाल - जीवन और कार्य विषयक जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
21 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वि-शताब्दी संगोष्ठी
22 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

उत्तर-आधुनिक गुजराती साहित्य पर संगोष्ठी
23 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

संतोख सिंह धीर : जीवन और कार्य पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
26 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

बीसवीं सदी का मराठी साहित्य विषय पर संगोष्ठी
30 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

फणीश्वर नाथ रेणु : जीवन और कार्य विषय पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
18 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

डोगरी साहित्य में मानवतावाद और महानगरीयता विषय पर संगोष्ठी
22 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

भैरव प्रसाद गुप्त : जीवन और कार्य विषय पर संगोष्ठी
23 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने पंजाबी लेखकों के साथ सामाजिक न्याय संवाद विषय पर संगोष्ठी
09 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू बाल लेखकों के साथ इक्कीसवीं सदी में बच्चों का उर्दू अदब विषय पर संगोष्ठी
11 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने हिंदी लेखकों के साथ प्रवासी साहित्य और गाँधी विषय पर संगोष्ठी
18 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

राजस्थानी साहित्य : अतीत और वर्तमान विषय पर संगोष्ठी
19 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ प्रवासी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य विषय पर संगोष्ठी
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

सिंधी साहित्य का अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद विषय पर संगोष्ठी
26 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

महाकाव्य परंपरा और समकालीन भारतीय साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
20-21 मार्च 2021, मोइरंग, मणिपुर

असमिया साहित्य की वर्तमान साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, प्रथाएँ तथा स्थिति विषय पर संगोष्ठी
22-23 मार्च 2021, तेजपुर, असम

बाङ्ला साहित्य में गाँधी विषय पर संगोष्ठी
25 मार्च 2021, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कहानी पाठ

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
19 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने संस्कृत लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
20 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
21 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
22 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने राजस्थानी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
22 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
25 मई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
05 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
11 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
15 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
19 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
21 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
25 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
26 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
26 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
29 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
29 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
30 जून 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
27 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कश्मीरी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
27 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
19 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
01 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने कन्नड लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
10 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मणिपुरी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
17 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
04 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने ओडिआ लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
10 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने नेपाली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
20 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
28 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
02 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
09 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
18 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
05 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
10 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने उर्दू लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
15 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
22 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

परिसंवाद

भारत की स्वतंत्रता की 73वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वतंत्रता, संविधान और साहित्य विषय पर परिसंवाद
15 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के समापन के अवसर पर गाँधी : एक लेखक विषय पर परिसंवाद
02 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखकों के साथ वाचिक साहित्य और लिखित साहित्य के बीच संबंध विषय पर परिसंवाद
15 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

शताब्दी वंदना : प्रख्यात गुजराती लेखकों उषानस, जयंत पाठक तथा सुरेश जोशी की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
17 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों के साथ भारतीय कविता की वर्तमान प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद
23 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओमकार नाथ कौल के साथ परिसंवाद
24 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

सिंधी साहित्य में अर्जन हासिद का योगदान पर परिसंवाद
26 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

बोडो साहित्य में परिलक्षित महिलाओं के मुद्दे विषय पर परिसंवाद
26 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखकों के साथ मराठी साहित्य में शहरी कविता विषय पर परिसंवाद
26 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने बाङ्ला लेखकों के साथ स्वतंत्रता के बाद बाङ्ला कविता विषय पर परिसंवाद
27 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु लेखकों के साथ रायलसीमा के लेखकों के विशेष संदर्भ के साथ भारतीय साहित्य के निर्माता पर परिसंवाद
28 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

संस्कृत कवि के रूप में हरिराम आचार्य का मूल्यांकन पर परिसंवाद
24 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

स्वामी विवेकानंद : 21वीं सदी का एक वैश्विक स्वर पर परिसंवाद
12 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

विगत एक दशक का सिंधी कथेतर साहित्य विषय पर परिसंवाद
15 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

इक्कीसवीं सदी का कोंकणी महिला साहित्य विषय पर परिसंवाद
25 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

कश्मीरी साहित्य में नायक की अवधारणा पर परिसंवाद
29 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखकों के साथ सिनेमा में उपन्यास विषय पर परिसंवाद
01 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों/विद्वानों के साथ 1947 तक प्रारंभिक भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य पर परिसंवाद
02 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने राजस्थानी लेखकों के साथ राजस्थानी साहित्य में पत्रकारिता पर परिसंवाद
05 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने कोंकणी लेखकों के साथ कोंकणी कविता में शैलीगत वैविध्य पर परिसंवाद
08 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने असमिया लेखकों के साथ महिला रचनाकार तथा उनकी दुनिया पर परिसंवाद
11 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

गुजराती चारणी साहित्य : परंपरा और साहित्य पर परिसंवाद
12 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

समकालीन मैथिली नाटक के रुझान विषय पर परिसंवाद
13 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

संस्कृत साहित्य में सिख गुरुओं का चित्रण विषय पर परिसंवाद
20 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

डोगरी में निबंध लेखन की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ विषय पर परिसंवाद
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखकों के साथ कला और साहित्य विषय पर परिसंवाद
23 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

मी.पा. सोमसुंदरम जन्मशताब्दी पर परिसंवाद
24 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

सिंधी में पठन संस्कृति विषय पर परिसंवाद
06 मार्च 2021 (आभासी मंच)

स्वतंत्रता के पश्चात बाङ्ला नाटक विषय पर परिसंवाद
18 मार्च 2021, कोलकाता

कारवार क्षेत्र की कोंकणी कहानियाँ : पठन और संभाषण विषय पर परिसंवाद
19 मार्च 2021 (आभासी मंच)

पंजाबी साहित्य में महिलाएँ विषय पर परिसंवाद
19 मार्च 2021 (आभासी मंच)

मराठी साहित्य में प्रतीकों का योगदान विषय पर परिसंवाद
23 मार्च 2021 (आभासी मंच)

बोडो साहित्य पर सामाजिक चित्र का प्रतिबिंब विषय पर परिसंवाद
25 मार्च 2021 (आभासी मंच)

'इक़बाल, टैगोर तथा राधाकृष्णन : मानवतावाद के दर्शन के संदर्भ में' विषय पर परिसंवाद
25 मार्च 2021, मुजफ्फरपुर, बिहार

तमिऴ साहित्य और व्याकरण में हाल की प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद
25 मार्च 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ मिथिलाक्षर : स्थिति और अपेक्षाएँ विषय पर परिसंवाद
26 मार्च 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने अंग्रेज़ी लेखकों/विद्वानों के साथ भारत का केंद्रण : भारतीय शिक्षा में तुलनात्मक साहित्य पाठ्यक्रम विषय पर परिसंवाद
26 मार्च 2021 (आभासी मंच)

डोगरी साहित्य को ओ.पी.शर्मा 'सारथी' का योगदान विषय पर परिसंवाद
27 मार्च 2021 (आभासी मंच)

तेलुगु साहित्य में आत्मकथाएँ विषय पर परिसंवाद
27 मार्च 2021, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश

संताली में महिला लेखन विषय पर परिसंवाद
29 मार्च 2021 (आभासी मंच)

गुजरात का काछी साहित्य विषय पर परिसंवाद
29 मार्च 2021 (आभासी मंच)

आधुनिक असमिया साहित्य की प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद
30 मार्च 2021 (आभासी मंच)

वैश्विक संस्कृत साहित्य विषय पर परिसंवाद
31 मार्च 2021 (आभासी मंच)

स्वतंत्रता के बाद बाङ्ला कथासाहित्य
31 मार्च 2021 (आभासी मंच)

चंदुलाल जयसिंघानी का सिंधी साहित्य में योगदान विषय पर परिसंवाद
31 मार्च 2021 (आभासी मंच)

मेरे झरोखे से

जानेमाने कन्नड लेखक एवं अनुवादक श्री एम.एस. रघुनाथ ने प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. निसार अहमद के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
04 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

जानीमानी कन्नड लेखिका सुश्री उमा बी.एम. ने प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. गीता नागभूषण के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
31 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मराठी लेखक एवं समालोचक श्री संजय अरविकर ने प्रतिष्ठित मराठी कथाकार श्री कमल देसाई के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
02 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात गुजराती लेखिका सुश्री दर्शना ढोलकिया ने प्रतिष्ठित गुजराती लेखक एवं अनुवादक श्री भोलाभाई पटेल के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
09 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखक डॉ. वी. अरासु ने प्रतिष्ठित तमिऴ लेखक श्री तमिल ओली के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
11 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने गुजराती लेखक श्री नौशील मेहता ने प्रतिष्ठित तमिऴ लेखक श्री उत्पल भयानी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
16 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखक श्री के. जयकुमार ने प्रतिष्ठित मलयाळम् लेखक श्री ओ.एन.वी. कुरुप के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
16 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

जानेमाने सिंधी लेखक तथा समालोचक श्री साहिब बिजानी ने प्रतिष्ठित सिंधी लेखिका सुश्री इंद्रा वासवानी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
21 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री जेठो लालवानी ने प्रख्यात सिंधी लेखक श्री लेखू तुलसयानी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
01 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखक तथा अनुवादक श्री रामदास भटकल ने प्रख्यात मराठी कवि एवं समालोचक श्री ग्रेस के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
04 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखक एवं समालोचक श्री ऋषिकेश कांबले ने प्रख्यात मराठी लेखक श्री गंगाधर पंताड़े के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
19 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संस्कृत लेखिका डॉ. शशिरेखा ने प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. पी. श्रीरामचंद्रुडु के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
21 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओड़िआ लेखक श्री संतोष रथ ने प्रख्यात ओड़िआ लेखक डॉ. मधुसुदन पाटिल के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
21 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. शुद्र श्रीनिवास ने प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. बी.सी. रामचंद्र शर्मा के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
22 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानीमानी कोंकणी लेखिका सुश्री जयंती नायक ने प्रतिष्ठित कोंकणी लेखक डॉ. पी.जी. कामत के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
23 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मैथिली लेखक श्री रवींद्र कुमार चौधरी ने प्रतिष्ठित मैथिली लेखक, समालोचक एवं अनुवादक डॉ. प्रेमशंकर सिंह के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
23 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने तमिऴ लेखक डॉ. पी. आनंद कुमार ने प्रतिष्ठित तमिऴ लेखक श्री डी. सेल्वराज के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
27 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखक श्री आत्मारमण ने प्रतिष्ठित मलयाळम् लेखक श्री अक्कितम अच्युतन नंबूदरी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
29 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने डोगरी लेखक श्री मोहन सिंह ने प्रतिष्ठित डोगरी लेखक डॉ. कुलदीप सिंह जंद्रहिया के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
11 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. ए.वी. नागसम्पिगे ने प्रतिष्ठित संस्कृत लेखक डॉ. के. टी. पांडुरंगी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
17 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने तेलुगु लेखक श्री कोगंटि विजत ने प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री देवीप्रिया के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
19 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने मलयाळम् लेखक श्री के. जयकुमार ने प्रतिष्ठित मलयाळम् लेखक डॉ. सुगता कुमार के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
22 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

जानेमाने बोडो लेखक श्री भौमिक चंद्र बर' ने प्रख्यात बोडो लेखक डॉ. ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
23 मार्च 2021, कोकराझार, असम

युवा साहिती

युवा बाङ्ला लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
14 जून 2020 (आभासी मंच)

युवा पंजाबी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
17 जून 2020 (आभासी मंच)

युवा बाङ्ला लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
18 जून 2020 (आभासी मंच)

युवा राजस्थानी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
16 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

युवा सिंधी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
17 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

युवा संताली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
28 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

युवा मराठी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
29 जुलाई 2020 (आभासी मंच)

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
05 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

युवा ओड़िआ लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
24 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

युवा मलयाळम् लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
25 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

युवा असमिया लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
31 अगस्त 2020 (आभासी मंच)

युवा गुजराती लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
15 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा ओड़िआ लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
22 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा संस्कृत लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
23 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
24 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

संविधान और नागरिक कर्त्तव्यों पर युवा तमिऴ लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
28 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा बाङ्ला लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
28 सितंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा हिंदी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
07 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

युवा पंजाबी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
12 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

युवा राजस्थानी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
26 अक्तूबर 2020 (आभासी मंच)

युवा असमिया लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
03 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा पंजाबी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
09 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा संस्कृत लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
13 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा नेपाली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
18 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
20 नवंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा नेपाली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
14 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा राजस्थानी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
18 दिसंबर 2020 (आभासी मंच)

युवा पंजाबी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
14 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
30 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

युवा बोडो लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
30 जनवरी 2021 (आभासी मंच)

युवा कोंकणी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
17 फ़रवरी 2021 (आभासी मंच)

युवा हिंदी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
09 मार्च 2021 (आभासी मंच)

वर्ष 2020-2021 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद, वित्त समिति, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल की बैठकें

तिथि	स्थान
24 अगस्त 2020	आभासी मंच
12 मार्च 2021	नई दिल्ली

सामान्य परिषद् की बैठकें

तिथि	स्थान
24 अगस्त 2020	आभासी मंच
13 मार्च 2021	नई दिल्ली

वित्त समिति की बैठकें

तिथि	स्थान
31 जुलाई 2020	नई दिल्ली
8 मार्च 2021	आभासी मंच

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	9 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	9 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
उत्तरी क्षेत्रीय मंडल	19 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	19 अक्तूबर 2020	आभासी मंच

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
असमिया	9 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
बाङ्ला	8 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
बोडो	1 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
डोगरी	3 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
अंग्रेज़ी	25 जनवरी 2021	आभासी मंच
गुजराती	3 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
हिंदी	1 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
कन्नड	11 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
कश्मीरी	24 फ़रवरी 2021	श्रीनगर
कोंकणी	5 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
मलयाळम्	10 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
मैथिली	19 जनवरी 2021	आभासी मंच
मणिपुरी	4 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
मराठी	4 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
नेपाली	9 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
ओड़िआ	18 फ़रवरी 2021	भुवनेश्वर
पंजाबी	22 फ़रवरी 2021	नई दिल्ली
राजस्थानी	25 जनवरी 2021	आभासी मंच
संस्कृत	21 जनवरी 2021	आभासी मंच
संताली	8 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
सिंधी	21 जनवरी 2021	आभासी मंच
तमिऴ	11 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
तेलुगु	10 फ़रवरी 2021	आभासी मंच
उर्दू	2 फ़रवरी 2021	आभासी मंच

अन्य क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
साहित्य अकादेमी की फ़िल्म अभिलेख समिति	10 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
वाचिक तथा जनजातीय साहित्य का पूर्वोत्तर केंद्र	13 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
अनुवाद केंद्र के लिए सलाहकार समिति	14 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
वाचिक तथा जनजातीय साहित्य केंद्र	15 अक्तूबर 2020	आभासी मंच
भाषा विकास मंडल	16 अक्तूबर 2020	आभासी मंच

पुस्तक प्रदर्शनियाँ/मेले

पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची आयोजन एवं सहभागिता : 2020-2021

प्रधान कार्यालय

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1	फ्रैंकफर्ट डिजिटल पुस्तक मेले में भाग लिया।	14 से 18 अक्तूबर 2020 तक
2	साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	9 से 23 अक्तूबर 2020 तक
3	दिल्ली डिजिटल पुस्तक मेले में भाग लिया।	30 अक्तूबर से 1 नवंबर 2020 तक
4	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर रवींद्र भवन, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	18 से 27 नवंबर 2020 तक
5	आज़मगढ़ पुस्तक मेला, शिब्ली कॉलेज, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश में भाग लिया।	27 जनवरी से 2 फ़रवरी 2021 तक
6	नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में आभासी मंच के माध्यम से भाग लिया।	6 से 9 मार्च 2021 तक

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी।	18 से 27 नवंबर 2020 तक
2	33वाँ गुवाहाटी पुस्तक मेला।	30 दिसंबर 2020 से 10 जनवरी 2021 तक
3	साहित्य उत्सव तथा लिटिल मैगज़ीन मेला, कोलकाता।	3 से 6 फ़रवरी 2021 तक
4	दार्जीलिंग ज़िला पुस्तक मेला, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल।	6 से 9 फ़रवरी 2021 तक
5	कलिम्पोंग ज़िला पुस्तक मेला, कलिम्पोंग, पश्चिम बंगाल।	11 से 14 फ़रवरी 2021 तक
6	भुवनेश्वर में किताब घर के उद्घाटन के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी।	18 फ़रवरी 2021
7	झारखंड के चाकुलिया में ऑल इंडिया संताली राइटर्स एसोसिएशन के 33वें वार्षिक सम्मलेन के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी।	20 से 21 फ़रवरी 2021 तक

8	अगरतला पुस्तक मेला अगरतला, त्रिपुरा	26 फ़रवरी से 11 मार्च 2021 तक
9	भुवनेश्वर पुस्तक मेला, अगरतला, त्रिपुरा	26 फ़रवरी से 4 अप्रैल 2021 तक
10	आब्रित्तिलोक तथा ई.ज़ैड.सी.सी. के सहयोग से कविता उत्सव के अवसर पर शांतिनिकेतन में पुस्तक प्रदर्शनी।	28 फ़रवरी 2021

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1	मुंबई में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर।	18 से 27 नवंबर 2020 तक
2	मराठी भाषा संवर्धन पंधारवाड़ा के अवसर पर प्रभादेवी, मुंबई में आयोजित।	21 से 23 जनवरी 2021 तक
3	सांगली, महाराष्ट्र में मेसर्स प्रसाद वितरण ग्रंथ दलन द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान उनके माध्यम से साहित्य अकादेमी पुस्तकें प्रदर्शित तथा बेची गईं।	10 से 31 जनवरी 2021 तक
4	अखिल भारतीय मराठी साहित्य परिषद, नासिक, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित 94वें अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन में भाग लिया।	26 से 28 मार्च 2021 तक

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के भाग के रूप में पुस्तक प्रदर्शनी	16 से 27 नवंबर 2020 तक
2	पुदुचेरी पुस्तक महोत्सव	18 से 27 दिसंबर 2020 तक
3	चेन्नै पोंगल बुक फेयर	08 से 18 जनवरी 2021 तक
4	रामनाथपुरम पुस्तक मेला	22 जनवरी से 04 फ़रवरी 2021 तक
5	चेन्नै पुस्तक मेला	24 फ़रवरी से 09 मार्च 2021

1 अप्रैल 2020 से 31 मार्च 2021 तक प्रकाशित पुस्तकें

बाङ्ला

भास
(अंग्रेजी जीवनी का बाङ्ला अनुवाद)
ले. वी. वेंकटचलम
बाङ्ला अनु. प्रताप बंद्योपाध्याय
पृ. 192, ₹ 240/-
ISBN: 978-81-7201-696-8
(द्वितीय पुनर्मुद्रण)

बिकसित सत पुष्प
(100 कवियों द्वारा 100 कविताओं का संकलन)
संक. एवं संपा. : सुनील गंगोपाध्याय
पृ.100, ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-3296-9
(तृतीय पुनर्मुद्रण)

गा-ए-गीत (पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रह, *गा-गीत*)
ले. मोहन आलोक
बाङ्ला अनु. ज्योतिर्मय दास
पृ.96, ₹ 170/-
ISBN: 978-93-89778-15-1

गोदान (हिंदी उपन्यास)
ले. प्रेमचंद
बाङ्ला अनु. रणजीत सिन्हा
पृ.288, ₹ 280/-
ISBN: 978-81-260-2319-6
(सातवाँ पुनर्मुद्रण)

कंगल हरिनाथ (बाङ्ला लेखक पर विनिबंध)
ले. अशोक चट्टोपाध्याय
पृ.168, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-16-8

करमाजव भायेरा खंड-1
(रूसी उपन्यास, *ब्रत'या कर्माज़ोवी*)
ले. फ्योद्र दोस्तोयेव्स्की
बाङ्ला अनु. अरुण सोम
पृ.84, ₹ 580/-
ISBN: 978-93-89778-41-0

करमाज़व भायेरा खंड-2
(रूसी उपन्यास, ब्रत'या कर्माजोवी)
ले. फ्योद्र दोस्तोयेव्स्की
बाङ्ला अनु. अरुण सोम
पृ.134, ₹ 710/-
ISBN: 978-93-89778-40-3

कृष्ण चंद्रेर निर्बाचित गल्प
(चुनिंदा हिंदी कहानियाँ)
ले. कृष्ण चंद्र
बाङ्ला अनु. ननी सूर
पृ.156, ₹ 210/-
ISBN: 978-81-260-2502-2
(चतुर्थ पुनर्मुद्रण)

लेटर्स ऑफ़ नेताजी
पृ.488, निशुल्क वितरण हेतु
ISBN: 978-81-950742-6-6

चीनी

आरोग्य निकेतन (पुरस्कृत बाङला उपन्यास, *आरोग्य निकेतन*)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
चीनी अनु. धिती रॉय
पृ.492, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-90310-96-8

इल्लु (द हाउस) (तेलुगु उपन्यास, *इल्लु*)
ले. राचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री
चीनी अनु. लियू केके
पृ.192, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-94-4

लोंगिंग फ़ॉर सनशाइन
(असमिया उपन्यास, *सूर्य मुखीर स्वप्न*)
ले. सैयद अब्दुल मलिक
चीनी अनु. सहेली छत्तराज
पृ.192, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-91-3

मिस्ट्री ऑफ द मिसिंग कैप
(पुरस्कृत कहानी-संग्रह, *मनोज दसंक कथा ओ कहिनी*)
ले. मनोज दास
चीनी अनु. यू बेईबेई
पृ.360, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-90310-98-2

ऑफ़ मैन एंड मोमेंट्स
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास, *सिला नेरंगालिल सिला मनिदारगळ*)
ले. जयकांतन
चीनी अनु. काई युलियांग (Cai Yuliang)
पृ.280, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-90310-95-1

ऑर्डेनड बाइ फेट
(पुरस्कृत उर्दू उपन्यास, *एक चादर मैली सी*)
ले. राजिंदर सिंह बेदी
चीनी अनु. मधुरेंद्र झा
पृ.102, ₹ 175/-
ISBN: 978-93-90310-92-0

पर्व (आधुनिक कन्नड कालजयी कृति, *दातु*)
ले. एस.एल. भैरप्पा
चीनी अनु. बी.आर. दीपक एवं एक्सउ के (Xu Ke)
पृ.888, ₹ 950/-
ISBN: 978-93-90310-89-0

द लास्ट एग्जिट (पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह, *कव्वे और काला पानी*)
ले. निर्मल वर्मा, चीनी अनु. दयावंती
पृ.170, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-97-5

द लास्ट फ्लिक्कर
(पंजाबी उपन्यास, *मढ़ी दा दीवा*)
ले. गुरदियाल सिंह
चीनी अनु. चेन ज़ीआओदी, (Chen Xiaodie)
पृ.132, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-90310-90-6

द प्रॉमिस्ड हैंड
(गुजराती उपन्यास, *वेविशाल*)
ले. झावेरचंद मेघानी
चीनी अनु. लिउ जिन्क्सिऊ (Liu Jinxiu)
पृ.256, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-90310-93-7

डोगरी

आधुनिक भारतीय कविता संचयन (पंजाबी (1950-2010))
संपा. : जसविंदर सिंह
डोगरी अनु. विजय वर्मा
पृ.120, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-89778-17-3

बदलदे चेहरे (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. डी. जयकांतन
डोगरी अनु. चंचल भसीन
पृ.304, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-15-9

भगत (पुरस्कृत सिंधी कविता-संग्रह, *भगत*)
ले. प्रेम प्रकाश
डोगरी अनु. सुनीता भड़वाल
पृ.172, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-90310-21-0

भज्जे त्रुत्ते भूत (पुरस्कृत उर्दू कृति)
ले. सलाम बिन रज़्ज़ाक़
डोगरी अनु. कृष्ण शर्मा
पृ.240, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-90310-62-3

इक दुनिया मेरी वी
(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह, *एक दुनिया म्हारी*)
ले. सांवर दइया
डोगरी अनु. शिव दोबालिया
पृ. 308, ₹ 135/-
ISBN: 978-93-89778-87-8

गुलेरी जी होरे दियां चर्चित कहानियाँ
संपा. प्रत्यूष गुलेरी एवं पीयूष गुलेरी
पृ.100, ₹ 130/-
ISBN: 978-93-89778-86-1

मदन मोहन शर्मा
(डोगरी लेखक पर विनिबंध)
ले. प्रकाश प्रेमी
पृ.120, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-59-3

सरोकार (पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह, सरोकार)
ले. प्रदीप बिहारी
डोगरी अनु. यशपाल निर्मल
पृ.654, ₹ 165/-
ISBN: 978-93-90310-13-5

उदास रुख (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास, *उदासीन रुखहारु*)
ले. प्रेम प्रधान
डोगरी अनु. शायमलाल रैना
पृ.576, ₹ 175/-
ISBN: 978-93-90310-63-0

उठाईगीर (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. लक्ष्मण गायकवाड़
डोगरी अनु. राजेश मनहास
पृ.167, ₹ 180/-
ISBN: 978-93-90310-19-7

अंग्रेज़ी

ए क्रिटिकल इन्वेंटरी ऑफ़ रामायण-1
(साहित्य अकादेमी और संघ अकादमी इंटरनेशनल ब्रूसल्स की संयुक्त परियोजना)
ले. के. कृष्णमूर्ति
पृ.548, ₹ 450/-
ISBN: 978-93-90310-44-9

ए क्रिटिकल इन्वेंटरी ऑफ रामायण-2
(साहित्य अकादेमी और संघ अकादमी इंटरनेशनल ब्रूसल्स की संयुक्त परियोजना)
ले. के. कृष्णमूर्ति
पृ. 548, ₹ 450/-
ISBN: 978-93-90310-44-9

आरोग्य निकेतन (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *आरोग्य निकेतन*)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अंग्रेज़ी अनु. इनाक्षी चटर्जी
पृ.352, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-89778-99-1

हरिदास सिद्धांत वागीश
(संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. रीटा चट्टोपाध्याय
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-46-3

इन मेमोरिअम : स्मरण एंड पलातका
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अंग्रेज़ी अनु. संजुक्ता दासगुप्ता
पृ.100, ₹ 125/-
ISBN: 978-93-90310-27-2

इल्लु (द हाउस) (तेलुगु उपन्यास, *इल्लु*)
ले. रचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री
अंग्रेज़ी अनु. एम. श्रीधर एवं अल्लादी उमा
पृ.160, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-00-5

इंद्र बहादुर राइ
(नेपाली लेखक पर विनिबंध)
ले. मोनिका मुखिया
पृ.96, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-950217-9-6

जोगिंदर पॉल
(उर्दू लेखक पर विनिबंध)
ले. चंदना दत्ता एवं अबू ज़हीर रब्बानी
पृ.119, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-950217-2-7

लैटर्स ऑफ़ नेताजी
पृ.488, निशुल्क वितरण हेतु
ISBN: 978-81-950742-0-4

लिटरेरी क्रिटिसिज़्म इन इंडिया : टेक्स्ट्स, ट्रेंड्स एंड ट्रजेक्टरीज़
(संगोष्ठी आलेख)
संपादन : ई.वी. रामकृष्णन
पृ.292, ₹ 270/-
ISBN: 978-81-950217-5-8

लाँगइंग फ़ॉर सनशाइन
(असमिया उपन्यास, *सूर्य मुखीर स्वप्न*)
ले. सैयद अब्दुल मलिक
अंग्रेज़ी अनु. प्रदीप आचार्य
पृ.192, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-01-2

मोती प्रकाश
(सिंधी लेखक पर विनिबंध)
ले. अरुण बबानी
पृ.72, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-26-5

मिस्ट्री ऑफ़ द मिसिंग कैप
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह, *मनोज दसंक कथा ओ कहिनी*)
ले. मनोज दास
पृ.334, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-90310-02-9

नरहर कुरुंदकर (विनिबंध)
ले. एल.एस. देशपांडे
पृ.94, ₹ 50/-
ISBN: 81-260-2039-3 (पुनर्मुद्रण)

एनईएफ़ए एंड आई
(असमिया आत्मकथा)
ले. इंदिरा मिरी
अंग्रेज़ी अनु. मृणाल मिरी
पृ.136, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-90866-02-1

ऑफ़ मैन एंड मोमेंट्स
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास, *सिला नेरंगालिल सिला मनिदार्गळ*)
ले. जयकांतन
अंग्रेज़ी अनु. के. एस. सुब्रह्मण्यन
पृ.288, ₹ 350/-
ISBN: 978-81-260-4363-7

ऑर्डेन्ड बाई फेट
(पुरस्कृत उर्दू उपन्यास, *एक चादर मैली सी*)
ले. राजिंदर सिंह बेदी
अंग्रेज़ी अनु. अवतार सिंह जज
पृ.112, ₹ 175/-
ISBN: 978-93-90310-03-6

पेंटिंग ऑफ़ द स्काई एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह, *अक्षर सोबी अरु अन्यान्य गल्प*)
ले. कुलशइकिया
अंग्रेजी अनु. परबीन रशीद
पृ. 88, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-950217-3-4

पर्व (आधुनिक कन्नड कालजयी कृति, *दातु*)
ले. एस. एल. भैरप्पा
अंग्रेज़ी अनु. के. राघवेंद्र राव
पृ.964, ₹ 750/-
ISBN: 978-93-90310-07-4

प्रोज़ राइटिंगस फ्रॉम नार्थ ईस्ट इंडिया
(पद्य संकलन)
संपादन : एम. जैकब एवं
जयदीप सारंगी
पृ.168, ₹ 190/-
ISBN: 978-81-950217-4-1

रामायण इन साउथईस्ट एशिया
(Vol- 1) (थाई रामायण)
ले. सत्यव्रत शास्त्री
पृ.440, ₹ 2,500/-
ISBN: 978-93-89778-98-4

शहरयार (उर्दू लेखक पर विनिबंध)
ले. मोहम्मद आसिम सिद्दीक़ी
पृ.120, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-62-5

द फोर्लोर्न ट्रीज (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास, *उदासीन रुखहारू*)
ले. प्रेम प्रधान
अंग्रेजी अनु. सृजन सुब्बा
पृ.148, ₹ 160/-
ISBN: 978-93-89467-80-2

द लास्ट एग्जिट (पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह, *कव्वे और काला पानी*)
ले. निर्मल वर्मा
अंग्रेज़ी अनु. कुलदीप सिंह एवं
गिरधर राठी
पृ.152, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-06-7

द लास्ट फ्लिक्कर
(पंजाबी उपन्यास, *मढ़ी दा दीवा*)
ले. गुरदियाल सिंह
अंग्रेजी अनु. अजमेर एस. रोडे
पृ.128, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-90310-04-3

द लाफिंग फ्लेमस एंड अदर पोएमस
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *आग की हँसी*)
ले. रामदरश मिश्र
अंग्रेज़ी अनु. उमेश कुमार
पृ.112, ₹ 110/-
ISBN: 978-93-90866-00-7

द प्रॉमिस्ड हैंड
(गुजराती उपन्यास, *वेविशाल*)
ले. झावेरचंद मेघानी
अंग्रेज़ी अनु. अशोक मेघानी
पृ.232, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-90310-05-0

टू प्लेज़ बाय आत्मजीत
(आधुनिक भारतीय नाट्य शृंखला)
ले. आत्मजीत
अंग्रेजी अनु. पंकज के. सिंह
पृ.140, ₹ 120/-
ISBN: 978-93-89467-60-4

वा. रा.(वा. रामासामी)
(तमिऴ लेखक पर विनिबंध)
ले. सु. वेंकटरमन
अंग्रेज़ी अनु. एस. विंसेंट
पृ.88, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-24-1

गुजराती

पन्नालाल पटेल
(गुजराती लेखक पर विनिबंध)
ले. रघुवीर चौधरी
पृ.79, ₹ 50/-
ISBN: 81-7201-495-3 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी

आधुनिक गुजराती कविताएँ
संपादन, संचयन एवं हिंदी अनुवाद :
वर्षा दास
पृ.125, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-90310-28-9

अचरज गृह की दंतकथा
ले. ताज़िमा सिंज़ी
हिंदी अनु. हरीश नारंग
पृ.64, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-260-0224-5

आलोक (पुरस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. आशाराम लोमटे
हिंदी अनु. प्रकाश भातंब्रेकर
पृ.196, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-90310-29-6

अमावस की रात (पुरस्कृत पंजाबी नाटक *मस्या दी रात*)
ले. स्वराजबीर
हिंदी अनु. फूलचंद मानव
पृ.86, ₹ 125/-
ISBN: 978-93-90310-73-2

अंतरिक्ष में विस्फोट
ले. जयंत विष्णु नारलीकर
हिंदी अनु. सुरेखा पाणंदीकर
पृ.92, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-7201-423-0

बापू कथा चौदस
(महात्मा गाँधी की जीवन गाथा)
ले. मधुकर उपाध्याय
पृ.99, ₹ 125/-
ISBN: 978-81-950217-0-3

भारतीय बाल कहानियाँ-1
संपादन : हरिकृष्ण देवसरे
पृ.96, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2676-0

भारतीय बाल कहानियाँ-2
संपादन : हरिकृष्ण देवसरे
पृ.104, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2677-7

भारतीय बाल कहानियाँ-3
संपादन : हरिकृष्ण देवसरे
पृ.90, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2678-4

भारतीय बाल कहानियाँ-4
संपादन : हरिकृष्ण देवसरे
पृ.108, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2740-8

बुलबुल की किताब
ले. उपेंद्र किशोर रायचौधुरी
हिंदी अनु. स्वप्न दत्ता
पृ.76, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-7201-481-0

दादा और पोता
ले. लक्ष्मीनाथ बेज़बरुआ
हिंदी अनु. दिनकर कुमार
पृ.148, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2043-0

फ़कीर मोहन सेनापति की कहानियाँ
चयन, संपादन एवं हिंदी अनुवाद : अरुण होता
पृ.220, ₹ 215/-
ISBN: 978-93-89778-25-0

गाँधी और 1980 के बाद का साहित्य
संपादन : आलोक गुप्त
पृ.248, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-41-8

गोसाईं बागन का भूत
ले. शिर्षेंदु मुखोपाध्याय
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ.88, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-260-0226-9

गोट्या
ले. एन. डी. तम्हणकर
हिंदी अनु. सुरेखा पाणंदीकर
पृ.68, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-7201-244-1

गोविंद बल्लभ पंत (विनिबंध)
ले. शेरसिंह बिष्ट
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-22-7

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ-1
ले. जेकोब लुडबिग कार्ल ग्रिम
हिंदी अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.220, ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-2040-9

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ-2
ले. जेकोब लुडबिग कार्ल ग्रिम
हिंदी अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.220, ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-2041-6

हैंस एंडरसन की कहानियाँ-1
ले. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.248, ₹ 25/-
ISBN: 978-81-260-2487-2

हैंस एंडरसन की कहानियाँ-2
ले. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.228, ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-2488-9

इक्षुगंधा
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
हिंदी अनु. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ.71, ₹ 115/-
ISBN: 978-93-89778-20-5

जलपरी का मायाजाल
ले. वेबस्टर डेविस जिरवा
हिंदी अनु. अल्मा सोहाल्या
पृ.48, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1817-8

जंगल कथा
ले. ओरासियो किरोगा
हिंदी अनु. प्रीति पंत
पृ.60, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2555-8

जंगल टापू
ले. जसबीर भुल्लर
हिंदी अनु. शांता ग्रोवर
पृ.64, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-7201-482-7

कमला प्रसाद मिश्र काव्य-संचयन
संपादन : सुरेश ऋतुपर्ण
पृ.356, ₹ 300/-
ISBN: 978-81-950217-6-5

खरपतवार
(पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. राजन गवास
हिंदी अनु. जी. थोराट
पृ.272, ₹ 220/-
ISBN: 978-93-90310-75-3

ख़ज़ाने वाली चिड़िया
ले. प्रकाश मनु
पृ.144, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-4763-5

किशोर कहानियाँ
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ.160, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-0747-9

कोई दूसरा
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. हरिकृष्ण डेका
हिंदी अनु. बिनोद रिंगानिया
पृ.70, ₹ 140/-
ISBN: 978-93-90866-40-3

लघु कथा संग्रह-1
ले. जयमंत मिश्र
पृ.128, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1219-0

लघु कथा संग्रह-2
ले. जयमंत मिश्र
पृ.152, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1219-0

मातलोक
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. जसविंदर सिंह
हिंदी अनु. राजेंद्र तिवारी
पृ.382, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-90310-74-6

नेताजी के पत्र
पृ. 488, निशुल्क वितरण हेतु
ISBN: 978-81-950742-1-1

निर्बुद्धि का राजकाज
ले. गोपाल दास
पृ.96, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-996-9

पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी (विनिबंध)
ले. सुशील त्रिवेदी
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-08-1

वेस्टर्न रीजन्स ग़ज़ल्स (संगोष्ठी आलेख)
संपादन : वासदेव मोही
पृ.164, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-89778-63-2

प्राप्ति (पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. पारमिता शतपथी
हिंदी अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ.242, ₹ 230/-
ISBN: 978-93-90310-47-0

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन
संपादन : दिविक रमेश
पृ.706, ₹ 550/-
ISBN: 978-93-89778-19-9

प्रेमचंद : चुनिंदा कहानियाँ-1
ले. प्रेमचंद
संपादन : अमृत राय
पृ.100, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-7201-975-4

प्रेमचंद : चुनिंदा कहानियाँ-2
ले. प्रेमचंद
संपादन : अमृत राय
पृ.100, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-7201-996-8

रबींद्रनाथ का बाल साहित्य-1
ले. रबींद्रनाथ ठाकुर
संपादन : लीला मजुमदार एवं क्षतिज राय
पृ.162, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-0009-8

रबींद्रनाथ का बाल साहित्य-2
ले. रबींद्रनाथ ठाकुर
संपादन : लीला मजुमदार एवं क्षतिज राय
पृ.152, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-0008-1

रामविलास शर्मा रचना संचयन
संपादन : हरिमोहन शर्मा
पृ.492, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-89778-21-2

शमशेर रचना संचयन
संपादन : शंभू बादल
पृ.394, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-90866-42-7

श्री वल्लभाचार्य (विनिबंध)
ले. उदय प्रताप सिंह
पृ.92, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-950217-7-2

श्रीलाल शुक्ल (विनिबंध)
ले. प्रेम जनमेजय
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-09-8

सुकुमार राय : चुनिंदा कहानियाँ
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ.80, ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1415-6

सुनो कहानी
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ.60, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-092-8

सूरज और मोर
ले. वेबस्टार डेविस जिरवा
हिंदी अनु. अल्मा सुहाल्या
पृ.72, ₹ 75/-
ISBN: 978-81-260-1818-5

विष्णु प्रभाकर रचना-संचयन
ले. अतुल कुमार
पृ.390, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-90310-72-2

कन्नड

जनपद मट्टू गिरिजानारा कथेगळु
(कन्नड की लोक तथा आदिवासी कथाओं का संकलन)
ले. एल.आर. हेगड़े
पृ.488, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-89778-71-7
(पुनर्मुद्रण)

मास्ती वेंकटेश अयंगर बडुकु - बाराह
(जीवन और साहित्य का संपूर्ण अध्ययन)
ले. एस.आर. विजयशंकर
पृ.224, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-90310-99-9

मोगेरी गोपालकृष्ण अडिग
(कन्नड लेखक पर विनिबंध)
ले. बी.वी. केडिलाया
पृ.116, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-83-0

नीलिहाक्की (पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रह *लीलटांस*)
ले. कन्हैयालाल सेठिया
कन्नड अनु. एस. पद्म प्रसाद
पृ.92, ₹ 135/-
ISBN: 978-93-90310-12-8

स्वातंत्र्योतर कन्नड नाटकगळु
(स्वतंत्रता के बाद के कन्नड नाटकों का संकलन)
ले. जयप्रकाश माविनाकुली
पृ.496, ₹ 430/-
ISBN: 978-93-90310-48-7

स्वातंत्र्योतर कन्नड सन्ना कथेगळु
(स्वतंत्रता के बाद की कन्नड कहानियों का संकलन)
ले. करिगौड़ा बेचनहल्ली
पृ.448, ₹ 325/-
ISBN: 978-93-89778-24-3

विश्वनाथ सत्यनारायण (विनिबंध)
ले. कोवेला संपतकुमाराचार्य
कन्नड अनु. टी.एस. नागराजा शेट्टी
पृ.112, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-67-0

चंडीदासन प्रेमा कविथेगळु
(चंडीदास के प्रेम गीत)
ले. चंडीदास
कन्नड अनु. एम.एन. व्यास राव
पृ.168, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-89778-95-3

कश्मीरी

दीना नाथ नदीम (संगोष्ठी आलेख)
संपादन : गुलज़ार रथार
पृ.172, ₹ 260/-
ISBN: 978-93-90866-32-8

श्रीनारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
कश्मीरी अनु. रियाज़ुल हसन
पृ.154, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-39-7

यी प्रोन साज़ (ओ.एन.वी. कुरुप की चयनित कविताएँ)
संपादन : ओ.एन.वी. कुरुप
कश्मीरी अनु. चमन लाल सप्रू
पृ.213, ₹ 320/-
ISBN: 978-93-90866-45-5

कोंकणी

कोंकणी लोककांयो
ले. जयंती नायक
पृ.264, ₹ 295/-
ISBN: 81-260-0737-0 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली लोक कथाएँ (खंड I)
(बाल साहित्य)
ले. प्रकाश पी. उपाध्याय
कोंकणी अनु. किरण महाम्ब्रे
पृ.112, ₹ 160/-
ISBN: 978-93-89778-64-9

शेनोई गोएमबाब
(कोंकणी लेखक पर विनिबंध)
ले. आर. एन. नायक
पृ.128, ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1143-2 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली

आधुनिक बोडोक छोट-छोट खिस्सा-पिलानी (अकादेमी प्रकाशन)
संपादन : जयकांत वर्मा
मैथिली अनु. अजय कुमार झा
पृ.168, ₹ 110/-
ISBN: 978-93-89778-89-2

आधुनिक मैथिली साहित्यिक शिल्पी
(संगोष्ठी आलेख)
ले. बीना ठाकुर
पृ.148, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-89778-91-5

अमलतासक छाहरेमी
(अंग्रेज़ी में पुरस्कृत कृति)
ले. तेमसुला आओ
मैथिली अनु. ओ.पी. झा
पृ.160, ₹ 130/-
ISBN: 978-93-90310-16-6

अनहार कोलखी
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. अखिल मोहन पटनायक
मैथिली अनु. परमानंद प्रभाकर
पृ.171, ₹ 170/-
ISBN: 978-93-90310-68-5

बाबू गंगापति सिंह
(मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. खुशीलाल झा
पृ.92, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-92-2

भगवानक खेलोर
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. एम. मुकुंदन
मैथिली अनु. जयंती मिश्रा
पृ.308, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-90310-20-3

चिड़े (पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
ले. रामलाल
मैथिली अनु. सदरे आलम गौहर
पृ.148, ₹ 195/-
ISBN: 978-93-90310-60-9

दामोदर लाल दास
(मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. भैरव लाल दास
पृ.124, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-57-9

धरा गीत (पूर्वोत्तरी कहानियाँ)
संपादन : कैलाश सी. बराल
मैथिली अनु. नरेंद्रनाथ झा
पृ.152, ₹ 165/-
ISBN: 978-93-90310-67-8

हमार बाबूकमीत
(पुरस्कृत तमिऴ कहानी-संग्रह, *अप्पाविन स्नेहिदर*)
ले. अशोक मित्रन
मैथिली अनु. राजा राम प्रसाद
पृ.172, ₹ 180/-
ISBN: 978-93-90310-52-4

हरिमोहन झा ओ रचनाकर
(संगोष्ठी आलेख)
संपादन : शंकर देव झा
पृ.196, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-90310-18-0

काल पहर आ घड़ी
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह)
ले. वनीता
मैथिली अनु. पंकज पराशर
पृ.347, ₹ 170/-
ISBN: 978-93-90310-66-1

महाप्रकाश
(मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. तारानंद वियोगी
पृ.140, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-58-6

मॉरिशस की हिंदी कहानियाँ
(अकादेमी प्रकाशन)
ले. कमल किशोर गोयनका
मैथिली अनु. रवींद्रनाथ झा
पृ.440, ₹ 450/-
ISBN: 978-93-90310-65-4

पाटदेई
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. बीनापाणी मोहंती
मैथिली अनु. चंद्रमणि झा
पृ.120, ₹ 145/-
ISBN: 978-93-90310-64-7

साहित्य महारथी आचार्य सुरेंद्र झा सुमन (संगोष्ठी आलेख)
संपादन : बीना ठाकुर
पृ.88, ₹ 165/-
ISBN: 978-93-89778-88-5

समकालीन मैथिली कथा संचयन
(संकलन)
संपादन : बीना ठाकुर एवं अशोक कुमार झा 'अविचल'
पृ.112, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-89778-85-4

शिवकामिक शपथ
(तमिऴ उपन्यास, *शिवगामिन शपथम्*)
ले. कल्कि
मैथिली अनु. शालिनी झा
पृ.576, ₹ 500/-
ISBN: 978-93-90310-14-2

तन्मय धूली
(पुरस्कृत ओडिआ कविता-संग्रह)
ले. प्रतिभा सत्पथी
मैथिली अनु. इंद्रकांत झा
पृ.100, ₹ 135/-
ISBN: 978-93-90310-53-1

मलयाळम्

अनुभवथिंटे आकाशथिल चंद्रन
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *अनुभव के आकाश में चाँद*)
ले. लीलाधर जगूड़ी
मलयाळम् अनु. संतोष एलेक्स
पृ.124, ₹ 165/-
ISBN: 978-93-90310-33-3

चागंटी सोमायआजुलुविंटे कथकळ
(चागंती सोमायआजुलु की चयनित कहानियाँ)
ले. चागंती सोमायअजुलु
मलयाळम् अनु. एल.आर. स्वामी
पृ.192, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-90310-23-4

के. सरस्वती अम्मा
(मलयाळम् लेखक पर विनिबंध)
ले. सी.एस. चंद्रिका
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 81-260-0937-3

कवलम नारायण पणिक्कर
(मलयाळम् लेखक पर विनिबंध)
ले. आनंद कवलम
पृ.80, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-70-8

कुरुथि पुनल (पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास, *कुरुथिप पुनल*)
ले. इंदिरा पार्थसारथी
मलयाळम् अनु. पी.के. श्रीनिवासन
पृ.240, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-32-6

एम. गोविंदन
(मलयाळम् लेखक पर विनिबंध)
ले. थॉमस मैथ्यू
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-79-3

मधुपुर ओर्माकळ (पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह, *मधुपुर बहुदुर*)
ले. शीलभद्र
मलयाळम् अनु. ए. अरविंदाक्षन
पृ.120, ₹ 125/-
ISBN: 978-93-89778-70-0

वी.पी. शिवकुमार
(मलयाळम् लेखक पर विनिबंध)
ले. के. राजन
पृ.92, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-77-9

मणिपुरी

अमामबा खामनुंग लांबी
(पुरस्कृत ओडिआ कहानी-संग्रह)
ले. अखिल मोहन पटनायक
मणिपुरी अनु. नबकुमार नोंगमेईकापम
पृ.252, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-89778-59-5

मणिपुरी ऐबीशिंगी खोमजिनबा वारिमाचा (महिला लेखिकाओं द्वारा लिखित मणिपुरी कहानियों का संकलन)
संकलन : माया नेप्रम देवी
पृ.108, ₹ 210/-
ISBN: 978-93-89778-61-8

मणिपुरी वारिमाचा (कहानी संकलन)
संपादन : अरिबम कुमार शर्मा
पृ.156, ₹ 230/-
ISBN: 978-81-7201-620-3
(तृतीय पुनर्मुद्रण), (किंतु मंत्रालय के निदेशानुसार इसे द्वितीय पुनर्मुद्रण ही रखा गया है।)

मराठी

आधुनिक स्तोत्र (पुरस्कृत अंग्रेज़ी कविता-संग्रह, *लैटर - डे साल्म्स*)
ले. निस्सिम ईज़ेकल
मराठी अनु. प्रदीप जी. देशपांडे
पृ.140, ₹ 130/-
ISBN: 81-7201-669-7 (पुनर्मुद्रण)

वाङ्मईइतिहासचे पुनर्लेखन
(संगोष्ठी आलेख)
ले. शोभा नायक एवं रणधीर शिंदे
पृ.384, ₹ 360/-
ISBN: 978-93-89467-17-8

नेपाली

बाबूलाल प्रधान
(नेपाली लेखक पर विनिबंध)
ले. चंद्र कुमार राइ
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-15-1

एम.पी. राइ
(नेपाली लेखक पर विनिबंध)
ले. शीला लामा
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-08-3

पूर्ण राइ
(नेपाली लेखक पर विनिबंध)
ले. राज कुमार छेत्री
पृ.96, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-09-0

पूर्वोत्तर भारत को नेपाली साहित्य को इतिहास (साहित्य का इतिहास)
ले. खेमराज नेपाल
पृ.399, ₹ 500/-
ISBN: 978-93-90866-16-8

राष्ट्रीय भावानाका भारतीय नेपाली कविताहारू (भारतीय देशभक्ति कविताओं का संकलन)
संपादन : सुखराज दियाली
पृ.404, ₹ 370/-
ISBN: 978-93-89778-75-5

स्वातंत्र्योतर भारतीय नेपाली कथाहारू
संपादन : जीवन नामदुंग एवं प्रेम
पृ.351, ₹ 330/-
ISBN: 978-93-89778-75-5

तुलसी बहादुर छेत्री अपतान
(नेपाली लेखक पर विनिबंध)
ले. योगेश खाती
पृ.76, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-10-6

ओड़िआ

अन्ना भाऊ साठे
(मराठी लेखक पर विनिबंध)
ले. बजरंग कोरडे
ओड़िआ अनु. श्वेता मोहांती
पृ.216, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-07-6

भावना (पुरस्कृत संताली कविता-संग्रह)
ले. जदुमणि बेसरा
ओड़िआ अनु. रमेश चंद्र पात्र
पृ.152, ₹ 120/-
ISBN: 978-93-89778-57-1

दिव्य अस्त्र (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *इन्हीं हथियारों से*)
ले. अमरकांत
ओड़िआ अनु. आशीष कुमार राय
पृ.768, ₹ 500/-
ISBN: 978-93-89778-05-2

गणकबि बैशनब पाणी चयनिका
(ओड़िआ भाषा में बैशनब पाणी का चुनिंदा लेखन)
संकलन : बिजयानंद सिंह
पृ.172, ₹ 300/-
ISBN: 978-93-89778-62-5

हुएता एउ दिने
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास, *स्पंदन पिनिकाले नंदी*)
ले. सी. राधाकृष्णन
ओड़िआ अनु. गोपा नायक
पृ.160, ₹ 360/-
ISBN: 978-93-89778-35-9

खानामिहिरंका धीपा
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *खाना मिहिरेर धीपी*)
ले. बानी बासु
ओड़िआ अनु. सूर्यमणि खूंटिया
पृ.220, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-89778-08-3

कुहुदिरे घेरा रंग (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *कोहरे में कैद रंग*)
ले. गोविंद मिश्र
ओड़िआ अनु. सबिता मिश्र
पृ.516, ₹ 210/-
ISBN: 978-93-89778-06-9

पंजाबी

अग्निकुंड विच खिला गुलाब
(पुरस्कृत गुजराती आत्मकथा)
ले. नारायण देसाई
पंजाबी अनु. जसविंदर कौर बिंद्रा
पृ. 1028, ₹ 2,500/-
ISBN: 978-93-90866-17-6

अनुवाद दे सिद्धांत : समस्याएँ ते समाधान (पुरस्कृत तेलुगु समालोचना)
ले. रचमालु रेड्डी
पंजाबी अनु. अंजू बाला
पृ.207, ₹ 230/-
ISBN: 978-93-89778-97-7

गदर लहर दा पंजाबी साहित्य
(संगोष्ठी आलेख)
संपादन : रवि रविंद्र
पृ.192, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90866-18-2

सुखबीर (पंजाबी विनिबंध)
ले. रमिंदर कौर
पृ.84, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-76-0

राजस्थानी

अँधेरे में धुक्ति वर्णमाला
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह, *हनेरे विच सुलगदी वर्णमाला*)
ले. सुरजीत पातर
राजस्थानी अनु. मंगत बादल
पृ.148, ₹ 190/-
ISBN: 978-93-90866-73-1

भाटा फेंक रियो हूँ
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *पत्थर फेंक रहा हूँ*)
ले. चंद्रकांत देवताले
राजस्थानी अनु. कुंजन आचार्य
पृ.160, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-89467-87-1

गमयोदा अर्थ (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास, *गवाचे अर्थ*)
ले. निरंजन सिंह तसनीम
राजस्थानी अनु. नमामि शंकर आचार्य
पृ.171, ₹ 220/-
ISBN: 978-93-90866-72-4

जयआचार्य
(राजस्थानी लेखक पर विनिबंध)
ले. देव कोठारी
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-65-6

कन्हैयालाल सेठिया
(राजस्थानी लेखक पर विनिबंध)
ले. घनश्याम नाथ कच्छावा
पृ.124, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-25-8

निर्वाण
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास, *निर्वाण*)
ले. मनमोहन
राजस्थानी अनु. मंगत बादल
पृ.347, ₹ 430/-
ISBN: 978-93-90866-66-3

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 : नाला सोपारा
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *पोस्ट बॉक्स नंबर 203 : नाला सोपारा*)
ले. चित्रा मुद्गल
राजस्थानी अनु. मंगत बादल
पृ.196, ₹ 210/-
ISBN: 978-93-90310-30-2

संखल
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह, *शृंखल*)
ले. भबेंद्रनाथ शइकीया
राजस्थानी अनु. शिवदान सिंह जोलावास
पृ.168, ₹ 210/-
ISBN: 978-93-90866-71-7

रूसी

आरोग्य निकेतन (पुरस्कृत बांगला उपन्यास, *आरोग्य निकेतन*)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
रूसी अनु. रंजना बनर्जी एवं देबस्मिता मलिक
पृ.518, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-90310-88-3

इल्लु (द हाउस)
(तेलुगु उपन्यास, *इल्लु*)
ले. रचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री
रूसी अनु. अजॅय कुमार कर्नाती
पृ.216, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-79-1

लाँगइंग फ़ॉर सनशाइन
(असमिया उपन्यास, *सूर्य मुखीर स्वप्न*)
ले. सैयद अब्दुल मलिक
रूसी अनु. रंजना सक्सेना
पृ.244, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-80-7

मिस्ट्री ऑफ़ द मिसिंग कैप
(पुरस्कृत कहानी-संग्रह, *मनोज दसंक कथा ओ कहिनी*)
ले. मनोज दास
रूसी अनु. चरणजीत सिंह
पृ.432, ₹ 400/-
ISBN: 978-93-90310-81-4

ऑफ़ मैन एंड मोमेंट्स
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास, *सिला नेरंगालिल सिला मनिदारगळ*)
ले. जयकांतन
रूसी अनु. जननी वैद्यनाथन
पृ.352, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-90310-86-9

ऑर्डेनड बाइ फेट
(पुरस्कृत उर्दू उपन्यास, *एक चादर मैली सी*)
ले. राजिंदर सिंह बेदी
रूसी अनु. कुलदीप ढींगरा
पृ.144, ₹ 175/-
ISBN: 978-93-90310-82-1

पर्व
(आधुनिक कन्नड कालजयी कृति, *दातु*)
ले. एस. एल. भैरप्पा
रूसी अनु. अभय मौर्य एवं सोनू सैनी
पृ.1254, ₹ 950/-
ISBN: 978-93-90310-87-6

द लास्ट एग्जिट
(पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह, *कव्वे और काला पानी*)
ले. निर्मल वर्मा
रूसी अनु. मीनू भटनागर
पृ.208, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-85-2

द लास्ट फ्लिक्कर
(पंजाबी उपन्यास, *मढ़ी दा दीवा*)
ले. गुरदियाल सिंह
रूसी अनु. आर. एन. मेनन एवं हरीश कुमार विजरा
पृ.176, ₹ 200/-
ISBN: 978-93-90310-83-8

द प्रॉमिस्ड हैंड
(गुजराती उपन्यास, *वेविशाल*)
ले. झावेरचंद मेघानी
रूसी अनु. कुलदीप ढींगरा
पृ.312, ₹ 350/-
ISBN: 978-93-90310-84-5

संस्कृत

अमृतफल (ओडिआ गौरवग्रंथ)
ले. मनोज दास
संस्कृत अनु. गोपबंधु मिश्र
पृ.102, ₹ 215/-
ISBN: 978-93-90310-51-7

भगवत प्रसाद त्रिपाठी
(संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. ब्रजकिशोर नायक
पृ.80, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-55-5

क्षमा देवी राव
(संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. राधावल्लभ त्रिपाठी
संस्कृत अनु. प्रभुदयाल मिश्र
पृ.166, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-56-2

संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श
(संगोष्ठी आलेख)
संपादन : राधावल्लभ त्रिपाठी, आनंद प्रकाश त्रिपाठी एवं नौनिहाल गौतम
पृ.256, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-89778-90-8

श्रीधर भास्कर वर्णेकर संचयिका
संपादन : चंद्रगुप्त वर्णेकर
पृ.134, ₹ 115/-
ISBN: 978-93-90310-61-6

व्याकरण पतंजलि
(संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. सुधाकर मिश्र
पृ.88, ₹50/-
ISBN: 978-93-90310-54-8

सिंधी

आज़ादिया खांपोई सिंधी नाटक
ले. प्रेम प्रकाश
पृ.260, ₹ 250/-
ISBN: 978-91-260-5307-0
(पुनर्मुद्रण)

तमिऴ

ए. कर्मेगनारिन थेरनथेदुथा कात्तुराइगळ
(संकलन)
ले. एम.पी. श्रीनिवासन
पृ.256, ₹ 215/-
ISBN: 978-93-90866-26-7

आदल कलाईयुम तामिष़ इसाई माराबुगलम (संकलन)
ले. सिर्पी बालसुब्रमण्यम
पृ.208, ₹ 185/-
ISBN: 978-93-90866-25-0

आरोग्य निकेतनम (बाङ्ला उपन्यास)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
तमिऴ अनु. टी.एन. कुमारस्वामी
पृ.576, ₹ 440/-
ISBN: 978-93-90310-37-1
(पुनर्मुद्रण)

भगवान बुद्धर (जीवनी)
ले. धर्मानंद कोसंबी
तमिऴ अनु. का. श्री श्री
पृ.336, ₹ 270/-
ISBN: 978-93-87567-35-1
(पुनर्मुद्रण)

सी. एन. अन्नादु रयिन थेरंथेदुथा सिरुकाथाइगल (संकलन)
ले. पी. सुभाषचंद्र बोस
पृ.432, ₹ 330/-
ISBN: 978-93-90310-39-5

ग्रामा गीता (संकलन)
ले. संत तुकदोजी महाराज
तमिळ अनु. विजयलक्ष्मी सुंदरराजन
पृ.440, ₹ 335/-
ISBN: 978-93-89778-69-4

कलाई अनुभवम (संकलन)
ले. मैसूर हिरियान्ना
तमिळ अनु. सा. देवदास
पृ.144, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-90310-50-0

कमबन (तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. एस. महाराजन
तमिळ अनु. के. मीनाक्षी सुंदरम
पृ.96, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-636-0
(पुनर्मुद्रण)

कराइक्कळ अम्माइयर
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. गोमति सूर्यमूर्ति
पृ.112, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1645-0
(पुनर्मुद्रण)

मा. रासमणिक्कानर
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. आर. कलाईक्कोवन
पृ.144, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2210-8
(पुनर्मुद्रण)

मुल्लाई मुथैया
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. मुल्लै मु. पलानियप्पन
पृ.112, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-42-5

ना. वनामलै
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. एस. थोथाद्री
पृ.98, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1127-2
(पुनर्मुद्रण)

आर.के. नारायण
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. रंगा राव
तमिळ अनु. एम.एस. प्रभाकरन
पृ.144, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-96-0

सोमाले (तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. निर्मला मोहन
पृ.144, ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1242-0
(पुनर्मुद्रण)

तमिष़ इलाक्कियम सोल्लुम कथाईगळ
(संकलन)
ले. मु. अरुणाचलम
पृ.208, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90310-49-4
(पुनर्मुद्रण)

तमिष़ नॉवेल एज्हुक्थिळ अन्मासईक्काला पोक्कुगळ (संकलन)
ले. एस. कार्लोस (तमिलवन)
पृ.192, ₹ 180/-
ISBN: 978-93-90310-36-4

थानडू (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास, *दातु*)
ले. एस.एल. भैरप्पा
तमिळ अनु. शेषनारायण
पृ.654, ₹ 500/-
ISBN: 978-93-90310-38-8
(पुनर्मुद्रण)

वेदनायज्ञ शास्त्रियर
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. वाई. ज्ञान चंद्र जॉनसन
पृ.128, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-43-2
(पुनर्मुद्रण)

वेदनायज्ञ शास्त्रियर
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. वाई. ज्ञान चंद्र जॉनसन
पृ.128, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-43-2

इलाक्कनाचुदर इरा. थिरुमुगन
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. पुधुवई युगभारथी
पृ.112, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89778-94-6

सुजाता
(तमिऴ लेखक पर विनिबंध)
ले. ईरा. मुरुगन
पृ.128, ₹50/-
ISBN: 978-93-89778-65-6

तेलुगु

कलासिना मानासुलु
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *मिलजुल मन*)
ले. मृदुला गर्ग
तेलुगु अनु. सी. भवानी देवी
पृ.304, ₹ 250/-
ISBN: 978-93-90866-63-2

मधुरनधारा काव्यथिरिमणि मोल्लामाम्बा
(तेलुगु लेखक पर विनिबंध)
ले. एन. निर्मला देवी
पृ.112, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-31-1

नेथ्थुरु नाधी
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास, *कुरुथिप पुनाल*)
ले. इंदिरा पार्थसारथी
तेलुगु अनु. रचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी
पृ.167, ₹ 150/-
ISBN: 978-93-89467-86-4

रायाप्रोलु सुब्बा राव
(तेलुगु लेखक पर विनिबंध)
ले. विहारी
पृ.120, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90310-69-2

उर्दू

जाँ निसार अख़्तर (विनिबंध)
ले. बेग एहसास
पृ.104, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-33-5

केतु विश्वनाथ की कहानियाँ
(पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह)
ले. केतु विश्वनाथ रेड्डी
उर्दू अनु. फाज़िल अहसान हाशमी
पृ.224, ₹ 225/-
ISBN: 978-93-89467-54-3

नाज़िश प्रतापगढ़ी (विनिबंध)
ले. रियाज़ अहमद
पृ.102, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-90866-34-2

काज़ी सलीम (विनिबंध)
ले. गज़नफर इक़बाल
पृ.76, ₹ 50/-
ISBN: 978-93-89467-50-5

साहित्योत्सव 2021

प्रदर्शनी, संवत्सर व्याख्यान तथा अनुवाद पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह

अकादेमी प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार

इस अवसर पर प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रस्तुत संवत्सर व्याख्यान की मुद्रित पुस्तिका का लोकार्पण भी किया गया

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

पुरस्कार अर्पण समारोह की मुख्य अतिथि प्रख्यात हिंदी लेखिका तथा विदुषी श्रीमती चित्रा मुद्गल का स्वागत करते हुए

नव कुमार हंदिकै (असमिया)

तपन बंद्योपाध्याय (बाङ्ला)

रतन लाल बसोत्रा (डोगरी)

सुसैन डैनियल (अंग्रेज़ी)

आलोक गुप्त (हिंदी)

विट्ठलराव टी. गायकवाड़ (कन्नड)

रतन लाल जौहर (कश्मीरी)

जयंती नायक (कोंकणी)

केदार कानन (मैथिली)

सई परांजपे (मराठी)

सचेन राई 'दुमी' (नेपाली)

अजय कुमार पटनायक (ओड़िआ)

देव कोठारी (राजस्थानी)

प्रेमशंकर शर्मा (संस्कृत)

खेरवाल सोरेन (संताली)

ढोलन राही (सिंधी)

के.वी. जयश्री (तमिळ)

पी. सत्यवती (तेलुगु)

असलम मिर्ज़ा (उर्दू)

आभासी मंच कार्यक्रम

3 फ़रवरी 2021 को असमिया महिला रचनाकारों के साथ अस्मिता कार्यक्रम

28 अगस्त 2020 को साहित्य मंच के अंतर्गत दलित चेतना कार्यक्रम

28 जनवरी 2021 को एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य मंच कार्यक्रम (मराठी और ओड़िआ में कविता-पाठ कार्यक्रम)

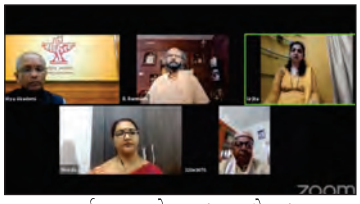

30 मार्च 2021 को एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य मंच कार्यक्रम (कोंकणी और मैथिली में कविता-पाठ कार्यक्रम)

10 अगस्त 2020 को 'कवि अनुवादक' कार्यक्रम में प्रख्यात गुजराती लेखक श्री मणिलाल एच. पटेल ने अपनी कविताओं का पाठ किया तथा प्रतिष्ठित हिंदी लेखक एवं अनुवादक डॉ. आलोक गुप्त ने उनकी कविताओं का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया।

12 नवंबर 2020 को प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. सरजू काटकर के साथ कथासंधि कार्यक्रम

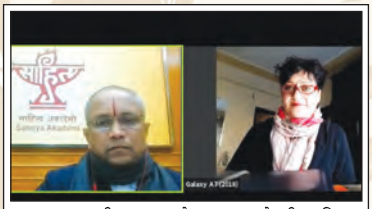

15 जनवरी 2021 को प्रख्यात डोगरी कवि डॉ. विजया ठाकुर के साथ कविसंधि कार्यक्रम

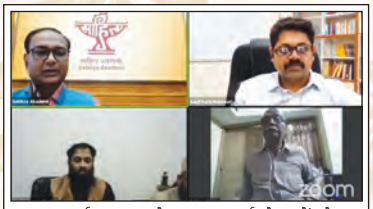

5 मार्च 2021 को प्रख्यात उर्दू लेखकों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम

20 जनवरी 2021 को प्रख्यात बोडो लेखक श्री अरविंदो उजीर के साथ लेखक से भेंट कार्यक्रम

23 फ़रवरी 2021 को युवा मणिपुरी लेखकों के साथ मुलाक़ात कार्यक्रम

11 अगस्त 2020 को बहुभाषाई लेखक सम्मिलन कार्यक्रम

20 जनवरी 2021 को जाने-माने संस्कृत लेखकों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम

आभासी मंच कार्यक्रम

31 दिसंबर को पूर्वोत्तर तथा उत्तर लेखक सम्मिलन

21 जनवरी 2021 को जनजातीय कवि सम्मिलन

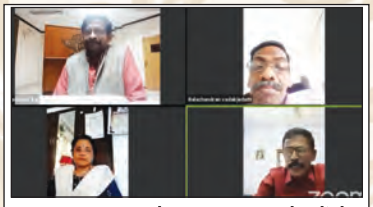

16 अक्तूबर 2020 को प्रख्यात मलयाळम् लेखकों के साथ 'महाकाव्यों और आधुनिक साहित्य' पर पैनल चर्चा

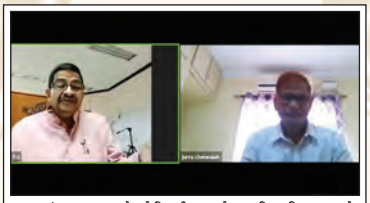

5 नवंबर 2020 को पोट्टि श्रीमालु तेलुगु विश्वविद्यालय के पूर्व जन संपर्क अधिकारी श्री जुर्रु चेन्नैय्या के साथ व्यक्ति और कृति कार्यक्रम

28 अक्तूबर 2020 को प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम

17 दिसंबर 2020 को प्रख्यात सिंधी कवियों के साथ कवि सम्मिलन कार्यक्रम

16 जुलाई 2020 को यू.एस.ए. से प्रख्यात तेलुगु लेखकों के साथ प्रवासी मंच कार्यक्रम

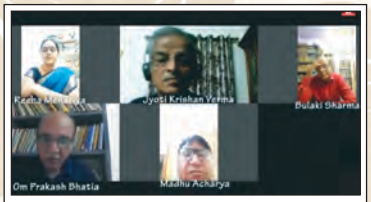

22 मई 2020 को प्रख्यात राजस्थानी लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम

11 सितंबर 2020 को 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात तमिळ लेखक डॉ. वी. आरसु ने प्रख्यात तमिळ लेखक श्री तमिल ओली के जीवन और कृतित्व पर बात की

14 दिसंबर 2020 को युवा नेपाली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

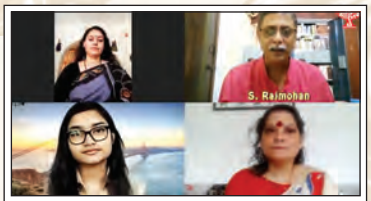

21 जुलाई 2020 को प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखकों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम

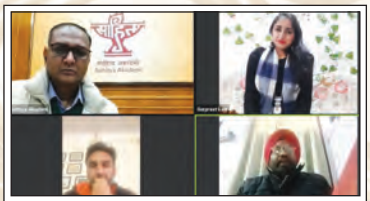

14 जनवरी 2021 को युवा पंजाबी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

17 अगस्त 2020 को प्रख्यात संताली लेखकों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम

8 सितंबर 2020 को प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री संजीब चट्टोपाध्याय के साथ कथासंधि कार्यक्रम

एस.सी.ओ. अनुवाद परियोजना

भारत अनुवादों की भूमि है। सैड़कों भाषाओं के साथ, अनुवाद न केवल देश में एक अपरिहार्य वरन् रोज़मर्रा की गतिविधि है। अनुवाद समुदायों तथा राष्ट्रों को एकजुट करता है तथा सबके ज्ञान में वृद्धि करता है और सुदूर देशों की जानकारी स्वदेश तक लाता है। इसी पृष्ठभूमि में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जून 2019 में बिश्केक में हुए एस.सी.ओ. शिखर सम्मेलन में घोषणा की थी कि भारतीय भाषाओं की 10 महान कृतियों का चीनी तथा रूसी भाषाओं में अनुवाद किया जाएगा। एस.सी.ओ. का उद्देश्य विविध क्षेत्रों के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों को एक साथ लाना है। तदनुसार, साहित्य अकादेमी ने आधुनिक भारतीय साहित्य से 10 भारतीय भाषाओं की कृतियों का चयन किया तथा इनका चीनी तथा रूसी भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित किया। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 10 नवंबर 2020 को एस.सी.ओ. प्रमुखों की आभासी बैठक में इनके अनुवाद पूर्ण किए जाने की घोषणा की थी। शंघाई सहयोग संगठन (एस.सी.ओ.) की आभासी बैठक के दौरान सोमवार, 30 नवंबर 2020 को भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू ने आधुनिक भारतीय साहित्य की 10 कालजयी कृतियों के चीनी तथा रूसी अनुवादों के पूर्ण होने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि भारतीय क्षेत्रीय साहित्य की इन अद्वितीय कृतियों के चीनी तथा रूसी भाषाओं में अनुवाद से भारत की प्राचीन और समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक विरासत में दूसरे देशों के लोगों की व्यापक रुचि उत्पन्न होगी। चीनी तथा रूसी भाषाओं में अनूदित ये भारतीय कृतियाँ हैं—**सूरुजमुखीर स्वप्न** ले. सैयद अब्दुल मलिक (असमिया), **आरोग्य निकेतन** ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), **वेविशाल** ले. झवेरचंद मेघाणी (गुजराती), **कव्वे और काला पानी** ले. निर्मल वर्मा (हिंदी), **पर्व** ले. एस.एल. भैरप्पा (कन्नड), **मनोज दासंक कथा ओ काहीणी** ले. मनोज दास (ओड़िआ), **मढ़ी दा दीवा** ले. गुरदियाल सिंह (पंजाबी), **शिले नेरंगळिल शिल मणितर्कळ** ले. जयकांतन (तमिऴ), **इल्लु** ले. रचकोंडा विश्वनाथ शास्त्री (तेलुगु) और **एक चादर मैली सी** ले. राजिंदर सिंह बेदी (उर्दू)। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी ने उक्त कृतियों के अंग्रेज़ी अनुवादों के पुनर्मुद्रणों का भी विमोचन किया।

एस.सी.ओ. अनुवाद परियोजना

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित आधुनिक भारतीय साहित्य की 10 अद्वितीय कालजयी कृतियों के चीनी अनुवादों का विमोचन एस.सी.ओ. काउंसिल ऑफ़ हेड्स ऑफ़ स्टेट के 20वें शिखर सम्मेलन के दौरान किया गया।

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित आधुनिक भारतीय साहित्य की 10 अद्वितीय कालजयी कृतियों के रूसी अनुवादों का विमोचन एस.सी.ओ. काउंसिल ऑफ़ हेड्स ऑफ़ स्टेट के 20वें शिखर सम्मेलन के दौरान किया गया।

पुस्तक प्रदर्शनियाँ एवं आभासी पुस्तक मेले

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

उप-कार्यालय, चेन्नई में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

14 से 18 अक्तूबर 2020 तक आयोजित फ्रैंकफर्ट डिजिटल पुस्तक मेला 2020 में अकादेमी की सहभागिता

30-31 अक्तूबर 2020 तक आयोजित दिल्ली डिजिटल पुस्तक मेला में अकादेमी की सहभागिता

18 फ़रवरी 2021 को भुवनेश्वर, ओड़िशा में अकादेमी के किताब घर का उद्घाटन करते हुए डॉ. रमाकांत रथ

इस अवसर पर व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

इंस्टीट्यूटो सर्वेंट्स नुएवा दिल्ली, के निदेशक ऑस्कर पुजोल के साथ भारत में स्पेन के दूतावास के मिशन की उप प्रमुख मोंटसेराट मोमैन ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली का 24 नवंबर 2020 को दौरा किया

*साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा प्रख्यात विद्वान प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने 3 मार्च 2021 को रॉयल थाई दूतावास के मंत्री तथा मिशन के उप प्रमुख श्री थिरापथ मोंगकोलनविन को **रामायण इन साउथ ईस्ट एशिया** भेंट की तथा पुस्तक का विमोचन किया*

साहित्य अकादेमी की गृह पत्रिका 'आलोक' का लोकार्पण

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई में राजभाषा सप्ताह का आयोजन

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में आयोजन

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में आयोजन

नियंत्रक - महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. हमने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के 31 मार्च 2021 के संलग्न तुलन-पत्र तथा समाप्ति वर्ष के आय एवं व्यय/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2023-24 तक की अवधि के लिए लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रीय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।
2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकरण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में हैं। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, कानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।
3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यतः भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की गलतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियमों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।
4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :

   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।

   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।

   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।

   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि-

<u>ए. आय और व्यय खाता</u>

<u>ए.1 व्यय - रु.41.08 करोड़</u>

धारा 1.01 जैसा की गत वर्ष की रिपोर्ट में बताया गया था, आवेशित अधिष्ठान तथा पुस्तकालय पुस्तकों पर मूल्यह्रास वर्ष 2019-2020 में आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 32(1) के अंतर्गत निर्धारित 10%तथा 40%के स्थान पर क्रमशः 15% तथा 10% की दर से लिया गया था। वर्ष 2020-21 के दौरान, अकादेमी ने 10% और 40% की दर से मूल्यह्रास लगाया, न की पूर्व अवधि के लिए अचल संपत्ति अनुसूची के अनुसार, मूल्यह्रास के बाद आवेशित स्थापना और पुस्तकालय पुस्तकों को 87.75 लाख शुद्ध ब्लॉक रुपए के रूप में दर्शाया गया है, जबकि लेखापरीक्षा गणना के अनुसार मूल्यह्रास के बाद आवेशित अधिष्ठान और पुस्तकालय पुस्तकों का शुद्ध ब्लॉक मूल्य अनुलग्नक-ए के अनुसार 56.73 लाख रुपए पाया गया है। इसके पणिामस्वरूप व्यय को कम बताया गया तथा अचल संपत्तियों को 31.02 लाख रुपए से अधिक बताया गया है।

बी. सामान्य

बी.1 वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित खाते के सामान्य प्रारूप के अनुसार शुद्ध अधिशेष/घाटे के शेष को संग्रह/पूँजी निधि की अनुसूची I में स्थानांतरित किया जाना चाहिए किंतु अकादेमी ने इसे रक्षित तथा अधिशेष निधि की अनुसूची में स्थानांतरित कर दिया है। इसे सुधारने की आवश्यकता है।

बी.2 1989 से रु.66.66 लाख की राशि विविध देनदारों द्वारा दी जानी बकाया है। इन लंबे समय से लंबित देनदारों की समीक्षा की जानी चाहिए तथा यदि संदिग्ध हो तो आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए।

बी.4 साहित्य अकादेमी के पास 15 बचत बैंक खाते हैं। 15 बचत बैंक खातों में से 2.64 लाख रुपए की राशि वाले 5 बचत बैंक खाते निक्रिय पड़े हैं। ये खाते कब से निक्रिय पड़े हैं, इसका विवरण लेखापरीक्षा को उपलब्ध नहीं कराया गया।

सी. सहायता अनुदान

वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान राशि 35.01 करोड़ रुपए है तथा गत वर्ष की अव्ययित शेष राशि 0.69 करोड़ रुपए है तथा वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ 6.15 करोड़ रुपए है। कुल उपलब्ध निधि 41.85 करोड़ रुपए है तथा अकादेमी ने 38.11 करोड़ राशि का उपयोग किया है तथा उसमें से 3.74 करोड़ रुपए की अव्ययित राशि शेष है।

डी. प्रबंधन पत्र : लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उनके बारे में साहित्य अकादेमी को प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रभावी कार्रवाई के लिए अलग से बताया गया है।

(v) पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में व्यक्त हमारे विचारों के संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि जिस तुलनपत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का उपयोग इस प्रतिवेदन के लिए किया गया है, वे लेखा बहियों के साथ अनुबंधित हैं।

(vi) हमारे विचार और हमारी सर्वोत्तम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और लागू नियमों के अनुरूप है।

(क) यह साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2021 तक के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है; तथा

(ख) उसी तिथि को सामान्य वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

ह./-

(प्रवीर पाण्डेय)

महानिदेशक लेखापरीक्षा

(गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)

स्थान : नई दिल्ली

दिनांक : 28 मार्च 2022

''प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेजी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।''

अनुलग्नक

1. आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी का आंतरिक लेखापरीक्षा चार्टर्ड-अकाउंटेंट फर्म द्वारा मार्च 2021 तक किया गया।

2. आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी की आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था को निम्नलिखित के कारण सुदृढ़ करने की आवश्यकता है -

(i) स्थायी परिसंपत्ति रजिस्टर का रख-रखाव उचित प्रकार से नहीं किया गया है। फर्नीचर एवं स्थावर तथा कम्प्यूटरों का नियमित रूप से प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया जाता है।

(ii) व्यय नियंत्रण पंजिका का रख-रखाव नहीं किया गया है।

(iii) लेखा परीक्षा की आपत्तियों पर प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है क्योंकि 31.03.2020 तक 29 लेखापरीक्षा पैरा अब तक बकाया है।

3. स्थायी परिसंपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

भूमि, भवन तथा वाहन का मार्च 2021 तक तथा पुस्तकालय की पुस्तकों का 2020-21 की अवधि तक प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया। अन्य परिसंपत्तियों जैसे फर्नीचर एवं स्थावर सामग्री तथा कंम्प्यूटर एवं सहायक उपकरणों का प्रत्यक्ष सत्यापन केवल 2013-14 की अवधि तक किया गया है।

4. सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

लेखन-सामग्री तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन केवल 2020-21 तक ही किया गया है।

5. देय राशि के भुगतान में नियमितता

लेखा के अनुसार 31 मार्च 2021 तक छह माह की अवधि से अधिक वाला कोई भुगतान नहीं था।

वार्षिक लेखा
2020-2021

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

तुलनपत्र	161
आय एवं व्यय लेखा	162
वित्तीय विवरण का अनुसूची निर्माण	163-187
प्राप्ति और भुगतान लेखा	188-197
सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र	198
सामान्य भविष्य निधि का आय एवं व्यय लेखा	199
सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा	200
सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची	201
लेखा पर टिप्पणियाँ	203

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	10,000,000	10,000,000
आरक्षित और अधिशेष	2	(94,383,962)	(130,294,907)
नियत/अक्षय निधि	3	454,203,178	435,447,284
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	83,658,494	92,675,542
चालू दायित्व और उपबंध	7	77,449,112	69,116,221
योग		**530,926,822**	**476,944,140**
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	213,553,310	198,154,155
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	98,734,681	98,863,851
नियत	10	-	-
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	218,638,831	179,926,134
विविध व्यय			
(एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)			
योग		**530,926,822**	**476,944,140**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(घनश्याम शर्मा)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 8 जुलाई 2021	*प्रवर लेखपाल*	*उपसचिव*	*उपसचिव*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	1,539,741	524,474
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	294,676,495	332,713,146
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	108,150	207,350
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	57,876,591	27,242,269
प्राप्त आय	17	2,138,497	2,609,938
अन्य आय	18	1,955,003	1,104,230
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	(2,606,377)	19,942,667
योग (ए)		**355,688,099**	**384,344,074**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	189,506,081	195,402,779
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	51,159,689	40,876,740
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	22	79,019,179	173,668,932
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	23	92,205	846,864
वित्तीय प्रभार	24	-	-
योग (बी)		**319,777,154**	**410,795,315**
आय पर व्यय का आधिक्य (ए–बी)		35,910,945	(26,451,241)
पूर्व अवधि मदें	25	-	-
अतिरिक्त साधारण मदें–सेवानिवृत्ति	26	-	-
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) पूँजी निधि में अग्रेनीत		35,910,945	(26,451,241)
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(घनश्याम शर्मा)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 8 जुलाई 2021	*प्रवर लेखपाल*	*उपसचिव*	*उपसचिव*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण, यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–1

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
संग्रह निधि			
	वर्ष के आरंभ में शेष	10,000,000	10,000,000
जमा	संग्रह निधि में योगदान	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित		
	कुल आय/(व्यय) का शेष	-	-
जमा	संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल ब्याज	768,303	775,499
घटा	वर्ष के दौरान योजनागत संग्रह में स्थानांतरित	(768,303)	(775,499)
घटा	सामान्य आरक्षित में स्थानांतरित शेष	-	-
	योग (ए)	**10,000,000**	**10,000,000**
आय और व्यय लेखा			
	वर्ष के आरंभ में शेष	-	-
जमा	उक्त संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित कुल आय/व्यय का शेष		
	आय और व्यय लेखा से	-	-
	एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट		-
	योग (बी)	-	-
	वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)	**10,000,000**	**10,000,000**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–2

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
आरक्षित और अधिशेष		
1. आरक्षित पूँजी		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
2. आरक्षित पुनर्मूल्यांकन		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
योग	-	-
3. विशेष आरक्षित		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित		
आदिशेष	(130,294,907)	(103,843,666)
जमा : वर्ष के दौरान अधिकता / (घाटा)	35,910,945	(26,451,241)
जमा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
जमा : पूर्व अवधि समायोजना	-	-
योग	(94,383,962)	(130,294,907)
योग	**(94,383,962)**	**(130,294,907)**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–3

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
नियत/अक्षय निधियाँ			
(ए) निधियों का आदि शेष		435,447,284	384,175,470
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i दान/अनुदान			
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति		1,830,641	1,333,884
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर		23,099,468	26,884,536
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय		5,339,025	5,422,890
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			
बैंक ब्याज		109,864	130,302
प्रकाशनों/वीडियो फिल्में/कागज़		-	-
पुस्तकालय एवं भेंट की गई पुस्तकें		85,696	138,925
अन्य जमा/समायोजन		834,302	20,119,953
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज		22,355,475	22,843,440
एनपीएस अंशदान		-	-
योग (बी)		**53,654,471**	**76,873,930**
योग (ए+बी)	संतुलन संलग्नक के अनुसार	**489,101,755**	**461,049,400**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i पूँजी व्यय			
स्थायी परिसंपत्ति		-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि		-	
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन		-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास		9,616,650	6,119,218
अन्य		-	-
एनएसडीएल को भुगतान		-	-
अंतिम निकासी		6,050,000	5,844,150
पूर्ण एवं अंतिम सामायोजन		12,176,842	6,583,003
योग		27,843,492	18,546,371
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि		-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण		-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज		7,055,085	7,055,745
अन्य प्रशासनिक व्यय		-	-
योग		7,055,085	7,055,745
योग (सी)		**34,898,577**	**25,602,116**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)		**454,203,178**	**435,447,284**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2020
नियत/अक्षय निधि		**चालू वर्ष**		
(ए) निधियों का आदि शेष	**198,154,155**	**135,164,862**	**102,128,267**	**435,447,284**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i **दान/अनुदान**	-	-	-	-
पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,830,641	-	-	**1,830,641**
पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	23,099,468	-	-	**23,099,468**
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	5,339,025	**5,339,025**
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**				
बैंक ब्याज	-	-	109,864	**109,864**
प्रकाशनों/वीडियो/फिल्में/कागज़	-		-	-
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	85,696	-	-	**85,696**
अन्य जमा/समायोजन	-	(2,606,377)	3,440,679	**834,302**
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज	-	-	22,355,475	**22,355,475**
एनपीएस अंशदान एवं ब्याज	-	-	-	-
योग (बी)	**25,015,805**	**(2,606,377)**	**31,245,043**	**53,654,471**
योग (ए+बी)	**223,169,960**	**132,558,485**	**133,373,310**	**489,101,755**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i **पूंजी व्यय**				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्याह्रास	9,616,650	-	-	**9,616,650**
अन्य				
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	-
अंतिम निकासी	-	-	6,050,000	**6,050,000**
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	12,176,842	**12,176,842**
योग	**9,616,650**	**-**	**18,226,842**	**27,843,492**
ii **राजस्व खर्च**				
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-	-	-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	7,055,085	**7,055,085**
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**7,055,085**	**7,055,085**
योग (सी)	**9,616,650**	**-**	**25,281,927**	**34,898,577**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**213,553,310**	**132,558,485**	**108,091,383**	**454,203,178**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–3

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2020
	गत वर्ष			
(ए) निधियों का आदि शेष	**175,738,742**	**115,222,195**	**93,214,533**	**384,175,470**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i **दान/अनुदान**	-	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,333,884	-	-	**1,333,884**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	26,884,536	-	-	**26,884,536**
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	5,422,890	**5,422,890**
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**				
बैंक ब्याज	-	-	130,302	**130,302**
प्रकाशनों/वीडियो/फिल्में/कागज़	-		-	-
पुस्तकालय में भेंट की गई पुस्तकें	138,925	-	-	**138,925**
अन्य जमा/समायोजन	177,286	19,942,667	-	**20,119,953**
सा.भ.नि. का अंशदान और ब्याज	-	-	22,843,440	**22,843,440**
एनपीएस अंशदान एवं ब्याज	-	-	-	-
योग (बी)	**28,534,631**	**19,942,667**	**28,396,632**	**76,873,930**
योग (ए+बी)	**204,273,373**	**135,164,862**	**121,611,165**	**461,049,400**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i **पूंजी व्यय**				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्याह्रास	6,119,218	-	-	**6,119,218**
अन्य				-
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	-
अंतिम निकासी	-	-	5,844,150	**5,844,150**
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	6,583,003	**6,583,003**
योग	**6,119,218**	**-**	**12,427,153**	**18,546,371**
ii **राजस्व खर्च**				
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानंतरण	-		-	-
सा.भ.नि. के अशंदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	7,055,745	**7,055,745**
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**7,055,745**	**7,055,745**
(सी)	**6,119,218**	**-**	**19,482,898**	**25,602,116**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**198,154,155**	**135,164,862**	**102,128,267**	**435,447,284**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–4

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 **वित्तीय संस्थाएँ**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4 **बैंक**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ग) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
(घ) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–5

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 वित्तीय संस्थाएँ	-	-
4 बैंक :		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 आवधिक जमा	-	-
8 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची–6

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
आस्थगित जमा दायित्व :		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) उपदान के प्रावधान	51,695,790	58,150,981.00
(ग) अवकाश भुनाने के प्रावधान	31,962,704	34,524,561.00
(घ) अन्य	-	-
योग	**83,658,494**	**92,675,542**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची – 7

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
चालू दायित्व और उपबंध		
(ए) चालू दायित्व		
1 स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
पुस्तकालय के सदस्य	11,081,992	10,841,242
अन्य	516,291	486,291
2 विभिन्न लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	-
(ख) अन्य	1,082,773	28,062,181
(ग) गतावधि चेक व्युत्क्रमण	73,010	952,069
3 प्राप्त अग्रिम		
(क) ग्राहकों से अग्रिम	192,545	192,545
4 प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(क) सुरक्षित ऋण/उधार	-	-
(ख) असुरक्षित ऋण/उधार	-	-
5 कानूनी दायित्व :		
(क) अतिशोध्य	-	-
(ख) अन्य	382,915	53,932
6 अन्य चालू दायित्व :		
(क) सा.भ.नि. लेखा	311,088	311,088
(ख) देय पेंशन	90,440	90,440
(ग) देय वेतन	-	-
(घ) अन्य कॉण्ट्रा भुगतान	-	989
7 अव्ययित अनुदान शेष	37,420,319	6,937,923
योग (ए)	**51,151,373**	**47,928,700**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–7

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
चालू दायित्व और उपबंध		
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	6,500,000	1,500,000
3. अधिवर्षिता / पेंशन	2,100,000	2,100,000
4. संचित अवकाश भुनाना	247,695	900,000
5. व्यापार वारंटी / दावे	-	-
6. अन्य देय लेखापरीक्षा शुल्क	263,310	263,870
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	-	150,000
8. उपदान के प्रावदान	11,651,314	10,557,122
9. अवकाश भुनाने के प्रावधान	5,535,420	5,716,529
योग (ए)	**26,297,739**	**21,187,521**
योग (ए+बी)	**77,449,112**	**69,116,221**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–8

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
ए.	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1	भूमि	-	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
2	भवन	10%	46,250,559	-	-	-	46,250,559	29,789,420	1,646,114	-	31,435,534	14,815,025	16,461,139
3	सयंत्र और तंत्र	15%	159,285	-	-	-	159,285	33,421	18,880	-	52,301	106,984	125,864
4	वाहन	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,620,390	118,915	-	1,739,305	673,850	792,765
5	फर्नीचर और जुड़नार	15%	42,622,400	-	59,351	-	42,681,751	31,537,423	1,147,106	-	32,684,529	9,997,222	11,084,977
6	कार्यालय उपकरण	15%	29,931,569	105,829	544,731	-	30,582,129	25,854,306	668,318	-	26,522,624	4,059,505	4,077,263
7	कंप्यूटर / परिधीय	40%	19,911,798	124,576	817,212	-	20,853,586	18,824,217	648,306	-	19,472,523	1,381,063	1,087,581
8	विद्युतीय प्रस्थान	10%	926,558	-	-	-	926,558	711,583	21,498	-	733,081	193,477	214,975
9	पुस्तकालय में पुस्तकें	40%	45,880,581	-	264,638	-	46,145,219	32,216,261	5,347,513	-	37,563,774	8,581,445	13,664,320
	योग		**196,791,789**	**230,405**	**1,685,932**	**-**	**198,708,126**	**140,587,021**	**9,616,650**	**-**	**150,203,671**	**48,504,455**	**56,204,768**
बी.	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर**		141,949,387	23,600,000	-	500,532	165,048,855	-	-	-	-	165,048,855	141,949,387
	कुल योग		**141,949,387**	**23,600,000**	**-**	**500,532**	**165,048,855**	**-**	**-**	**-**	**-**	**165,048,855**	**141,949,387**
	योग (ए+बी)		**338,741,176**	**23,830,405**	**1,685,932**	**500,532**	**363,756,981**	**140,587,021**	**9,616,650**	**-**	**150,203,671**	**213,553,310**	**198,154,155**
	गत वर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		195,141,694	796,424	853,671	-	196,791,789	134,467,803	6,119,218	-	140,587,021	56,204,768	60,673,891
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		115,064,851	-	26,884,536	-	141,949,387	-	-	-	-	141,949,387	115,064,851
	गत वर्ष का कुल योग		**310,206,545**	**796,424**	**27,738,207**	**-**	**338,741,176**	**134,467,803**	**6,119,218**	**-**	**140,587,021**	**198,154,155**	**175,738,742**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

जारी–अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
1	**भूमि**												
	फ्रीहोल्ड	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे पर दिया	0%	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
	कुल योग (1)		**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**8,695,884**
2	**भवन**												
	फ्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे की भूमि पर	10%	10,025,384	-	-	-	10,025,384	4,349,204	567,618	-	4,916,822	5,108,562	5,676,180
	स्वामित्व फ्लैट्स/परिसर	10%	36,225,175	-	-	-	36,225,175	25,440,216	1,078,496	-	26,518,712	9,706,463	10,784,959
	कुल योग (2)		**46,250,559**	**-**	**-**	**-**	**46,250,559**	**29,789,420**	**1,646,114**	**-**	**31,435,534**	**14,815,025**	**16,461,139**
3	**संयंत्र मशीनरी और उपकरण**		-										
	तकनीकी उपकरण	15%	159,285	-	-	-	159,285	33,421	18,880	-	52,301	106,984	125,864
	कुल योग (3)		**159,285**	**-**	**-**	**-**	**159,285**	**33,421**	**18,880**	**-**	**52,301**	**106,984**	**125,864**
4	**वाहन**			-									
	मोटर, कार/स्कूटर	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,620,390	118,915	-	1,739,305	673,850	792,765
	कुल योग (4)		**2,413,155**	**-**	**-**	**-**	**2,413,155**	**1,620,390**	**118,915**	**-**	**1,739,305**	**673,850**	**792,765**
5	**फर्नीचर**						-						
	फर्नीचर	10%	35,413,491	-	10,738	-	35,424,229	25,131,728	1,028,713	-	26,160,441	9,263,788	10,281,763
	स्थायी कैबिनेट्स, अलमारियाँ आदि	10%	119,149	-	14,160	-	133,309	11,515	11,471	-	22,986	110,323	107,634
	वोल्टेज स्टेबलाइजर्स, यूपीएस सिस्टम	15%	57,849	-	-	-	57,849	9,989	7,179	-	17,168	40,681	47,860
	जल वितरक	15%	39,667	-	-	-	39,667	7,715	4,793	-	12,508	27,159	31,952
	जल शोधक	15%	24,298	-	-	-	24,298	3,645	3,098	-	6,743	17,555	20,653
	एयर कूलर	15%	35,872	-	-	-	35,872	5,381	4,574	-	9,955	25,917	30,491
	एयर कंडीशनर	15%	6,932,074	-	34,453	-	6,966,527	6,367,450	87,278	-	6,454,728	511,799	564,624
	कुल योग (5)		**42,622,400**	**-**	**59,351**	**-**	**42,681,751**	**31,537,423**	**1,147,106**	**-**	**32,684,529**	**9,997,222**	**11,084,977**
6	**कार्यालय उपकरण**					-							
	कार्यालय उपकरण	15%	29,527,527	60,281	469,211	-	30,057,019	25,789,952	604,869	-	26,394,821	3,662,198	3,737,575
	फैक्स मशीन, स्कैनर	15%	25,263	-	-	-	25,263	4,677	3,088	-	7,765	17,498	20,586
	उपस्थिति मशीन	15%	73,780	45,548	75,520	-	194,848	20,474	20,492	-	40,966	153,882	53,306
	फोटो कॉपियर	15%	175,000	-	-	-	175,000	13,125	24,281	-	37,406	137,594	161,875
	सीसीटीवी कैमरे	15%	109,999	-	-	-	109,999	22,440	13,134	-	35,574	74,425	87,559
	मोबाइल फोन	15%	20,000	-	-	-	20,000	3,638	2,454	-	6,092	13,908	16,362
	कुल योग (6)		**29,931,569**	**105,829**	**544,731**	**-**	**30,582,129**	**25,854,306**	**668,318**	**-**	**26,522,624**	**4,059,505**	**4,077,263**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–8

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
7	**कंप्यूटर/परिधीय**												
	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर परिधीय	40%	19,407,348	124,576	817,212	-	20,349,136	18,531,636	563,558	-	19,095,194	1,253,942	875,712
	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	40%	504,450	-	-	-	504,450	292,581	84,748	-	377,329	127,121	211,869
	कुल योग (7)		**19,911,798**	**124,576**	**817,212**	**-**	**20,853,586**	**18,824,217**	**648,306**	**-**	**19,472,523**	**1,381,063**	**1,087,581**
8	**विद्युतीय अधिष्ठान**												
	विद्युतीय अधिष्ठान	10%	926,558	-	-	-	926,558	711,583	21,498	-	733,081	193,477	214,975
	कुल योग (8)		**926,558**	**-**	**-**	**-**	**926,558**	**711,583**	**21,498**	**-**	**733,081**	**193,477**	**214,975**
9	**पुस्तकालय पुस्तकें**						-						
	पुस्तकालय पुस्तकें	40%	45,495,572	-	178,942	-	45,674,514	32,216,261	5,347,513	-	37,563,774	8,110,740	13,279,311
	पुस्तकालय पुस्तकें/उपहार	0%	385,009	-	85,696	-	470,705	-	-		-	470,705	385,009
	कुल योग (9)		**45,880,581**	**-**	**264,638**	**-**	**46,145,219**	**32,216,261**	**5,347,513**	**-**	**37,563,774**	**8,581,445**	**13,664,320**
	कुल योग		**196,791,789**	**230,405**	**1,685,932**	**-**	**198,708,126**	**140,587,021**	**9,616,650**	**-**	**150,203,671**	**48,504,455**	**56,204,768**
बी.	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर**		-				-						
	अन्य		3,128,097	-	-	-	3,128,097	-	-	-	-	3,128,097	3,128,097
	शौचालय		1,091,413	-	-	-	1,091,413	-	-	-	-	1,091,413	1,091,413
	मॉडयूलर वर्कस्टेशन		3,975,868	-	-	-	3,975,868	-	-	-	-	3,975,868	3,975,868
	ए.सी. प्लांट पुस्तकालय		5,556,495	-	-	-	5,556,495	-	-	-	-	5,556,495	5,556,495
	प्रोर्टबल शौचालय		207,625	-	-	-	207,625	-	-	-	-	207,625	207,625
	किताब घर एवं चार दीवार निर्माण आदि		3,450,300	-	-	-	3,450,300	-	-	-	-	3,450,300	3,450,300
	सिविल कार्य (कोलकाता)		974,369	-	-	-	974,369	-	-	-	-	974,369	974,369
	डक्टेबल ए.सी.		3,358,570	-	-	-	3,358,570	-	-	-	-	3,358,570	3,358,570
	द्वारका स्थित भवन निर्माण		101,600,000	23,600,000	-	500,532	124,699,468	-	-	-	-	124,699,468	101,600,000
	दिल्ली जल बोर्ड की पानी की लाइन का स्थानांतरण		235,452	-	-	-	235,452	-	-	-	-	235,452	235,452
	दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन का स्थानांतरण		1,649,084	-	-	-	1,649,084	-	-	-	-	1,649,084	1,649,084
	गैस आधारित स्प्रिंकलर सिस्टम		16,722,114	-	-	-	16,722,114	-	-	-	-	16,722,114	16,722,114
	कुल योग		**141,949,387**	**23,600,000**	**-**	**500,532**	**165,048,855**	**-**	**-**	**-**	**-**	**165,048,855**	**141,949,387**
	चालू वर्ष का योग		**338,741,176**	**23,830,405**	**1,685,932**	**500,532**	**363,756,981**	**140,587,021**	**9,616,650**	**-**	**150,203,671**	**213,553,310**	**198,154,155**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–9

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021			31 मार्च 2020		
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से			-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ			-	-	-	-
3 शेयर			-	-	-	-
4 डिबेंचर और बॉण्ड्स			-	-	-	-
5 समानुषंगी और संयुक्त उद्यम			-	-	-	-
6 **अन्य**			-	-	-	-
– आवधिक जमा–संग्रह निधि/सा.भ.नि.	10,000,000	88,574,518	98,574,518	10,000,000	88,703,688	98,703,688
– आई.डी.बी.आई. फ्लैक्सी बॉण्ड	-	-	-	-	-	-
– आवधिक जमा–नई पेंशन योजना	-	160,163	160,163	-	160,163	160,163
				-		
योग	**10,000,000.00**	**88,734,681**	**98,734,681**	**10,000,000**	**88,863,851**	**98,863,851**

अनुसूची–10

विवरण	31 मार्च 2021			31 मार्च 2020		
निवेश–अन्य	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-	-	-
3 शेयर	-	-	-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स	-	-	-	-	-	-
5 समानुषंगी तथा संयुक्त उद्यम	-	-	-	-	-	-
6 अन्य (उल्लेख करें)	-	-	-	-	-	-
योग	-	-	-	-	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–11ए

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021			31 मार्च 2020		
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ						
1 **वस्तुसूची**						
(क) स्टोर एंड स्पेयर्स	-	-	-	-	-	-
(ख) लूज टूल्स	-	-	-	-	-	-
(ग) प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक	-					
तैयार माल	-	-	-	-	-	-
अकादेमी प्रकाशन	121,781,830	-	121,781,830	122,263,051	-	122,263,051
अपरोक्ष प्रकाशन	119,630	-	119,630	120,290	-	120,290
वीडियो फिल्में एवं सी.डी.	724,400	-	724,400	726,450	-	726,450
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-	-	-
कागज : अपने पास	5,832,945	-	5,832,945	6,713,849	-	6,713,849
मुद्रणलयों में	4,099,680	-	4,099,680	5,341,222	-	5,341,222
2 **विविध लेनदार**						
(क) छः माल की अवधि से अधिक बकाया ऋण	6,666,013	-	6,666,013	7,253,773	-	7,253,773
(ख) अन्य	7,802,681	-	7,802,681	2,350,157	-	2,350,157
3 **हाथ में शेष धन या बकाया राशि**						
(जिसमें चेक/ड्राफ्ट रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल है)	580,660	-	580,660	693,909	-	693,909
4 **बैंक में शेष धन**						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	36,839,659	8,249,491	45,089,150	6,244,013	4,817,527	11,061,540
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	-	-	-	-	-	-
5 **डाकघर बकाया राशि**	-	-	-	-	-	-
बचत खातों में						
योग (ए)	**184,447,498**	**8,249,491**	**192,696,989**	**151,706,714**	**4,817,527**	**156,524,241**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2021

अनुसूची–11बी

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021			31 मार्च 2020		
ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ आदि (जारी)	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ						
1 **ऋण**						
(क) स्टॉफ	1,253,985	-	1,253,985	1,584,495	-	1,584,495
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो सामान गतिविधियों कार्यों में संलग्न है	-	-	-	-	-	-
(ग) **अन्य**–सा.भ.नि. अग्रिम	-	5,254,807	5,254,807	-	5,751,342	5,751,342
2 **अग्रिम और अन्य राशियों जिन्हें नकदी अथवा सदृश अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है**						
(क) पूंजी खातों पर	-	-	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-	-	-
(ग) **अन्य**						
स्रोतों से कर कटौती	359,794	811,220	1,171,014	341,529	806,571	1,148,100
प्रतिभूति जमा	4,687,643	-	4,687,643	4,687,643	-	4,687,643
पूर्व भुगतान खर्चे	567,371	-	567,371	161,518	-	161,518
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	-	-	-	1,318,122	-	1,318,122
अन्य वसूली योग्य	-	-	-		-	-
–कर्मचारियों को अग्रिम	42,555	-	42,555	3,019,983	-	3,019,983
–बाहरी पार्टी को अग्रिम	4,838,500	-	4,838,500	1,525,233	-	1,525,233
–पूंजीगत अग्रिम	-	-	-	-	-	-
3 **प्रोदभूत आय**						
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	3,084,783	5,041,184	8,125,967	2,316,480	1,888,976	4,205,456
(ख) निवेशों पर–अन्य	-	-	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-	-	-
4 **प्राप्त करने योग्य दावे**						
(क) वसूली योग्य–सा.भ.नि.	-	-	-	-	-	-
योग (बी)	**14,834,631**	**11,107,211**	**25,941,842**	**14,955,003**	**8,446,889**	**23,401,892**
(योग) (ए+बी)	**199,282,129**	**19,356,702**	**218,638,831**	**166,661,717**	**13,264,416**	**179,926,134**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–12

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
बिक्री / सेवाओं से प्राप्त आय		
1. **बिक्री से प्राप्त आय**		
(क) सभागार रखरखाव प्राप्ति	5,000	492,000
(ख) फोटोकॉपी शुल्क	5,626	32,474
(ग) भारतीय साहित्य पर ऑनलाइन सामग्री की बिक्री	1,529,115	-
योग	**1,539,741**	**524,474**

अनुसूची–13

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
अनुदान / इमदाद (अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
1. भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा	178,008,000	167,932,000
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	133,840,000	126,999,000
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	-	25,600,000
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	23,016,000	28,050,000
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	-	7,500,000
–अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	1,125,000	1,075,000
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	13,115,000	-
–विशेष सेल–शंघाई कॉरपोरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एस.सी.ओ.)	985,000	-
–विशेष सेल–सुभाषचन्द्र बोस	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल	-	-
–विशेष सेल–रामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	-	-
2 राज्य सरकार	-	-
3 सरकारी अभिकरण	-	-
4 संस्थाएँ / कल्याणकारी निकाय	-	-
5 अंतरराष्ट्रीय संगठन -	-	
6 अन्य		
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	6,937,923	10,713,489
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(37,420,319)	(6,937,923)
घटा : वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर खर्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(1,830,641)	(1,333,884)
घटा : वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य की प्रगति / अग्रिम में खर्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(23,099,468)	(26,884,536)
घटा : संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**294,676,495**	**332,713,146**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–14

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
शुल्क / अंशदान		
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. वार्षिक शुल्क / अंशदान	-	-
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	-
4. परामर्श शुल्क	-	-
5. **अन्य**		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	1,08,150	2,07,350
बुक क्लब सदस्यता शुल्क	-	-
योग	**1,08,150**	**2,07,350**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–15

(राशि रुपये में)

विवरण	**अक्षय निधि से निवेश**	
	31 मार्च 2021	**31 मार्च 2020**
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
बैंक की एफ.डी. निवेश से प्राप्त ब्याज राशियाँ	54,48,889	57,16,381
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित	(54,48,889)	(57,16,381)
योग	-	-

विवरण	**अन्य निवेश**	
	31 मार्च 2021	**31 मार्च 2020**
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
निवेश से प्राप्त ब्याज		
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित		
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित		
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–16

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
रॉयल्टी, प्रकाशनों इत्यादि से प्राप्त आय		
1 रॉयल्टी से प्राप्त आय	19,983	91,510
2 अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	57,856,608	27,150,759
योग	**57,876,591**	**27,242,269**

अनुसूची–17

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
प्राप्त ब्याज		
1 **सशर्त जमा**		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	393,398	554,898
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	0	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	768,303	775,499
2 **बचत ख़ातों पर**		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	421,527	728,231
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत खाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3 **ऋणों पर**		
(क) कर्मचारी/स्टॉफ़	555,269	551,310
(ख) अन्य	-	-
4 **ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ**		
(क) सा.भ.नि./सी.पी.एफ. पर ब्याज	-	-
(ख) आयकर रिफंड पर ब्याज	-	-
योग	**2,138,497**	**2,609,938**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–18

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
अन्य आय		
1 **परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय**		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ		-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) गैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	43,526	5,983
2 निर्यात को प्रोत्साहन	-	-
3 विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4 **विविध आय**		
(क) अन्य विधि प्राप्तियाँ	884,074	485,976
(ख) कर्मचारियों का सीजीएचएस अंशदान	398,950	428,164
(ग) कर्मचारियों का एनपीएस गैर वापसी योग्य अंशदान	-	-
(घ) सरदार पटेल अनुवाद प्राप्ति	-	-
(ङ) अतिरिक्त प्रावधान लिखित वापस	628,453	167,691
(च) नेपाल में भारत उत्सव	-	16,416
योग	**1,955,003**	**1,104,230**

अनुसूची–19

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार/चढ़ाव)		
(ए) अंत शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	122,625,860	123,109,791
–कच्चा माल (काग़ज़)	9,932,625	12,055,071
(बी) आदि शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	123,109,791	109,377,250
–कच्चा माल (काग़ज़)	12,055,071	5,844,945
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए–बी)	**(2,606,377)**	**19,942,667**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–20

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
स्थापना व्यय		
(क) वेतन, मज़दूरी और भत्ते	160,119,181	162,282,378
(ख) नई पेंशन योजना हेतु योगदान	3,138,453	3,080,385
(ग) कर्मचारियों की सेवा–निवृत्ति पर हुए ख़र्च तथा आवाधिक लाभ	22,936,999	24,948,106
(घ) **अन्य**		
–चिकित्सा सुविधाएँ	2,613,707	4,474,203
–अवकाश यात्राा सुविधा	697,741	617,707
योग	**189,506,081**	**195,402,779**

अनुसूची– 21

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	150,000	223,160
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	834,129	990,407
(ग) दूरभाष एवं डाक–व्यय	2,256,703	3,542,602
(घ) अन्य आकस्मिक व्यय	820,667	724,150
(ङ) वाहन अनुरक्षण	130,509	172,060
(च) किराया, परिकर एवं कर	29,318,509	27,057,168
(छ) अन्य संयुक्त सेवाएँ	12,608,217	6,373,156
(ज) कानूनी शुल्क	1,004,951	996,859
(झ) यात्रा ख़र्च	329,553	635,958
(ञ) व्यवसायिक शुल्क	274,092	161,220
सा.भ.नि. ब्याज प्राप्ति में कमी	3,432,359	-
योग	**51,159,689**	**40,876,740**

अनुसूची–20 एवं 21, अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वेतन, मजदूरी और भत्ते		
(क) मूल वेतन	76,598,674	78,750,834
(ख) ग्रेड पे	-	86,400
(ग) महँगाई भत्ता	11,879,141	8,221,955
(घ) मकान किराया	18,336,769	19,343,453
(ङ) यात्रा भत्ता	7,408,110	7,487,263
(च) बच्चों का शिक्षा भत्ता	1,348,689	1,299,100
(छ) व्यक्तिगत वेतन	14,800	76,000
(ज) वर्दी भत्ता	205,000	200,000
(झ) नकद भत्ता	12,600	14,000
(प) स्टाफ वेतन एवं भत्ते–कार्यालय का सुधार	1,973,575	60,487
(फ) वेतन बकाया	34,044	
कुल योग	**117,811,402**	**115,539,492**
पेंशन		
(भ) पेंशन	32,554,162	22,993,653
(म) पेंशनभोगियों को महंगाई भत्ता	7,926,057	10,496,360
(य) पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता	872,082	372,800
(र) अतिरिक्त पेंशन	955,478	546,972
कुल योग	**42,307,779**	**34,409,785**
कर्मचारी की सेवानिवृत्ति लाभ पर व्यय		
(क) उपदान	7,783,298	13,773,710
(ख) पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन	11,962,408	25,495,842
(ग) अवकाश नकदीकरण	3,191,293	7,625,213
कुल योग	**22,936,999**	**46,894,765**
किराया, परिकर एवं कर		
(क) वार्षिक रखरखाव अनुबंध	959,741	1,699,786
(ख) बिजली / पानी शुल्क	2,289,055	4,552,871
(ग) किराया	26,069,713	22,196,713
कुल योग	**29,318,509**	**28,449,370**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–22

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष (2020–2021)				गत वर्ष (2019–2020)			
	गतिविधियों का संवर्द्धन एवं प्रसार	सामान्य	एनई	टीएसपी	योग	सामान्य	एनई	टीएसपी	योग
ए	**अकादेमी सेल**								
01	बाल साहित्य पुरस्कार	1,180,350	113,424	35,780	**1,329,554**	3,989,174	740,529	137,709	**4,867,412**
02	बनारस स्कूल परियोजना	-	-	-	-	-	-	-	-
03	राजभाषा कार्यक्रम	227,161	-	-	**227,161**	332,471	-	-	**332,471**
04	भाषाओं का विकास	-	-	926,769	**926,769**	-	-	4,058,149	**4,058,149**
05	फैलोशिप	113,210	-	-	**113,210**	477,914	60,126	-	**538,040**
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	1,591,671	1,664,052	400,649	**3,656,372**	21,437,523	10,645,640	2,663,822	**34,746,985**
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार	10,686,959	19,000	-	**10,705,959**	13,669,880	46,020	-	**13,715,900**
08	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	5,442,918	113,147	-	**5,556,065**	8,873,718	319,797	-	**9,193,515**
09	प्रकाशन योजनाएँ	29,874,672	522,542	106,932	**30,504,146**	55,814,315	5,888,733	380,140	**62,083,188**
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	101,823	-	-	**101,823**	463,880	271,297	-	**735,177**
11	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	4,241,231	260,601	213,647	**4,715,479**	18,941,148	2,375,975	298,199	**21,615,322**
12	अनुवाद योजनाएँ	7,460,928	364,436	139,417	**7,964,781**	5,285,367	5,032,807	122,225	**10,440,399**
13	पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	713,600	-	-	**713,600**	1,187,024	-	-	**1,187,024**
14	युवा पुरस्कार	2,036,308	75,442	52,669	**2,164,419**	3,588,093	2,052,237	108,890	**5,749,220**
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन पोएटिक	-	-	-	-	-	-	-	-
16	भारतीय अनुवाद	-	-	-	-	1,021,265	-	-	**1,021,265**
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप	-	-	-	-	11,000	-	-	**11,000**
18	योग	2,288	-	-	**2,288**	24,926	-	-	**24,926**
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	114,390	-	-	**114,390**	1,802,767	177,174	-	**1,979,941**
20	शंधाई कॉरपोरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एस.ओ.एस.)	8,686,634	-	-	**8,686,634**	-	-	-	-
21	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल योग	**72,474,143**	**3,132,644**	**1,875,863**	**77,482,650**	**136,920,465**	**27,610,335**	**7,769,134**	**172,299,934**
01	एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना	785,449	-	-	**785,449**	1,236,870	-	-	**1,236,870**
बी	**विशेष सेल**		-	-	-				
01	भारत महोत्सव–इज़राइल	-	-	-	-	-	-	-	-
02	भारत महोत्सव–स्पेन	-	-	-	-	-	-	-	-
03	भारत महोत्सव–थाइलैण्ड	-	-	-	-	-	-	-	-
04	भारत महोत्सव–नेपाल	-	-	-	-	123,503	-	-	**123,503**
05	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	751,080			**751,080**				
01	श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी	-			-	8,625			**8,625**
	कुल योग	**74,010,672**	**3,132,644**	**1,875,863**	**79,019,179**	**138,289,463**	**27,610,335**	**7,769,134**	**173,668,932**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–23

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
अनुदान, इमदाद आदि पर ब्याज		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान		
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद		
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	92,205	6,85,817
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता के लिए एन.ई.	-	1,61,047
(ग) विभिन्न परियोजनाओं/योजनाओं के अंतर्गत भुगतान	-	-
योग	**92,205**	**846,864**

अनुसूची–24

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
वित्त शुल्क		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–25

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
पूर्व अवधि मदें		
पूर्व अवधि आय	-	-
घटा :		
पूर्व अवधि व्यय	-	-
योग	-	-

अनुसूची–26

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2021	31 मार्च 2020
असाधारण मदें		
(कृपया अनुसूची 27 के नोट 10 तथा अनुसूची 28 के नोट 6 का भी संदर्भ लें)		
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (गैर–वित्त पोषित)		
(क) सेवानिवृत्ति उपदान वाई.टी.डी. मार्च–2019 के लिए प्रावधान	-	-
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण वाई.टी.डी. मार्च–2019 के लिए प्रावधान	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2020–21	गत वर्ष 2019–20	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2020–21	गत वर्ष 2019–20
1. आदि शेष				**1. व्यय**			
(क) हाथ रोकड़		693,910	702,339	(क) स्थापना व्यय	**10**	198,405,381	186,363,922
(चैक/ड्राफ्ट और टिकट सहित)				(ख) प्रशासनिक व्यय	**11**	51,693,272	38,205,938
(ख) बैंक में जमा							
चालू खातों में		-	-	**2. विभिन्न योजनाओं/परियोजनाओं के अंतर्गत भुगतान**			
जमा खातों में		-	-	(क) परियोजनाएँ/योजनाएँ			
बचत खातों में		6,244,013	10,011,150	–अकादेमी राजस्व	**12**	83,158,828	104,507,309
				–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	**12**	92,205	968,058
2. प्राप्त अनुदान				–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	**12**	3,146,398	27,596,949
(क) भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा				–अकादेमी सेल–टीएसपी. राजस्व सामान्य	**12**	1,886,989	7,941,924
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		178,008,000	167,932,000	–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	**12**	877,095	1,223,578
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		133,840,000	126,999,000	–अकादेमी सेल–शंघाई कॉरपोरेशन ऑरगनाइज़ेशन (एस.सी.ओ.)	**12**	8,686,634	-
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.		-	25,600,000	–विशेष सेल–भारत महोत्सव	**12**	-	123,503
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		23,016,000	28,050,000	–विशेष सेल–संत श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	**12**	-	8,625
–अकादेमी सेल–टी.एस.पी. राजस्व सामान्य		-	7,500,000	–विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस	**12**	751,080	-
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना		1,125,000	1,075,000				
–अकादेमी सेल–शंघाई कॉरपोरेशन ऑरगनाइजेशन (एस.सी.ओ.)		13,115,000	-	**3. निवेश और जमा की गई राशियाँ**			
–विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस		985,000	-	(क) नियत/अक्षय निधियों से		-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन		-	-	(ख) स्वपूंजियों से (निवेश–अन्य)		108,638,000	148,295,582
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल		-	-				
–विशेष सेल–संत श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी		-	-				
(ख) संस्कृति मंत्राालय से अतिरिक्त पूंजी प्राप्त		-	-	**4. स्थायी परिसंपत्तियों पर व्यय तथा पूंजी पर आधारित कार्य प्रगति पर**			
(ग) राज्य सरकार द्वारा		-	-	(क) स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	**13**	1,830,641.00	1,373,379
(घ) अन्य स्रोतों द्वारा		-	-	(ख) कार्य प्रगति पर व्यय की गई पूंजी	**13**	23,600,000	26,884,536
3. निवेशों से आय							
(क) नियत/अक्षय निधियों		-	-	**5. कार्य प्रगति पर धन/ऋणों की वापसी**			
(ख) स्वपूंजी (अन्य निवेश)	**1**	-	775,499	(क) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को		-	-
				(ख) राज्य सरकार को		-	-
4. प्राप्त ब्याज				(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध कराने वालों को		-	-
(क) बैंकों में जमा राशि पर ब्याज	**1**	814,925	1,283,129				
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	**1**	555,269	551,310				
5. अन्य आय				**6. वित्त शुल्क (ब्याज)**			
(क) माल/सेवाओं की बिक्री से आय	**2**	1,539,741	524,474	**7. अन्य भुगतान**			
(ख) फीस एवं अंशदान से आय	**3**	108,150	207,350	(क) स्टाफ को अग्रिम राशि	**14**	-	-
(ग) रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	**4**	52,958,627	27,242,269	(ख) प्रतिभूति जमा राशि दी	**15**	-	189,701
(घ) विविध आय/प्राप्तियाँ	**5**	1,072,131	936,539	(ग) अन्य (वसूली योग्य)	**16**	6,939,881	1,609,927
6. उधार ली गई राशि							
				8. अंत शेष			
7. कोई अन्य प्राप्तियाँ				(क) हाथ में रोकड़		580,660	693,910
(क) स्टॉफ द्वारा चुकाए गए ऋण	**6**	442,510	421,820	(चैक/ड्राफ्ट और टिकटों सहित)			
(ख) लौटाने योग्य जमा राशि	**7**	270,750	690,400	(ख) बैंक में शेष			
(ग) कोट्रा प्राप्तियाँ और भुगतान	**8**	312,694	9,092	1. चालू खातों में			-
(घ) अन्य भुगतान योग्य	**9**	2,886,472	3,423,900	2. जमा खातों में			-
(ङ) अन्य लघु अवधि जमा परिपक्व		108,638,000	148,295,583	3. बचत खातों में		36,839,659	6,244,013
(च) दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन की शिपिंटग		5,00,532					
योग		**527,126,723**	**552,230,854**	**योग**		**527,126,723**	**552,230,854**

ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
(घनश्याम शर्मा)	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लेखपाल	*उपसचिव*	*उपसचिव*	*सचिव*

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 8 जुलाई 2021

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज प्राप्त	1		
संग्रह निधि पर ब्याज		-	713,876
कुल योग		-	**713,876**
सावधि जमा पर ब्याज		393,398	818,749
बैंक बचत खाते पर ब्याज		421,527	1,209,027
कुल योग		**814,925**	**2,027,776**
अग्रिम पर ब्याज		555,269	655,456
आयकर वापसी पर ब्याज		-	56,650
कुल योग		**555,269**	**712,106**
योग		**1,370,194**	**2,739,882**
माल और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त व्यय	2		
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आयय			
सभागार रखरखाव प्राप्ति		5,000	492,000
फोटो कॉपी शुल्क		5,626	32,474
इंडियन लिटरेचर (जेएसटीओआर)		1,529,115	-
ऑनलाइन साहित्य सामग्री की बिक्री से प्राप्ति		-	320,006
योग		**1,539,741**	**844,480**
शुल्क और सदस्यता से प्राप्त आय	3		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क व्यय		108,150	207,350
बुक कल्ब सदस्यता		-	-
योग		**108,150**	**207,350**
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त व्यय	4		
रॉयल्टी से प्राप्त व्यय		**19,983**	91,510
अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय		**52,938,644**	37,840,020
योग		**52,958,627**	**37,931,530**
विविध प्राप्तियाँ	5		
खोई पुस्तक पर पुस्तकालय द्वारा वसूली		43,526	1,957
विविध प्राप्तियाँ		629,655	359,889
पूर्व अवधि प्राप्तियाँ		-	-
सीजीएचएस में कर्मचारी योगदान की वसूली		398,950	410,250
एनपीएस खाते में गैर प्रतिदेय राशि का नियोक्ता द्वारा दिया गया योगदान		-	-
नेपाल में भारत उत्सव (प्राप्तियाँ)		-	-
योग		**1,072,131**	**772,096**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6		
स्टाफ कंप्यूटर अग्रिम		6,000	8,500
स्टाफ वाहन अग्रिम		4,800	24,300
त्यौहार अग्रिम		-	37,800
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		431,710	192,725
योग्य		**442,510**	**263,325**
प्रतिदेय जमा राशियाँ	7		
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता से प्राप्त		291,000	680,405
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता को प्रतिदेय		(50,250)	
वर्ष के दौरान प्राप्त बयान राशि		30,000	50,000
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		-	
योग		**270,750**	**730,405**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान टीडीएस/आयकर	8		
प्राप्ति		15,710,959	10,651,802
भुगतान		(15,710,959)	(10,651,802)
कुल योग		-	-
जीएसटी			
प्राप्ति		280,136	119,050
भुगतान		(112,568)	(90,522)
कुल योग		**167,568**	**28,528**
जीएसटी (टीडीएस)			
प्राप्ति		542,788	233,295
भुगतान		(398,889)	(187,115)
कुल योग		**143,899**	**46,180**
एन.पी.एस.			
प्राप्ति		6,276,906	10,651,802
भुगतान		(6,276,906)	(10,651,802)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि.			
प्राप्ति		-	119,050
भुगतान		-	(90,522)
कुल योग		-	**28,528**
जी.एस.एल.आई.सी.			
प्राप्ति		1,248,948	1,206,787
भुगतान		(1,247,721)	(1,207,138)
कुल योग		**1,227**	**(351)**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
एल.आई.सी.			
प्राप्ति		369,069	312,419
भुगतान		(369,069)	(312,419)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि. ऋण की वसूली			
प्राप्ति		3,599,145	2,949,360
भुगतान		(3,599,145)	(2,949,360)
कुल योग		-	-
योग		**312,694**	**74,357**
अन्य देय			
देनदारों से प्राप्त अग्रिम	9		
वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
कुल योग		-	-
वर्ष के दौरान देनदारों से वसूली			
वर्ष के दौरान देय		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	-
बाहरी पार्टियों से प्राप्त अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		-	31,163,366
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(30,797,895)
कुल योग		-	**365,471**
अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		4,929,686	-
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(2,069,642)	-
कुल योग		**2,860,044**	-
वसूली योग्य कर			
वसूली योग्य आयकर		-	566,510
वर्ष के दौरान आयकर की वापसी		-	(86,876)
कुल योग		-	**479,634**
विविध लेनदार			
वर्ष के दौरान देय		2,452,893	5,093,561
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(2,426,465)	(4,020,654)
कुल योग		**26,428**	**1,072,907**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
वर्ष के दौरान अन्य चालू दायित्व			
वर्ष के दौरान देय		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	-
योग		**2,886,472**	**1,918,012**
स्थापना व्यय	10		
स्टाफ वेतन और भत्ते		-	
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
मूल वेतन		76,346,588	78,544,460
ग्रेड पे		-	86,400
महँगाई भत्ता		11,879,141	8,221,955
मकान किराया भत्ता		18,336,769	19,474,178
यात्रा भत्ता		7,408,110	7,735,753
बच्चों का शिक्षा भत्ता		1,348,689	1,436,966
व्यक्तिगत वेतन		14,800	6,800
वर्दी भत्ता		205,000	215,000
नकद भत्ता		12,600	14,000
स्टाफ वेतन और भत्ते–कार्यालय का सुधार		1,973,575	1,843,306
वेतन बकाया		34,044	59,078
पेंशन			
पेंशन		32,554,162	31,195,512
पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ता		7,926,057	6,172,367
पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता		872,082	564,000
अतिरिक्त पेंशन		955,478	971,583
एनपीएस को अंशदान		3,138,453	3,080,385
कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवांत हितलाभ पर व्यय			
उपदान		13,144,297	6,781,496
पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन		11,120,952	8,739,129
अवकाश नकदीकरण		5,934,259	169,358
अवकाश चिकित्सा सुविधाएँ		4,502,584	4,693,469
अवकाश यात्रा रियायत		697,741	617,707
योग		**198,405,381**	**180,622,902**
प्रशासनिक व्यय	11		
लेखा परीक्षा तथा लेखा शुल्क		357,060	189,290
प्रकाशन एवं लेखन सामग्री		834,129	990,407

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
टेलीफोन तथा डाक शुल्क		2,256,703	3,553,635
अनय आकस्मिक व्यय		818,334	724,150
वाहनों का रखरखाव		129,401	172,060
किराया, दरें और कर			
वार्षिक रखरखाव अनुबंध		1,823,733	1,509,313
बिजली/पानी का शुल्क		2,289,055	4,112,848
किराया		26,538,450	21,197,458
अन्य संयुक्त सेवाएँ		14,934,311	4,047,062
कानूनी शुल्क		1,164,951	836,859
यात्रा खर्चे		329,553	649,836
व्यावसायिक शुल्क		217,592	223,020
पूर्व आवधिक व्यय		-	-
योग		**51,693,272**	**38,205,938**
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	12		
सामान्य			
01 बाल साहित्य पुरस्कार		1,283,376	3,946,894
02 बनारस स्कूल परियोजना		-	-
03 राजभाषा कार्यक्रम		255,266	352,866
04 भाषाओं का विकास		-	-
05 फेलोशिप		113,210	488,268
06 साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		2,159,671	21,124,447
07 आधुनिकीकरण एवं सुधार		12,165,162	12,272,968
08 बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि		5,728,843	8,806,367
09 प्रकाशन योजनाएँ		38,772,964	31,439,746
10 क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना		147,020	463,880
11 लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ		11,120,031	12,932,407
12 अनुवाद योजनाएँ		8,248,494	5,288,663
13 पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं में सुधार		890,892	1,031,348
14 युवा पुरस्कार		2,147,308	3,477,093
15 इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16 भारतीय अनुवाद		-	1,021,265
17 टैगोर राष्ट्रीय फैलोशिप		-	11,000
18 योग		2,288	24,926
19 महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		124,303	1,825,171
कुल योग		**83,158,828**	**104,507,309**
राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता			
राज्य अकादेमियों को सहायता		92,205	807,011
राज्य अकादेमियों को सहायता तथा अन्य संस्थानों के लिए एन.ई.		-	161,047
कुल योग		**92,205**	**968,058**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	एनई			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		113,424	740,529
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		-	-
05	फैलोशिप		-	60,126
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		1,677,806	10,632,254
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		19,000	46,020
08	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		113,147	319,797
09	प्रकाश योजनाएँ		522,542	5,888,733
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजनाएँ		-	271,297
11	लेखकों को सेवाएँ		260,601	2,375,975
12	अनुवाद योजनाएँ		364,436	5,032,807
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		75,442	2,052,237
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	177,174
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदान पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**3,146,398**	**27,596,949**
	टीएसपी			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		35,780	137,709
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		926,769	4,143,595
05	फैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		411,775	2,671,198
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	-
08	बिक्री (विज्ञान) इत्यादि का संवर्द्धन		-	-
09	प्रकाशन योजनाएँ		106,932	460,108
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन परियोजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		213,647	298,199
12	अनुवाद योजनाएँ		139,417	122,225
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		52,669	108,890

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**1,886,989**	**7,941,924**
	एस.ए.पी.			
	स्वच्छता कार्य योजना		877,095	1,223,578
	कुल योग		**877,095**	**1,223,578**
	अकादेमी शंघाई कॉरपोरेशन ऑरग्नाइज़ेशन (एस.सी.ओ.)			
	शंघाई कॉरपोरेशन ऑरग्नाइज़ेशन (एस.सी.ओ.)		8,686,634	-
	कुल योग		**8,686,634**	**-**
	विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस			
	नेताजी सुभाषचंद्र बोस		751,080	-
	कुल योग		**751,080**	**-**
	विशेष सेल–भारत महोत्सव			
	भारत महोत्सव–इज़राइल		-	-
	भारत महोत्सव–स्पेन		-	-
	भारत महोत्सव–थाईलैंड		-	-
	भारत महोत्सव–नेपाल		-	123,503
	कुल योग		**-**	**123,503**
	विशेष सेल–श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी			
	श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी		-	8,625
	कुल योग		-	8,625
	योग		**98,599,229**	**142,369,946**
	स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13		
	भूमि		-	-
	भवन		-	-
	सयंत्र और तंत्र		1,651,699	92,935
	वाहन		-	-
	फर्नीचर और जुड़नार		-	551,286
	कार्यालय उपकरण		-	142,132
	कंप्यूटर/परिधीय		-	273,656

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	विद्युतीय संस्थापन	-	-	
	पुस्तकालय की पुस्तकें		178,942	313,370
	योग		**1,830,641**	**1,373,379**
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय			
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		23,600,000	26,884,536
	कुल योग		**23,600,000**	**26,884,536**
	योग		**25,430,641**	**28,257,915**
	स्टॉफ (परिसंपत्तियों) को प्रदत्त ऋण	14		
	स्टॉफ कंप्यूटर अग्रिम		-	-
	स्टॉफ वाहन अग्रिम		-	-
	स्टॉफ भवन निर्माण अग्रिम		-	-
	योग		-	-
	वसूली योग्य प्रतिभूति जमा	15		
	प्राप्ति योग्य प्रतिभूति जमा		-	627,701
	वर्ष के दौरान जमा राशि		-	438,000
	वर्ष के दौरान जमा राशि प्रतिदाय		-	-
	योग		-	**189,701**
	अन्य प्राप्ति योग्य	16		
	देनदारों द्वारा दिए गए अग्रिम			
	वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	181,964
	वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	(172,545)
	योग		-	**9,419**
	बाहरी पार्टी को दिया गया अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		6,030,178	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(4,034,682)	-
	योग		**1,995,496**	-
	अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
	योग		-	-
	अस्थायी स्थानांतरण			
	भुगतान		76,282,898	64,877,851
	प्राप्ति		(76,282,898)	(64,877,851)
	योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	ब्याज प्रोद्भूत			
	वर्ष के दौरान देय		-	775,499
	वर्ष के दौरान दिए गए		-	-
	योग		-	**775,499**
	वसूली योग्य कर			
	वसूली योग्य आयकर		18,265	55,073
	वर्ष के दौरान प्रतिदाय आयकर		-	-
	योग		**18,265**	**55,073**
	विविध लेनदार			
	वर्ष के दौरान देय		-	913,960
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	(793,122)
	योग		-	**120,838**
	अन्य चालू दायित्व			
	वर्ष के दौरान देय		124,808,644	128,255,273
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(123,314,883)	(127,705,967)
	योग		**1,493,761**	**549,306**
	जी.एस.टी.			
	प्राप्ति		-	381,316
	भुगतान		-	(352,788)
	योग		-	**28,528**
	सा.भ.नि			
	प्राप्ति		(14,767,000)	-
	भुगतान		18,199,359	-
	योग		**3,432,359**	-
	प्राप्ति		6,276,906	6,237,868
	भुगतान		(6,276,906)	(6,195,358)
	योग		-	**42,510**
	पूर्वप्रदत्त व्यय			
	वर्ष के दौरान जारी		-	161,518
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	(132,764)
	कुल योग		-	**28,754**
	योग		**6,939,881**	**1,609,927**

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र : यथातिथि 31–03–2021

2019–2020	दायित्व	2020–2021		2019–2020	परिसम्पत्तियाँ	2020–2021	
	सा. भ. नि. खाता				**निवेश (लागत पर)**		
94,991,955	01–04–2020 को शेष	**105,408,242**			आवधिक जमा एवं बॉण्ड (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			160,163	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	160,163	
15,772,700	कर्मचारियों का सा.भ.नि. में अंशदान	14,780,775		41,525,290	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	36,807,347	
14,995	अन्य परिवर्धन	519,615		47,178,398	यूको बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	51,767,171	
7,055,745	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	7,055,085		**88,863,851**			**88,734,681**
22,843,440		**22,355,475**					
	वर्ष के दौरान कटौती :				**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.**		
5,712,000	अंतिम निकासी	6,050,000		2,667,679	01–04–2020 को शेष	1,887,665	
132,150	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-		1,887,665	जमा : वर्ष के दौरान प्रोदभूत ब्याज	5,030,397	
6,583,003	पूर्ण और अंतिम भुगतान	12,176,842		2,667,679	घटा : परिपक्वता पर प्राप्त ब्याज	1,887,665	
12,427,153		18,226,842		**1,887,665**			**5,030,397**
105,408,242			**109,536,875**		**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस**		
				1,369	01–04–2020 को शेष	1,311	
	नई पेंशन योजना			1,311	जमा : 2020–21 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	10,787	
142,749	01–04–2020 को शेष	**152,384**		1,369	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	1,311	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			**1,311**			**10,787**
201,043	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	-					
201,043	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
9,635	एन.पी.एस. आवधिक पर अर्जित / प्राप्त ब्याज	-		6,686,992	01–04–2020 को शेष	5,751,792	
411,721		-		2,740,000	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	3,094,160	
	वर्ष के दौरान कटौती :			132,150	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
-	01–04–2020 को पी.एफ.आर.डी.ए. में शेष	-		3,543,500	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	3,591,145	
402,086	घटा : राशि पी.एफ.आर.डी.ए. में स्थानांतरित	-		**5,751,342**			**5,254,807**
402,086		-					
	परिवर्धन			549,262	**अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.**		
-	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-		257,309	01–04–2020 को शेष	806,571	
-	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	-		**806,571**	जमा : वर्ष के दौरान स्रोत पर टैक्स कटौती	4,649	
-		-					**811,220**
152,384		-	**152,384**	4,713,964	**बैंक शेष**		
				103,563	एस.बी. खाता सं. 01100 / 401527 एसबीआई, नई दिल्ली	8,144,836	
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा			**4,817,527**	एस.बी. खाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	104,654.69	
(1,929,806)	01–04–2020 का शेष	(3,432,359)					**8,249,491**
-	जमा : अंशदान में अधिशेष स्थानांतरण	3,440,679					
1,502,553	घटा : आय पर व्यय का आधिक्य	1,606,196	**(1,597,876)**				
(3,432,359)							
102,128,267	**योग**		**108,091,383**	**102,128,267**	**योग**		**108,091,383**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(घनश्याम शर्मा)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 8 जुलाई 2021	*प्रवर लेखपाल*	*उपसचिव*	*उपसचिव*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का आय और व्यय लेखा : यथातिथि 31–03–2021

2019–2020	व्यय	2020–2021		2019–2020	आय	2020–2021	
					निवेश पर ब्याज		
7,055,745	सा.भ.नि. के ग्राहकों को ब्याज दिया गया	7,055,085		5,078,307	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	5,339,025	
-	बैंक शुल्क	-		130,302	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	109,864	
-	अन्य कटौतियाँ	-		344,583	अन्य अधिशेष	-	
7,055,745			**7,055,085**	**5,553,192**			**5,448,889**
					आय पर व्यय का आधिक्य		
				1,502,553	घाटे को स्थानांतरित किया	1,606,196	
							1,606,196
7,055,745	**योग**		**7,055,085**	**7,055,745**	**योग**		**7,055,085**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(घनश्याम शर्मा)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 8 जुलाई 2021	*प्रवर लेखपाल*	*उपसचिव*	*उपसचिव*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2020 से 31–03–2021

2019–2020	प्राप्तियाँ	2020–2021		2019–2020	भुगतान	2020–2021	
	आदि बैंक शेष				**सा.भ.नि. खाता**		
5,514,043	केनरा बैंक	4,713,964		5,712,000	अंतिम निकासी	6,050,000	
100,121	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	103,563	**4,817,527**	-	अग्रिम का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
5,614,164				6,583,003	पूर्ण एवं अंतिम निबटान	12,176,842	**18,226,842**
				12,295,003			
	सा.भ.नि. लेखा						
15,772,700	कर्मचारियों का अंशदान	14,780,775			**राष्ट्रीय पेंशन योजना**		
3,543,500	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	3,591,145		-	एन.पी.एस. में निवेश	-	
7,055,745	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	7,055,085	**25,427,005**	-	कर्मचारी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
26,371,945				-	अकादेमी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
	नई पेंशन योजना						
-	अकादेमी का योगदान	-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	कर्मचारियों का योगदान	-		2,740,000	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	2,560,000	
-	आवधिक जमा पर ब्याज	-		-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	**2,560,000**
-			-	**2,740,000**			
	प्राप्त ब्याज				**निवेश**		
2,054,214	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–केनरा बैंक	2,310,971		8,000,000	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	3,000,000	
3,024,093	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–यूको बैंक	3,028,054		4,820,998	सा.भ.नि. निवेश पर प्राप्त ब्याज	5,030,397	
130,302	बैंक बचत खातों पर ब्याज	109,864		-	वर्ष के दौरान एन.पी.एस. में निवेश	-	**8,030,397**
-	आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**5,448,889**	**12,820,998**			
5,208,609					**साहित्य अकादेमी से वसूली योग राशि**		
	निवेश			257,309	स्रोत पर काटा गया कर	4,649	**4,649**
2,791,865	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	5,000,000		**257,309**			
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-					
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–आई.डी.बी.आई.	-					
-	फलैक्सी बॉण्ड	-	**5,000,000**		**अन्य व्यय**		
2,791,865				7,055,745	सा.भ.नि. ग्राहक को दिया गया आकलित ब्याज	7,055,085	
				-	बैंक शुल्क	-	**7,055,085**
	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित			**7,055,745**			
-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	3,433,043	**3,433,043**				
-					**बैंक अंत शेष**		
				4,713,964	केनरा बैंक	8,144,836	
				103,563	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	104,655	**8,249,491**
				4,817,527			
39,986,583	**योग**		**44,126,464**	**39,986,582**	**योग**		**44,126,464**

ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
(घनश्याम शर्मा)	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लेखपाल	*उपसचिव*	*उपसचिव*	*सचिव*

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 8 जुलाई 2021

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची : यथातिथि 01–04–2020 से 31 मार्च 2021

निवेश									ब्याज		
क्र. सं.	एफ़.डी.संख्या	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	ब्याज दर%	31-03-2021 को ब्याज का अंकित मूल्य	परिपक्वता मूल्य	प्राप्ति योग्य सकल ब्याज	31-03-2020 तक प्रोद्भूत	2020-2021 के दौरान प्रोद्भूत	प्रोद्भूत ब्याज पर टी.डी. एस. कटौती	31-03-2021 को कुल प्रोद्भूत ब्याज
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
3	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/51	2/9/2017	2/9/2022	5.2%	160163.00	170950.00	10787.00	-	9,476	-	9,476
	योग 1				**160,163**	**170,950**	**10,787**	-	**9,476**	-	**9,476**
	सा.भ.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 18250310055601	10/12/2014	03/04/2022	5.00%	14,045,551	15,410,828	1365277.00	-	904,737	-	904,737
3	एफ.डी.आर. सं. 18250310055618	10/12/2014	03/04/2022	5.00%	1,685,641	1,849,491	163850.00	-	108,579	-	108,579
5	एफ.डी.आर. सं. 18250310055625	10/14/2014	3/28/2022	5.00%	14,036,423	15,401,860	1365437.00	-	897,813	-	897,813
2	एफ.डी.आर. सं. 18250310055632	10/14/2014	3/28/2022	5.00%	1,684,617	1,848,480	163863.00	-	107,740	-	107,740
4	एफ.डी.आर. सं. 18250310055649	10/13/2014	3/31/2022	5.00%	14,041,037	15,407,401	1366364.00	-	901,048	-	901,048
6	एफ.डी.आर. सं. 18250310055656	10/13/2014	3/31/2022	5.00%	1,685,129	1,849,111	163982.00	-	108,137	-	108,137
	योग 2			**0**	**47,178,398**	**51,767,171**	**4,588,773**	-	**3,028,054**	-	**3,028,054**
	सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/61	2/2/2018	2/2/2022	5.25%	10,155,938	10,850,854	694916.00	-	600,547	-	600,547
2	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/62	2/2/2018	2/2/2022	5.25%	10,155,438	10,850,854	695416.00	-	601,047	-	601,047
3	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/63	2/2/2018	2/2/2022	5.25%	10,155,438	10,850,854	695416.00	-	601,047	-	601,047
4	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/75	12/19/2019	9/30/2021	4.50%	2,907,120	3,101,146	194026.27	-	154,230	3,931	150,299
5	एफ.डी.आर. सं. 2417303000243/8	9/2/2020	10/28/2021	4.50%	3,000,000	3,072,397	72397.00	-	72,397	-	72,397
6	एफ.डी.आर. सं. 24173030000097/148	12/31/2019	6/11/2021	4.50%	3,039,781	3,313,505	273724.00	-	272,227	-	272,227
7	एफ.डी.आर. सं. 24173010000097/146	8/16/2019	12/11/2021	4.00%	-	-	0.00	-	189,858	-	
	योग 3			-	**39,413,715**	**42,039,610**	**2,625,895**	-	**2,301,495**	**3,931**	**2,297,564**
	कुल योग (1+2+3)			-	**86,752,276**	**93,977,731**	**7,225,455**	-	**5,339,025**	**3,931**	**5,335,094**

31-03-2021 को समाप्त वर्ष के लिए वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

31-03-2021 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भूमिका

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करनेवाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके मध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का 1955-56 का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1956 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळुरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नई में एक उप-कार्यालय है।

अनुसूची-27—महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) ग़ैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूँजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यह्रास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचार गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय गत 5 वर्षों के प्रारम्भ से नहीं लिखा गया।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधर पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्र ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधर पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु/सेवा-निवृत्ति पर देय उपदान के प्रति देयता प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर प्रदान की जाती है।

(10.2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर कर्मचारियों को संचित अवकाशों के लाभों को भुनाने का भी प्रावधान है।

अनुसूची-28–प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद मांगे :
आयकर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
जी.एस.टी.–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो (कुल अग्रिम) रु. 1831.71 लाख (गत वर्ष 2008.49 लाख) है को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2021 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूंजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशि	निधियों का नाम	अनुसूची	राशि
संग्रह निधि	1	₹ 1,00,00,000	तदनुरूप निवेश	11ए	₹ 1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	₹ 21,35,53,310	स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	₹ 21,35,53,310
प्रकाशन निधि	3	₹ 13,25,58,485	स्टॉफ प्रकाशन	11ए	₹ 13,25,58,485
सा.भ.नि./एन.पी.एस.	3	₹ 10,80,91,383	आवधिक जमा	9	₹ 8,87,34,681
			बैंक शेष	11ए	₹ 82,49,491
			निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11बी	₹ 50,41,184
			सा.भा.नि. अग्रिम	11बी	₹ 52,54,807
			अन्य अग्रिम	11बी	₹ 8,11,220
कुल योग		**46,42,03,178**	**कुल योग**		**46,42,03,178**

5. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण और अग्रिम

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. सेवानिवृत्ति लाभ

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंड संस्थान द्वारा जारी 'कर्मचारी लाभ' पर लेखा मानक-15 का अनुपालन न करने के संबंध में सीएजी लेखा परीक्षा अवलोकन का अनुपालन करने के संबंध में, अकादेमी ने वित्त वर्ष 2018-19 से उक्त लेखा मानकों के अनुरूप सेवानिवृत्ति लाभों अर्थात् ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण पर अपनी देयता की मान्यता की दिशा में अपनी नीति में परिवर्तन किया है।

तदनुसार, उसने इसके अंतर्गत दिए गए विवरणों के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण के प्रति अपनी सेवानिवृत्ति लाभ देयता को मान्यता दी है। 17.9 वर्षों की पिछले वर्ष की सेवा को ध्यान में रखते हुए, 31 मार्च 2020 तक वित्तीय वर्ष से संबंधित व्यय की चालू वर्ष से संबंधित खर्चों के वास्तविक और निष्पक्ष दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करने के लिए गैर-पुनरावर्ती मदों के रूप में दिखाया गया है। 31 मार्च 2021 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए बीमांकक मूल्यांकन के प्रासंगिक सार को पुनः प्रस्तुत किया गया है।

ग्रेच्युटी प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2020 से 31-03-2021 तक	01-4-2019 से 31-03-2020 तक
ब्याज लागत	₹ 48,09,567	₹44,85,564
वर्तमान सेवा लागत	₹ 28,49,358	₹ 31,06,422
पिछली सेवा लागत	0	0
योजना परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	(0)	(0)
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त बीमांकिक लाभ/हानि	(₹ 1,30,19,924)	₹ 18,73,754
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	(₹ 53,60,999)	₹ 94,65,740

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2020 से 31-04-2021 तक	01-04-2019 से 31-03-2020 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	₹ 1,16,51,314	₹ 87,90,633
गैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	₹ 5,16,95,790	₹ 5,52,88,858
कुल देयता	₹ 6,33,47,104	₹ 6,40,79,491

3.7 : तुलन पत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2020 से 31-03-2021 तक	01-4-2019 से 31-03-2020 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	₹ 6,87,08,103	₹ 6,40,79,491
लाभ और हानि में पहचाने जानेवाले व्यय	₹ 53,60,999	₹ 94,65,740
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	₹ (0)	(₹ 48,37,128)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	₹ 6,33,47,104	₹ 6,87,08,103

अवकाश नकदीकरण प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2020 से 31-03-2021 तक	01-4-2019 से 31-03-2020 तक
ब्याज लागत	₹ 28,16,876	₹ 24,92,811
वर्तमान सेवा लागत	₹ 21,06,148	₹ 22,90,370
योजना परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	(0)	(0)
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त बीमांकिक लाभ/हानि	(₹ 76,65,990)	₹ 12,61,477
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	(₹ 27,42,966)	₹ 60,44,658

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित):

अवधि	01-04-2020 से 31-03-2021 तक	01-04-2019 से 31-03-2020 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	₹ 55,35,420	₹ 57,16,529
गैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	₹ 3,19,62,704	₹ 3,45,24,561
कुल देयता	₹ 3,74,98,124	₹ 4,02,41,090

3.6 : तुलन पत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2020 से 31-03-2021 तक	01-4-2019 से 31-03-2020 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति परिभाषित)	₹ 4,02,41,090	₹ 3,56,11,579
लाभ और हानि पहचाने जानवाले व्यय	(₹ 27,42,966)	₹ 60,44,658
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(0)	(₹ 14,15,147)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	₹ 3,74,98,124	₹ 4,02,41,090

7. कराधान

अकादेमी को अपने कार्यक्रम और गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित्त-पोषित किया जाता है। तदनुसार, अकादेमी की आय को कर से छूट दी गई है। आयकर अधिनियम 1961 के अंतर्गत कर योग्य आय न होने को ध्यान में रखते हुए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(8.1)	आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधर पर गणना :	शून्य
	तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (परागमन सहित)	
	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(8.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन—	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	शून्य
(ख)	वित्तीय संस्थाओ/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	एस.सी.ओ.	₹ 14,03,034/-
(घ)	अन्य व्यय :	
	कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
	विविध व्यय	शून्य
	माल भाड़ा	शून्य
	यात्रा व्यय	शून्य
(8.3)	अर्जन :	
	एफ.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य	शून्य
(8.4)	लेखापरीक्षकों को पारिश्रमिक (सीएजी)	₹ 1,50,000/-

9. अनुदान उपयोग

अकादेमी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित है। इसके अतिरिक्त, यह अपने प्रकाशन और बैंक ब्याज आदि की बिक्री के माध्यम से कुछ राजस्व भी उत्पन्न करती है। 31 मार्च 2021 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदानों/वित्तीय सहायता की संक्षिप्त स्थिति इस प्रकार है :

विवरण	राजस्व वेतन (₹)	राजस्व सामान्य (₹)	राजस्व सी.सी.ए.(₹)	राजस्व एन.ई.(₹)	टी.एस.पी. (₹)	एस.सी.ओ. (₹)	एस.ए.पी. (₹) (₹)	विशेष सेल संत रामानुजाचार्य की जन्म शताब्दी	योग (₹)
01/04/2020 को अव्ययित आदिशेष	–	59,53,852	9,84,071	–	–	–	–	–	69,37,923
संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	17,80,08,000	13,38,40,000	2,30,16,000	–	–	1,31,15,000	11,25,000	9,85,000	35,00,89,000
अन्य प्राप्तियाँ	2,03,97,381	3,45,08,257	14,30,570	31,46,398	18,86,989	–	–	–	6,14,61,800
योग ए	**19,84,05,381**	**17,43,02,109**	**2,54,30,641**	**31,46,398**	**18,86,989**	**1,31,15,000**	**11,25,000**	**9,85,000**	**41,84,88,723**
व्यय	19,84,05,381	13,49,44,305	2,54,30,641	31,46,398	18,86,989	86,86,634	8,77,095	7,51,080	37,41,28,523
अन्य भुगतान	–	68,47,676	–	–	–	–	–	–	69,39,881
योग बी	**19,84,05,381**	**14,18,84,186**	**2,54,30,641**	**31,46,398**	**18,86,989**	**86,86,634**	**8,77,095**	**7,51,080**	**38,10,68,404**
31/03/2021 को अव्ययित अंत शेष	–	3,25,10,128	–	–	–	44,28,366	2,47,905	2,33,920	3,74,20,319

10. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, जिससे उन्हें चालू वर्ष के आँकड़ों के साथ तुलनीय बनाया जा सके।

11. अनुसूची 1 से 26 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलन पत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2021 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

12. सीएजी के वित्त वर्ष 2019-20 के एसएआर के सुझाव के अनुसार, विद्युत स्थापना और पुस्तकालय की पुस्तकों पर चालू वर्ष के साथ-साथ आगामी वर्षों के दौरान मूल्यह्रास @ 10 प्रतिशत तथा 40 प्रतिशत है।

13. ₹ 1,49,34,311/- की राशि ललित कला अकादेमी तथा संगीत नाटक अकादेमी को संयुक्त सेवा भुगतान के 1/3 शेयर के व्यय से संबंधित है। उपरोक्त संयुक्त सेवा भुगतान में से ₹ 1,17,48,773/- की राशि विगत वर्षों से संबंधित है। विगत वर्षों में इस प्रकार के खर्चों के प्रावधानों के लिए ललित कला अकादेमी तथा संगीत नाटक अकादेमी की ओर से कोई सूचना नहीं थी, इसलिए इसके लिए गत वर्ष में कोई प्रावधान नहीं बनाया गया।

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**कृष्णा किंबहुने**	**के.एस. राव**
दिनांक : 8 जुलाई 2021	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)